अल्पना एडवरटाईजिंग एजेंसी
1/44 व्यास कालोनी नागौर
सभी समाचार पत्रों के विज्ञापन बुक किए जाते है।
मो: 8233244421, 9414244421

सांध्य ज्योति दर्पण

www.dainiksandhyajyotidarpan.com

वर्ष 36 | अंक-1 | नागौर, बुधवार 2 अक्टूबर 2024 | जयपुर, अलवर, नागौर व भरतपुर से एक साथ प्रकाशित | पृष्ठ : 8 मूल्य : एक रु.

प्रातःकालीन संस्करण

पुष्कर, अजमेर, नोखा, बीकानेर, बावड़ी, जोधपुर, मकराना, परबतसर, नावां, कुचामन, लाडनूं, डेगाना, मेड़तासिटी, कुचेरा, मूंडवा, डीडवाना, जायल, खींवसर में प्रसारित।

उदयपुर में आदमखोर लेपर्ड को गोली मारने... पेज 8

जज के घर आया 4 फीट लंबा कोबरा.. पेज 6

अल्पना एडवरटाईजिंग एजेंसी
1/44 व्यास कालोनी नागौर
सभी समाचार पत्रों के विज्ञापन बुक किए जाते है।
मो: 8233244421, 9414244421

नए जिले फिलहाल यथावत, तहसील व उपखण्ड में बदलाव की छुट

जयपुर, 2 अक्टूबर। गहलोत सरकार में बने नए जिलों को फिलहाल खत्म नहीं किया जाएगा। अभी जिलों की सीमाएं फ्रीज ही रहेंगी। जनगणना रजिस्ट्रार जनरल ने नए तहसील-उपखंडों को छूट दी, जिलों को लेकर मंजूरी नहीं दी। जनगणना रजिस्ट्रार जनरल ने जुलाई में पेश बजट और एप्रोप्रिएशन बिल के दौरान घोषित नए उपखंड, तहसील, उप-तहसील और नए राजस्व गांवों को नोटिफाई करने की मंजूरी दे दी है। बजट में घोषित इन प्रशासनिक यूनिटों के गठन पर जनगणना की रोक नहीं रहेगी। राजस्व विभाग ने जनगणना रजिस्ट्रार जनरल को अगस्त में चिट्ठी लिखकर नए जिले, उपखंड, तहसील और राजस्व गांव बनाने और उनकी बाउंड्री बदलने पर लगी रोक से छूट देने की मांग की थी। इसके लिए 20 अगस्त को ही चिट्ठी लिखी थी। राजस्थान सरकार की इस चिट्ठी पर जनगणना रजिस्ट्रार जनरल की तरफ से जवाब आ गया है। जनगणना रजिस्ट्रार जनरल के ऑफिस ने राजस्थान सरकार को जिलों पर मांगी गई छूट पर कोई राहत नहीं दी है। जिलों का जिक्र तक नहीं किया है। जनगणना रजिस्ट्रार जनरल के दफ्तर ने लिखा- राज्य में जिन राजस्व गांवों को घोषित करने की मंजूरी राजस्व मंत्री से मिली है और 2024-25 के बजट के दौरान दौरान जिन नए उपखण्ड, तहसील और उप-तहसील बनाने की घोषणा की जा चुकी है। उनकी अधिसूचनाएं जारी की जा सकती है। जनगणना रजिस्ट्रार जनरल ने 1 जुलाई से सभी प्रशासनिक सीमाओं को फ्रीज कर दिया था।

1 जुलाई के बाद किसी तरह के नए जिले, उपखंड, तहसील और गांव बनाने और उनकी बाउंड्री में बदलाव पर रोक लगाई हुई है। बिना जनगणना रजिस्ट्रार जनरल की मंजूरी के वार्ड की सीमा में भी बदलाव नहीं हो सकता। सीएम भजनलाल शर्मा ने भी केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह को लेटर भेजकर नए जिलों के गठन और उनकी बाउंड्री में बदलाव करने पर लगी रोक हटाने की मांग की थी। इस लेटर पर अभी जवाब आना बाकी है। फिलहाल सरकार को जिलों की बाउंड्री में बदलाव करने, नए जिले बनाने अथवा जिले रद्द करने की जनगणना रजिस्ट्रार जनरल से कोई मंजूरी नहीं मिली है।

ऐसे हालात में अब जिलों के रिव्यू को धरातल पर तब तक नहीं उतारा जा सकेगा जब तक जनगणना की रोक नहीं हटती है।

अगर जनगणना की घोषणा हो जाती है तो अगले दो साल तक जिलों में बदलाव नहीं हो सकेगा। सरकार ने मंत्रियों की कमेटी को गहलोत राज के जिलों के रिव्यू का जिम्मा दे रखा है। सरकार अपने स्तर पर तो गहलोत राज के जिलों पर फैसला कर सकती है, लेकिन उनकी बाउंड्री में बदलाव नहीं कर सकती। जनगणना की रोक से जुड़े सवाल पर कानून मंत्री जोगाराम पटेल ने कहा- यह एक कानूनी प्रश्न है, अभी हमारा मुद्दा जिले बनाना या घटाना विषय नहीं है। अभी तो जो जिले बने हैं, उनकी समीक्षा कर रहे हैं। अगर हमको लगेगा यह जिला कम करना है या बनाना है या एडिशनल अल्टरेशन करना है। केंद्र सरकार से विचार करेंगे, जनगणना की परमिशन लेंगे। परमिशन के बाद विधिवत जो निर्णय होगा वह किया जाएगा। गहलोत सरकार के समय बने 17 नए जिलों को लेकर भजनलाल सरकार जल्द फैसला लेना चाहती है।

प्रस्तावित जनगणना के चलते राज्य की प्रशासनिक सीमाएं सील हैं। ऐसे में सरकार चाहकर भी जिलों के क्षेत्राधिकार में परिवर्तन नहीं कर सकती है। इसे लेकर अब सीएम भजनलाल शर्मा ने केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह को पत्र लिखा है।

ट्रक व ट्रोले की टक्कर में दो जने गंभीर घायल

(नगर संवाददाता)

नागौर, 2 अक्टूबर। खींवसर के पास नेशनल हाइवे 62 पर जोरावरपुरा गांव के पास एक ट्रक और ट्रोले के बीच में टक्कर में हो गई। हादसे की सूचना मिलने पर 108 एम्बुलेंस मौके पर पहुंची और घायल ट्रोला चालक को बाहर निकाला। उसे खींवसर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र ले जाया गया।

जहाँ पर डॉक्टरों ने प्राथमिक उपचार के बाद चालक की स्थिति गंभीर होने पर उसे जोधपुर रेफर कर दिया।

108 एम्बुलेंस के ईएमटी बालाराम गालवा ने बताया की हादसे की सूचना मिलने पर पायलट नरेश के घटना स्थल पर पहुंचे। जहां हादसे में ट्रोला चालक लालसिंह हादसे के बाद केबिन में फंस गया था। जिसे आस-पास के होटल संचालको की मदद से केबिन से बाहर निकाला और खींवसर सीएचसी लेकर पहुंचे। घायल के दोनों पैर बुरी तरह से हादसे के बाद केबिन में फंस गए थे। घायल की स्थिति गंभीर होने से उसे प्राथमिक उपचार के बाद जोधपुर रेफर कर दिया।

कांग्रेस ने प्रदेश में सत्तारूढ़ सरकार के खिलाफ प्रदर्शन कर राष्ट्रपति के नाम सौंपा ज्ञापन

(नगर संवाददाता)

नागौर, 2 अक्टूबर। जिला कांग्रेस कमेटी ने प्रदेश सरकार के खिलाफ विरोध प्रदर्शन किया। कांग्रेसियों ने जिला कार्यालय से कलेक्ट्रेट तक नारेबाजी कर रैली निकाली और एडीएम को राष्ट्रपति के नाम ज्ञापन दिया।

कांग्रेस ने 10 सूत्री ज्ञापन देकर प्रदेश सरकार के संचालन में राष्ट्रपति के हस्तक्षेप की मांग की है। इससे पहले जिला कांग्रेस कार्यालय में प्रदेशाध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा का जन्मदिन मनाकर शुभकामनाएं दी गई। सुजानगढ़ विधायक मनोज मेघवाल ने कहा कि प्रदेश सरकार पिछले 10 माह के कार्यकाल में विफल साबित हुई है। पूरे प्रदेश में सरकार नाम की कोई चीज नहीं दिख रही है। मकराना विधायक कांग्रेस जिलाध्यक्ष जाकिर हुसैन गेसावत ने कहा कि कानून व्यवस्था बदहाल हो चुकी है। महिला अत्याचार बढते जा रहे हैं। विरोध प्रदर्शन को कार्यकारी जिलाध्यक्ष हनुमान बांगड़ा, मनीष मिर्धा, पूर्व विधायक रामचंद्र झारोड़ा, प्रेमसुख जाजड़ा ने भी संबोधित किया। कांग्रेस ने एडीएम को राष्ट्रपति के नाम ज्ञापन देकर प्रदेश में अतिवृष्टि के कारण फसल खराबे का उचित मुआवजा दिलाने, महिला अत्याचार, दलित अत्याचार, महिला व नाबालिग बच्चियों के साथ बलात्कार की घटनाएं व माफिया राज पर ठोस कार्रवाई करने, नई नौकरियों की विज्ञप्ति जारी करने, पूर्ववर्ती कांग्रेस सरकार की जन कल्याणकारी योजनाओं को चालू रखने, पेट्रोल-डीजल की कीमतें हरियाणा के बराबर करने, बदहाल सड़कों की मरम्मत कर राहत प्रदान करने, बेलगाम ब्यूरोक्रेसी पर लगाम जनता को समस्याओं से राहत दिलवाने, भाजपा नेताओं के बयानों पर लगाम लगाकर सौहार्द बनाने, प्रदेश में नवंबर और जनवरी में होने वाले नगर निकाय व पंचायती राज के चुनावों को लेकर तैयारी शुरू करने की मांग की है।

इस अवसर पर प्रदेश सचिव आईदानराम भाटी, पूर्व विधायक रामचंद्र जारोड़ा, चिमन वाल्मीकि, जिला उपाध्यक्ष मोतीलाल चंदेल, हेमाराम बेड़ा, दिलीप सिंह, प्रेमसुख जाजडा, नदिम, दीपक, भानु प्रकाश,फरीद खां दुकोसी, उस्मान मौजूद थे।

मंदिर में चोरी के तीन आरोपी गिरफ्तार, 7 मोटर साईकिल बरामद

(नगर संवाददाता)

नागौर, 2 अक्टूबर। डीडवाना में चोरी के मामले में फरार आरोपियों को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। आरोपियों से 7 मोटरसाइकिल और मंदिर से चुराए गए सामान को भी बरामद कर लिया है। डीडवाना थानाधिकारी नंदलाल रिणवा ने बताया कि कुछ दिन पहले ठाकरियावास में प्रसिद्ध भैंरुजी के मंदिर में चोरी हो गई थी। जिसको लेकर मामला दर्ज हुआ था। मामले पर पुलिस ने टीम का गठन कर जांच शुरू की। जांच के आधार पर पुलिस ने तीन आरोपी दाउद खां, आरिफ उर्फ आसिब और अयूब खां उर्फ सद्दाम को गिरफ्तार कर लिया। पूछताछ के दौरान आरोपियों ने कई वारदातें करना स्वीकार किया। जिसमें कुचामन, मकराना, बोरावड़, सीकर से चुराई गई मोटरसाइकिल को भी बरामद किया और मंदिर से चुराए गए सामान को भी बरामद किया गया। मामले में जांच जारी है।

कोलिया के हिंगलाज मंदिर में नवरात्र महोत्सव कल से

(नगर संवाददाता)

नागौर, 2 अक्टूबर। डीडवाना के पास ग्राम कोलिया के मुख्य बाजार में स्थित आदिशक्ति पीठ मां हिंगलाज मंदिर में आगामी 3 अक्टूबर से नौदिवसीय नवरात्रा महोत्सव का आगाज वैदिक मंत्रोच्चार के साथ होगा। मंदिर के पुजारी तुलसीराम काकड़ा ने बताया कि 3 अक्टूबर को अभिजीत मुहूर्त में घट स्थापना की जाएगी और अखंड ज्योत प्रज्वलित की जाएगी। इस अवसर पर शंकर लाल मुंदड़ा की ओर से 11 पंडितों द्वारा सप्त चंडी का पाठ नौ दिन तक माता के दरबार में किया जाएगा। सप्तमी पर 108 मीटर की चुनरी माता रानी को भेंट की जाएगी और नवमी पर भव्य भजन संध्या का आयोजन किया जाएगा। नवरात्र महोत्सव के दौरान मंदिर परिसर में कई धार्मिक आयोजनों की धूम रहेगी, और मंदिर को रंग-बिरंगी रोशनी से सजाया जाएगा।

बिजली कटौती के विरोध में सौंपा ज्ञापन

नागौर, 2 अक्टूबर। खींवसर में बिजली आपूर्ति की माँग को लेकर अखिल भारतीय किसान सभा ने उपखण्ड मुख्यालय के 220 केवी जीएसएस के सामने प्रदर्शन कर अपनी माँगों को लेकर ज्ञापन सौंपा। अखिल भारतीय किसान सभा तहसील अध्यक्ष चुनाराम पालीयाल ने बताया कि क्षेत्र में बिजली आपूर्ति भयकर रूप से चरमराई हुई है।

समाज कल्याण सप्ताह के तहत मनाया वृद्धजन दिवस

(नगर संवाददाता)

नागौर, 2 अक्टूबर। समाज कल्याण सप्ताह कार्यक्रम के तहत सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग नागौर व जनहित सेवा संस्थान सींगड़ के तत्वावधान में एक अक्टूबर को वृद्धजन दिवस का आयोजन किया। इस दौरान वृद्धजनों का माला व शॉल ओढाकर सम्मान किया गया। इसके बाद मोतीलाल चन्देल, अक्षय कुमार, शोकत खान, कालू खान, इकबाल खान, प्रकाशचन्द, भजन सिंह, हेमाराम ने विचार रखे। उप निदेशक किशनाराम लोल ने समाज कल्याण सप्ताह के कार्यक्रम पर प्रकाश डाला। जनहित सेवा संस्थान सचिव भगवानाराम तांडी ने आभार जताया।

बारिश से फसलों को नुकसान, किसानों ने मांगा मुआवजा

तेज अंधड़ से बाजरे की फसल जमीन पर पसरी

(नगर संवाददाता)

नागौर, 2 अक्टूबर। जिले के ग्रामीण इलाकों में तेज आंधी के साथ बारिश हुई। बारिश की वजह से खेतों में काटी हुई फसल को नुकसान पहुंचा है। खींवसर उपखंड के गांवों में बरसात होने से फसलों को काफी नुकसान हुआ है। फसलें खराब होने के कारण किसानों के अच्छे दाम मिलने के अरमानों पर पानी फिर गया है। खेतों में पड़ी फसलों में खराबा देखकर किसान मायूस दिखाई दिए। किसान भंवरू राम का कहना है कि तेज अंधड़ के कारण बाजरे की फसल जमीन पर पसर गई। वहीं मूंग की फसल भी खराब हुई है। इस बारिश से फसलें तबाह हो गई, अब किसानों की उम्मीदें सरकार पर टिक गई हैं। किसान निंबाराम ने बताया कि साल भर की मेहनत बारिश की भेंट चढ़ गई। खेतों में पानी भरा रहने से मूंग की कटी हुई फसल में काफी खराबा हुआ है। मूंग व बाजरा की फसलों में नुकसान अधिक है। अनेक गांवों में फसलों पर बारिश और अंधड़ की मार हुई है। किसानों को उम्मीद है कि इस मुसीबत में सरकार मुआवजे के रूप में मदद करेगी।

मिर्धा कॉलेज में राष्ट्रीय सेवा योजना के तहत रक्तदान शिविर आयोजित

(नगर संवाददाता)

नागौर, 2 अक्टूबर। बलदेवराम मिर्धा राजकीय महाविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना के तत्वावधान में राष्ट्रीय स्वैच्छिक रक्तदान दिवस मनाया गया। प्राचार्य डॉ. हरसुखराम छरंग ने बताया कि रक्तदान दिवस के अवसर पर विद्यार्थियों को रक्तदान के महत्व के बारे में जानकारी दी गई। प्राणी शास्त्र विभाग के विभागाध्यक्ष प्रोफेसर डॉ. महेंद्रसिंह राठौड़ ने बताया कि रक्त मानव जीवन का महत्वपूर्ण घटक है। यह शरीर के ऊतकों और अंगों को महत्वपूर्ण पोषण प्रदान करता है। प्राचार्य डॉ. हरसुखराम छरंग ने रक्तदान की उपयोगिता के बारे में बताया कि रक्तदान करने से शरीर मे रक्त प्रवाह बढ़ जाता है जो ट्राइग्लिसराइड्स को साफ करने में मदद करता है। हृदय संबंधी दुर्घटनाओं और दिल के दौरे की संभावना कम हो जाती है। कार्यक्रम अधिकारी प्रो. अविनाश व्यास ने बताया कि प्राचार्य डॉ हरसुखराम छरंग ने सभी को स्वैच्छिक रक्तदान करने की शपथ दिलाई।

इस दौरान महादेव हॉस्पिटल के सौजन्य से विद्यार्थियों के रक्त समूह की जांच की गई।

ग्रामोत्थान विद्यापीठ में मनाई महात्मा गांधी व लाल बहादुर शास्त्री की जयंती

नागौर, 2 अक्टूबर। ग्रामोत्थान विद्यापीठ संस्थान में महात्मा गांधी व लाल बहादुर शास्त्री जयंती धूमधाम से मनाई गई। प्राचार्य दल्लाराम चौधरी के द्वारा माल्यार्पण किया व हर्षिता तिवाड़ी द्वारा गणेश वंदना से की। प्रभारी राकेश परिहार ने बताया कि कोमल फुलवारिया द्वारा गांधीजी के व्यक्तित्व पर कविता, मोनिका गौड़ व सुष्मिता ने साबरमती के संत नामक गीत, रविना, संगीता, उर्मिला व मुस्कान ने गांधीजी के भजन वैष्णव जन तो तेने सामुहिक गीत, सायमा ने गाँधीजी के प्रेरक प्रसंग, जसोदा ने सत्य अहिंसा के रखवाले, आरती व उर्मिला ने दिल है हिंदुस्तानी पर नृत्य की प्रस्तुति दी।

महावीर इंटरनेशनल केन्द्र पर फिजियोथेरेपी सुविधा कल से

(नगर संवाददाता)

नागौर, 2 अक्टूबर। महावीर इंटरनेशनल केंद्र पर फिजियोथेरेपी की सुविधा 3 अक्टूबर से शुरू होगी। अध्यक्ष वीर गौतमचंद कोठारी ने बताया कि डॉ. हेमा परिहार द्वारा प्रतिदिन सुबह 9 बजे से दोपहर 2 बजे तक सेवाएं दी जाएगी। नागौर में पहली बार लेजर थेरेपी द्वारा फिजियोथेरेपी से इलाज भी किया जाएगा।

मिर्धा कॉलेज में बीएससी द्वितीय सेमेस्टर की प्रायोगिक परीक्षा 4 अक्टूबर से

नागौर, 2 अक्टूबर। श्री बीआर मिर्धा राजकीय महा विद्यालय में बीएससी द्वितीय सेमेस्टर की प्रायोगिक परीक्षाएं 4 अक्टूबर से आरंभ होगी। प्राचार्य डॉ.हरसुखराम छरंग ने बताया कि विस्तृत समय सारणी के लिए विद्यार्थी महाविद्यालय के नोटिस बोर्ड और वेबसाइट का अवलोकन करें।प्रायोगिक परीक्षा के समन्वयक डॉ. महेंद्र सिंह राठौड़ ने बताया कि समस्त विद्यार्थी समय सारणी के अनुसार अपने प्रेक्टिकल रिकॉर्ड, प्रवेश पत्र और आईडी के साथ नियत समय पर महाविद्यालय में अपनी उपस्थिति सुनिश्चित करें।

मुख्य चिकित्सा अधिकारी ने की क्षय निवारण कार्यक्रम की समीक्षा

(नगर संवाददाता)

नागौर, 2 अक्टूबर। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. राकेश कुमावत ने राष्ट्रीय क्षय उन्मूलन कार्यक्रम के तहत नागौर जिले की समीक्षा की।

मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. राकेश कुमावत ने इस समीक्षा बैठक में सीनियर ट्रिटमेंट सुपरवाइजरों को निर्देश दिए कि वे पूरी लगन से फिल्ड में काम करें और एक भी क्षय रोगी उपचार से वंचित न रहे।

डॉ. कुमावत ने क्षय रोगियों की हैल्थ स्क्रीनिंग का कार्य गांव-ढाणी तक करने के निर्देश दिए।

उन्होंने क्षय रोग उन्मूलन कार्यक्रम के इंडीकेटर्स की भी समीक्षा और कहा कि इस कार्य में जिले के जिन ब्लॉक ने काम कम किया है, वहां भी आवश्यक सुधार करने के निर्देश दिए। उन्होंने निक्षय मित्र योजना

के तहत क्षय रोगियों को पोषण किट देने के लिए अधिक से अधिक जनप्रतिनिधियों, भामाशाहों, स्वयंसेवी संस्थाओं व औद्योगिक प्रतिष्ठानों को जोड़ा जाएगा। इस मौके पर क्षय रोगियों को निक्षय पोषण किट भी वितरित किए। जिला क्षय रोग अधिकारी डॉ. श्रवण राव ने बताया कि नागौर तथा डीडवान-कुचामन दोनों जिलों मे कुल 3460 क्षय रोगी चिन्हित किए गए हैं। जिनका उपचार चल रहा है।

वर्तमान में निक्षय पोषण योजना का लाभ इन सभी क्षय रोगियों को दिया जा रहा है। इस योजना के तहत जिले में क्षय रोगियों को पोषण किट वितिरित करने के लिए नागौर जिले में 181 तथा डीडवाना-कुचामन में 93 निक्षय मित्र बनाए गए हैं। निक्षय मित्र बनाने का काम भी अब भी जारी है।

डीडवाना-कुचामन जिले के144 यात्री करेंगे हवाई सफर से तीर्थ

(नगर संवाददाता)

नागौर, 2 अक्टूबर। राज्य सरकार की वरिष्ठ नागरिक तीर्थ यात्रा योजना के तहत ऑनलाइन लॉटरी के जरिए डीडवाना-कुचामन जिले के 718 यात्रियों का रेल द्वारा तीर्थयात्रा के लिए और 144 यात्रियों का हवाई जहाज द्वारा तीर्थ यात्रा करने के लिए चयन किया है।

जिला कलक्टर पुखराज सेन की मौजूदगी में जिला स्तरीय समिति के समाने कलेक्ट्रेट सभागार में मिले आवेदनों में से कंम्प्यूटर पर ऑनलाइन लॉटरी के जरिए यात्रियों का चयन किया। कलक्टर ने बताया-साल 2024-25 के लिए ऑनलाइन आवेदन 23 सितंबर तक प्राप्त किए गए। जिसके क्रम में जिले के लिए निर्धारित कोटा के अनुसार लॉटरी द्वारा यात्रियों का चयन किया गया।

सेन ने बताया कि इस वर्ष यात्रा के लिए डीडवाना-कुचामन जिले से कुल 2925 यात्रियों के आवेदन प्राप्त हुए हैं, जिसमें से कुल 862 यात्रियों का चयन हुआ।

चयनित यात्रियों की सूची विभाग की वेबसाइट पर उपलब्ध है। चयनित यात्रियों को रेल द्वारा भारत के मुख्य धार्मिक तीर्थ यात्रा स्थलों में से किसी एक चयनित स्थल अनुसार यात्रा कराई जाएगी।

वहीं हवाई यात्रा के द्वारा चयनित यात्रियों को काठमांडू नेपाल स्थित भगवान श्री पशुपतिनाथ के दर्शन करवाए जाएंगे। यह यात्रा राज्य सरकार की ओर से निशुल्क कराई जाती है। जिसमें सारी व्यवस्था राज्य सरकार के द्वारा से पूर्ण करवाई जाती हैं।

लॉटरी में अतिरिक्त जिला कलक्टर महेंद्र मीना, हिमांशु शर्मा एडिशनल, विकास मोहन भाटी एवं देव स्थान विभाग के प्रतिनिधि मौजूद थे।

हरियाणा में तीन चौथाई बहुमत से सरकार बनायेगी कांग्रेसः पायलट

जयपुर। कांग्रेस के राष्ट्रीय महासचिव एवं पूर्व उप मुख्यमंत्री श्री सचिन पायलट ने कहा कि हरियाणा में कांग्रेस पार्टी सरकार बनाने जा रही है। जनता ने कांग्रेस को विजयी बनाने का मन बना लिया है। जो लोग 300 पार, 400 पार का नारा लगाते थे जनता ने उनकी नकारात्मक सोच और घमण्ड का जवाब देते हुए लोकसभा चुनावों में बहुमत भी पार करने नहीं दिया। देश की जनता ने भाजपा को आईना दिखाते हुए बता दिया कि आप घमण्ड और अहंकार से राज नहीं कर सकते, तानाशाही तरीके से राज नहीं कर सकते, आप लोगों की भावनाओं से खेलकर, मंदिर-मस्जिद की बात करके वोट नहीं ले सकते। पायलट 30 सितम्बर व 1 अक्टूबर को हरियाणा के चुनावी दौरे पर रहे। अपने चुनावी कार्यक्रम के दौरान श्री पायलट ने 30 सितम्बर को हरियाणा के विधानसभा क्षेत्र भवानी खेड़ा (जिला भिवानी) एवं फरीदाबाद एन.आई.टी. (जिला फरीदाबाद) तथा 1 अक्टूबर को घरौंड़ा (जिला करनाल), समालखा (जिला पानीपत), नांगल चौधरी (जिला महेन्द्रगढ़), हथीन (जिला पलवल) तथा बादशाहपुर (जिला गुड़गांव) विधानसभा क्षेत्रों में कांग्रेस प्रत्याशियों के समर्थन में चुनावी सभाओं को सम्बोधित किया। पायलट 2 अक्टूबर को हरियाणा के सोहना (जिला गुड़गांव) एवं जगाधरी (जिला यमुनानगर) तथा 3 अक्टूबर को महेन्द्रगढ़ (जिला महेन्द्रगढ़), तोशाम (जिला भिवानी), बरवाला (जिला हिसार), पलवल (जिला पलवल) विधानसभा क्षेत्रों के चुनावी दौरे पर रहेंगे।

सभाओं को सम्बोधित करते हुए उन्होंने कहा कि हरियाणा की जनता ने देश और प्रदेश की भाजपा की सरकार के दस सालों के कुशासन को झेला है। किसानों को परेशान किया गया, उन पर लाठी-गोलियां चलायी गई, सैकड़ों किसानों ने शहादत दी। उन्होंने कहा कि भाजपा धर्म, जाति, मंदिर-मस्जिद की बाते करके वोट लेना जानती है। भाजपा का खाद, बिजली, पानी, सड़क, निवेश, विकास जैसे मुद्दों से कोई उन्होंने मतदाताओं से अपील की कि भाजपा के दस सालों के कुशासन, भय, पक्षपात और भाई से भाई को लडाने की सोच, दमनकारी राजनीति का पुरजोर जवाब देते हुए कांग्रेस के पक्ष में मतदान करें।

जम्मू-कश्मीर के लोगों की पहली पसंद है कांग्रेस-नेशनल कांफ्रेंस अलायंसः पायलट

जयपुर। कांग्रेस के राष्ट्रीय महासचिव एवं पूर्व उप मुख्यमंत्री श्री सचिन पायलट ने कहा कि जम्मू-कश्मीर के लोगों की पहली पंसद है कांग्रेस-नेशनल कांफ्रेंस अलायंस। यहां के लोगों ने कांग्रेस-नेशनल कांफ्रेंस गठबंधन को विजयी बनाने का मन बना लिया है। विगत् 10 सालों में भाजपा ने जम्मू-कश्मीर की जनता की भलाई के लिए ऐसा कोई काम नहीं किया जिसके नाम पर जनता से वोट मांगे। भाजपा का लोकतंत्र में कोई विश्वास नहीं है। उन्होंने कहा कि मैं माननीय सर्वोच्च न्यायालय को धन्यवाद देता हूं जिसके कारण आज जम्मू-कश्मीर में चुनाव हो रहे है। पायलट ने 29 सितम्बर को जम्मू-कश्मीर के चुनावी दौरे के दौरान विधानसभा क्षेत्र उधमपुर पश्चिम (जिला उधमपुर) तथा नगरोटा (जिला जम्मू) में कांग्रेस प्रत्याशियों के समर्थन में आयोजित चुनावी सभाओं को सम्बोधित करते हुए उक्त बाते कहीं। भाजपा में जो लोग बड़े पदों पर बैठे है, वे लोकसभा चुनावों में 400 पार का नारा लगाते नहीं थकते थे। जनता ने उनके घमण्ड को तोड़ते हुए उन्हें बहुमत तक भी नहीं पहुंचने दिया। उन्होंने कहा कि अपनी बैसाखियों की सरकार को बचाने के लिए केन्द्र सरकार अन्य राज्यों के साथ भेदभाव कर रही है। भाजपा के 10 सालों के कुशासन को देखते हुए जम्मू-कश्मीर के विकास, यहां के लोगों की भलाई के लिए कांग्रेस-नेशनल कांफ्रेंस अलायंस के प्रत्याशियों को विजयी बनायें।

सर्वधर्म प्रार्थना सभा का आयोजन

अर्न्तराष्ट्रीय अहिंसा दिवस पर शहर जिला कांग्रेस कमेटी द्वारा माल्यार्पण,गोष्ठी,

कोटा। राष्ट्रपिता महात्मागांधी जी की 155 वीं जयंती अर्न्तराष्ट्रीय अहिंसा दिवस पर 2 अक्टूबर बुधवार को आज प्रात:10.15 बजे शहर जिला कांग्रेस कमेटी द्वारा शहर अध्यक्ष रविन्द्र त्यागी की अगुवाई में रामपुरा स्थित गांधी चैक में महात्मा गांधी जी मूर्ति पर कांग्रेस जनो द्वारा अर्न्तराष्ट्रीय अहिंसा दिवस पर माल्यार्पण,गोष्ठी व सर्वधर्म प्रार्थना सभा का आयोजन किया जायेगा। कांग्रेस कमेटी के डॉ विजय सोनी ने बताया कि देश को आजादी दिलाने वाले महापुरुष राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 155 वीं जयंती को कांग्रेसजन हर्ष और उल्लास के साथ धूम धाम से मनायेगे। डॉ विजय सोनी ने बताया कि गोष्ठी के बाद पूर्व प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री की जयंती पर भी स्टेशन रोड भीमगंज मंडी थाने के सामने पार्क में पूर्व प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री की मूर्ति पर कांग्रेस जनो द्वारा माल्यार्पण किया जायेगा उक्त दोनों कार्यक्रमों में वरिष्ठ कांग्रेस नेतागण सहित समस्त कांग्रेस जन भाग लेगे।

राज्यपाल बागडे ने गांधी जयन्ती एवं शास्त्री जयन्ती पर उन्हें स्मरण का आह्वान किया

जयपुर। राज्यपाल श्री हरिभाऊ बागडे ने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी और पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री की जयन्ती (2 अक्टूबर) पर उन्हें स्मरण करते हुए श्रद्धा सुमन अर्पित किए हैं। बागडे ने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी और उनके दर्शन को स्मरण करते हुए कहा कि गांधीजी का सम्पूर्ण जीवन सत्य और अहिंसा से जुड़ा रहा। अहिंसा की उनकी दृष्टि ने राजनीतिक और सामाजिक परिवर्तनों में महती भूमिका निभाई। बागडे ने कहा कि इसी तरह लाल बहादुर शास्त्री का जीवन ईमानदारी और शुचिता का अनुपम उदाहरण है। उन्होंने राष्ट्र की इन महान विभूतियों के जीवन से प्रेरणा लेते हुए उनके बताए आदर्श मार्ग पर चलने का आह्वान किया है।

राजस्थान स्टेट मोटर गैरेज के वाहन चालक एवं तकनीकी कर्मचारियों द्वारा प्रदेशाध्यक्ष अजयवीर सिंह का किया गया सम्मान

राजस्थान सरकार द्वारा वाहन चालकों की शैक्षिक योग्यता 10वी करने व वाहन चालकों के रिक्त पदों पर नई भर्तियां करने की घोषणा के कैबिनेट में अनुमोदन पर आज दिनांक 1 अक्टूबर 2024 को राजस्थान स्टेट मोटर गैरेज, जयपुर में अखिल राजस्थान राज्य वाहन चालक एवं तकनीकी कर्मचारी संघ के प्रदेश अध्यक्ष श्री अजयवीर सिंह सहित प्रदेश संरक्षक ज्ञानचंद जांगिड़, सलाहकार समंदर सिंह, वरिष्ठ उपाध्यक्ष सतपाल सिंह, महामंत्री नरेंद्र जी, संगठन मंत्री, महिपाल जी, जिला अध्यक्ष विजय सिंह, गैरेज अध्यक्ष लक्ष्मीनारायण मीना सहित प्रदेश एवं जिला पदाधिकारीयो का राजस्थान स्टेट मोटर गैरेज के वाहन चालक एवं तकनीकी कर्मचारीयो द्वारा माला पहनाकर स्वागत किया गया। इस अवसर पर संघ के प्रदेश अध्यक्ष अजयवीर सिंह ने कर्मचारियों को संबोधित करते हुए बताया की वाहन चालकों की शैक्षिक योग्यता बढ़ाने तथा नई भर्तियो की संघ की लंबे समय से लंबित मांग थी। रिक्त पदों पर वाहन चालक एवं तकनीकी कर्मचारी की नई भर्तियां की जाएगी सुचारू रूप से हो सके।

ओशो साहित्य की प्रदर्शनी लगाई

जयपुर। हिन्दू आध्यामिक सेवा मेले में ओशो लाइब्रेरी द्वारा भारतीय दर्शन पर ओशो साहित्य की प्रदर्शनी लगाई गई। जिसमें ओशो रचित गीता दर्शन , अष्टावक्र महागीता, गोरख, पतंजलि , मीरा , कबीर, नानक आदि संतों पर ओशो पुस्तकें पढ़ने के प्यासे ओशो प्रेमी ओशो स्टाल पर युवाओं में उत्साह नजर आया। भारतीय दर्शन व सेवा कार्य करने वालो को एक ही छत के नीचे लाने के लिए हिन्दू आध्यामिक सेवा मेला समिति को धन्यवाद दिया गया ओर ओशो लाइब्रेरी के अध्यक्ष स्वामी ओम शांति ने बच्चे तनाव मुक्त जीवन जीने की कला को समझे स्कूलों व कॉलेजों के बच्चों को निःशुल्क ध्यान सिखाने की घोषणा की

हृदय बीमारियों के खिलाफ जागरूकता का किया आह्वान

उदयपुर। पारस हेल्थ, उदयपुर ने विश्व हृदय दिवस 29 सितंबर 2024 पर फतेह सागर में एक बेहद सफल वॉकथॉन का आयोजन करके हृदय संबंधी बीमारियों के खिलाफ लड़ाई में एक सि य कदम उठाया। इस कार्य म ने स्थानीय समुदाय, हेल्थकेयर प्रोफेसनल्स और प्रमुख समर्थकों को हृदय स्वास्थ्य के महत्वपूर्ण मुद्दे के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए एक साथ लाया।भारत में होने वाली सभी मौतों में से 26 से ज्यादा मौतों के लिए हृदय संबंधी बीमारियों को जिम्मेदार माना जाता है। इस वॉकथॉन का उद्देश्य हृदय संबंधी बीमारियों के रोकथाम संबंधी कार्रवाई को बढ़ावा देना और हृदय को स्वस्थ रखने वाली लाइफस्टाइल में बदलावों को प्रोत्साहित करना था ताकि हृदय बीमारियों के इस खतरनाक ट्रेंड को धीमा करने में मदद की जा सके।

भारतीय स्टेट बैंक में रक्त दान शिविर का आयोजन

कोटा। राष्ट्रीय स्वैच्छिक रक्तदान दिवस के अवसर पर भारतीय स्टेट बैंक के प्रशासनिक कार्यालय द्वारा मुख्य शाखा, छावनी चौराहा, कोटा में एमबीएस हॉस्पिटल के सहयोग से रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में 50 से अधिक अधिकारियों/ कर्मचारियों ने रक्तदान कर राष्ट्रीय स्वैच्छिक रक्तदान दिवसको ' 'सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः ' 'की भावना से प्रेरित होकर स्वर्णिम बना दिया। इस अवसर पर भारतीयस्टेट बैंक के कोटा मॉड्यूल के उप महाप्रबन्धक महोदय श्री दीपेश कुमार ने न केवल अपने ग्राहकों अपितु मानव मात्र के प्रति कल्याण का भाव रखना ही एसबीआई की सर्वोच्च प्राथमिकता बताई, रक्तदान की महत्ता स्पष्ट की तथा रक्तदाताओं को प्रमाण-पत्र प्रदान कर सम्मानित किया। एमबीएस हॉस्पीटल,कोटाकी टीम ने इस रक्तदान शिविर में स्वास्थ्य संबंधी विभिन्नजानकारी साझा की। कार्यक्रम के अन्त में श्री सत्येन्द्र जायसवालमुख्य प्रबन्धक ने सभी आगन्तुकों, रक्तदाताओं तथा एमबीएस हॉस्पीटल, कोटा से आए डॉक्टर एवं उनकी मेडीकल टीम को धन्यवाद ज्ञापित किया।

68 वीं राज्य स्तरीय क्रीड़ा प्रतियोगिता का उदघाटन समारोह

सवाई माधोपुर। जिला मुख्यालय पर आयोजित 7 दिवसीय राज्य स्तरीय रोलर स्केटिंग ीड़ा प्रतियोगिता का सोमवार को आयोजित उदघाटन समारोह आयोजको की लापरवाही के चलते अव्यवस्थाओं की भेंट चढ़ गया। आलनपुर स्थित एक गार्डन में आयोजित उदघाटन समारोह स्थल पर आयोजको ने अतिथियों के लिए तो लाखो रुपया खर्च कर बहुत बड़ा सुसज्जित पांडाल बनवाया जबकि प्रदेश भर से आए करीब आठ सौ खिलाड़ी छात्र छात्राओं के लिए ना तो बैठने की कोई व्यवस्था की ना ही उनके लिए कार्य म स्थल पर छाया की व्यवस्था की। परिणाम स्वरूप खिलाड़ी और उनके साथ आए सैंकड़ों कोच और शिक्षक पांडाल से दूर बारामदो में खड़े रहकर उदघाटन समारोह को देखने को मजबूर नजर आए। तो ये रही की जो अतिथि आए वे उदघाटन की रस्म 10 मिनिट में पूरी कर कार्य की व्यस्तता बताते हुए मंच छोड़ कर चल दिए। अतिथियों के जाने के साथ ही पूरे मैदान में अव्यवस्था का माहौल बन गया। कुछ संगठन खिलाड़ियों के लिए भामाशाह के रूप में फल और नाश्ते की व्यवस्था कर के लाए थे। उन्हे अव्यवस्था के चलते ढंग से बांट भी नही पाए। कार्य म में एक और आश्चर्यजनक स्थिति देखने को मिली।

ऊर्जावान युवा तैयार करती है स्काउटिंग : तोबड़िया

रींगस में स्काउट्स ने कैंप फायर में दी अनेक प्रस्तुतियां

रींगस। राजस्थान राज्य भारत स्काउट और गाइड स्थानीय संघ के द्वारा बावड़ी बालाजी धाम बावड़ी में आयोजित स्काउट प्रशिक्षण शिविर में बालक-बालिकाएं राष्ट्रनिर्माण सीख रहे हैं। इसके साथ ही प्रतिदिन रात्रि में कैंप फायर का आयोजन किया जा रहा है। जिससे स्काउट्स द्वारा अनेक प्रस्तुतियां दी जा रही है।संघ सचिव विष्णु कुमार जोशी ने बताया कि प्रातः स्थानीय संघ की सहायक जिला कमिश्नर और राउमावि जाजोद की प्रधानाचार्य सुमन तोबड़िया ने ध्वजारोहण किया। इन्होंने अपने सम्बोधन में बताया की किसी भी राष्ट्र के विकास के लिए अनुशासित नागरिकों की का बहुत महत्व होता है और स्काउटिंग के माध्यम से ये ऊर्जावान युवा तैयार हो रहे हैं। प्रशिक्षण में अनुशासन, दिशाओं का ज्ञान, खोज के चिन्ह, तारामंडल का ज्ञान, कंपास, स्ट्रेचर बनाना, सिर हाथ पैर के फैक्चर होने पर बांधी जाने वाली उपचार पट्टियां, फर्स्ट एड, कैंप फायर प्रोग्राम्स आदि का प्रशिक्षण प्रदान किया गया। इस अवसर पर घासीराम सैनी, राजेंद्र मौर्य, बीरबल वर्मा, रामेश्वर पालीवाल, शंकर लाल जाट, कृष्ण कुमार यादव, निक्की जांगिड, कृष्ण कुमार शर्मा, सुभाष देवंदा, ज्योति राजावत, स्वाति शर्मा, कोमल शर्मा, पूजा कुमावत, रूपनारायण मंगावा, शंकर लाल रैगर, संदीप कुमार, सुमित शर्मा, गोवर्धन बावड़ीका, पंकज गर्ग, मनोज बावड़ीका, सुनील खेमका, भारत धींगडा सहित अनेक गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

- **मेष :** अपनी जिम्मेदारियों को आप बखूबी निभाएंगे, साथ ही किसी महत्वपूर्ण व्यक्ति का सहयोग आपके कार्यों को और अधिक सुगम बनाएगा। युवा लोग अपने किसी खास लक्ष्य को लेकर किए गए प्रयास में सफल रहेंगे।
- **वृष :** बेहतरीन ग्रह स्थिति बनी हुई है। संतान से संबंधित कोई महत्वपूर्ण कार्य बन जाने से घर में सुकून और खुशी भरा माहौल रहेगा। आपकी कार्यप्रणाली और विवेक आपको घर और समाज में मान-सम्मान प्रदान करेगा।
- **मिथुन :** कहीं फंसा हुआ या उधार दिया हुआ पैसा वापस मिलने की संभावना है। घर में बदलाव अथवा रखरखाव संबंधी गतिविधियों की योजनाएं बनेंगी और आपकी सलाह को उचित महत्व दिया जाएगा। युवा वर्ग अपने करियर को लेकर उत्साहित रहेंगे।
- **कर्क :** मन मुताबिक गतिविधियों में समय व्यतीत करके आपको हार्दिक तथा मानसिक शांति का अनुभव होगा। बच्चों के साथ कुछ समय व्यतीत करने से उनका हौसला और आत्मविश्वास और अधिक बढ़ेगा। आर्थिक मामलों में दोस्तों अथवा संबंधी की सलाह मददगार साबित होगी।
- **सिंह :** यह समय थोड़ा सचेत रहने का है। अपने किसी भावी लक्ष्य को सुनियोजित ढंग से हासिल करने का प्रयास करें। अपने संपर्कों को भी और अधिक मजबूत कीजिए। कुछ नई जानकारियां हासिल होंगी।
- **कन्या :** आर्थिक स्थिति अनुकूल बनने से आत्मविश्वास और मनोबल में भी वृद्धि होगी। अनुभवी तथा वरिष्ठ लोगों के साथ कुछ समय व्यतीत अवश्य करें, उनके अनुभवों और जानकारियों से आपको कई नई बातें सीखने को मिलेंगी।
- **तुला :** नई योजनाएं बनाने तथा उन्हें क्रियान्वित करने का अनुकूल समय है। सिर्फ चुनौतियों से घबराने की बजाय उनका मुकाबला करें। इससे सफलता के मार्ग भी खुलेंगे। रचनात्मक और धार्मिक क्रियाकलापों के प्रति रुझान रहेगा। किसी मित्र के साथ मुलाकात सकारात्मक साबित होगी।
- **वृश्चिक :** किसी संबंधी के माध्यम से अथवा फोन द्वारा कोई खास सूचना मिलेगी। मानसिक रूप से बहुत अधिक सुकून का अनुभव करेंगे। समझदारी से किया गया धन का विनिमय आपके लिए फायदेमंद रहेगा। बच्चों का ध्यान अपनी पढ़ाई पर फोकस रहेगा।
- **धनु :** दिन का कुछ समय आध्यात्मिक अथवा धार्मिक गतिविधियों में व्यतीत होगा, जिससे आप सकारात्मक ऊर्जा महसूस करेंगे। संतान के करियर से संबंधित किसी समस्या का भी हल जरूर निकलेगा।
- **मकर :** आप घर की साज-सज्जा व रचनात्मक कार्य में अपने आप को व्यस्त रखेंगे। घर के रखरखाव संबंधी सामान की ऑनलाइन शॉपिंग में भी समय व्यतीत होगा। विद्यार्थियों को करियर संबंधी कोई शुभ सूचना मिल सकती हैं। कुछ रुके हुए व्यक्तिगत कार्य आज पूरे करने पड़ सकते हैं।
- **कुंभ :** आज कोई पारिवारिक मसला हल होने से व्यवस्था ठीक हो जाएगी। सामाजिक व धार्मिक क्रियाकलापों में समय व्यतीत करने से आपको मानसिक सुकून और शांति मिलेगी। प्रॉपर्टी के लेनदेन संबंधी गतिविधियां भी आगे बढ़ेंगी।
- **मीन :** अनुभवी तथा वरिष्ठ लोगों के मार्गदर्शन से आप उचित तरीके से अपने कामों को अंजाम दे पाएंगे। निवेश संबंधी कार्य भी संपन्न होंगे। परिवार के साथ मनोरंजक स्थल पर जाने का प्रोग्राम बनेगा।

परमवीर चक्र विजेताओं के सम्मान में 5000 युवा दशहरा मैदान में

हिंदू सेवा मेले में परमवीर वंदन कार्यक्रम का आयोजन

जयपुर। हिंदू आध्यात्मिक एवं सेवा फाउंडेशन की ओर से आयोजित सेवा मेले में परमवीर वंदन कार्यक्रम आयोजित किया गया। प्रदेश सचिव सोमकांत शर्मा ने बताया कि कार्यक्रम में 5000 से अधिक युवाओं ने भागीदारी की। भारत में धर्म और राष्ट्र- सामाजिक जीवन में एकाकार हैं। इस प्राचीन देश के अलावा सनातन धर्म के लिए कोई धरती सुलभ नहीं है। एक सशक्त राष्ट्र के बिना कोई भी सुरक्षित नहीं है। इसलिए भारत राष्ट्र को एक देवता जैसा सम्मान दिए जाने की जरूरत हैं तथा इस राष्ट्र की सेवा करने वालों का भी सम्मान होना चाहिए। परमवीर वंदन कार्यक्रम के माध्यम से हम शहीद हुए परमवीर चक्र विजेताओं एवं जवानों का वंदन कर देश के नागरिकों में राष्ट्रभक्ति भाव जागरण का प्रयत्न करते हैं।

कार्यक्रम की शुरुआत दीप प्रज्वलन के साथ हुई कार्यक्रम में मुख्य अतिथि परमवीर चक्र विजेता योगेंद्र यादव मुख्य अतिथि रहे। कार्यक्रम में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पूर्व सर कार्यवाह भैया जी जोशी का सानिध्य रहा, कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि पंडित रविशंकर मेहता शिक्षा मंत्री मदन दिलावर रहे।

कार्यक्रम के प्रारंभ में सभी ने शहीद हुए परमवीर चक्र विजेताओं को याद करते हुए उनके चित्रों पर पुष्पांजलि की। छात्र-छात्राओं द्वारा विभिन्न देशभक्ति गीतों पर प्रस्तुतियां दी गई एवं देश भक्ति भाव जागरण के नाट्य कार्यक्रमों का मंचन हुआ। कार्यक्रम में गायक रविंद्र उपाध्याय ने देशभक्ति गीतों की प्रस्तुति की एवं युवाओं में उत्साह भरा। पंडित विजय शंकर मेहता ने कहा कि रावण ने प्रतिकूल सात संकल्प लिए थे और हनुमान जी ने लंका जलाकर रावण को यह बता दिया कि यह धरती राम और राम भक्तों की है यहां रावण के संकल्प पूरे नहीं होंगे यहां राम का संकल्प पूरा होगा।

परमवीर चक्र विजेता कैप्टन योगेंद्र यादव ने कहा कि हम में से कोई भी बॉर्डर पर शहीद होते हुए उन जवानों के नाम भी नहीं जानते होंगे जो देशभक्ति के भाव से प्रतिदिन दुश्मन से मुठभेड़ करते हैं क्योंकि उनका हमारे जीवन से कोई संबंध नहीं है हमारा संबंध उन लोगों से है जिन्हें दिन रात हम टीवी पर देखते हैं जो हमारे इर्द-गिर्द रहते हैं या हमारे रिश्तेदार हैं आप स्कूल के अंदर बिना किसी चिंता के पढ़ते हैं ऑफिस में बिना किसी डर के काम करते हैं बिना किसी डर के व्यवसाय करते हैं बिना किसी डर के घूमते हैं यह सब उन सैनिकों की बदौलत है जो दिन में 50 55 डिग्री टेंपरेचर रात में माइनस 10 डिग्री टेंपरेचर में खड़े होकर देश की की रक्षा करते हैं। आज युवाओं के रोल मॉडल सिर्फ फिल्म जगत के सितारे या अन्य सेलिब्रिटी या ही रह गए हैं हमारे रोल मॉडल भगत सिंह सुखदेव राजगुरु होनी चाहिए हमारे रोल मॉडल आजाद होने चाहिए जिन्होंने 15 साल की उम्र में कसम खाई थी कि आजाद हूं आजाद ही रहूंगा।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पूर्व सरकार्यवाह भैया जी जोशी ने कहा कि इस कार्यक्रम की सफलता तभी है जब हम अपने और अपने परिवार के अंदर देशभक्ति की भावना जगाएं हम पैसा तो बहुत कमा लेते हैं नाम बहुत कमा लेते हैं परंतु राष्ट्र के प्रति जो हमारे कर्तव्य हैं उन्हें हम नहीं निभाते आज हम सभी को यह संकल्प लेना चाहिए की हम अपने बच्चों में बचपन से ही देशभक्ति भाव का जागरण करें।

कार्यक्रम में हिंदू आध्यात्मिक एवं सेवा फाउंडेशन के राष्ट्रीय संयोजक गुणवंत सिंह कोठारी चेयरपर्सन किशोर रुंगटा वाइस चेयरपर्सन एम एल स्वर्णकार अध्यक्ष सुभाष बापना कोषाध्यक्ष दिनेश पितलिया कार्यक्रम संयोजक डॉ राकेश दाधीच सहसंयोजक डॉ शिवम अग्रवाल डॉ भुवनेश तिवारी जितेंद्र जोशी मौजूद रहे। इसी के साथ आज हिंदू सेवा मेले की समाप्ति भी हुई प्रतिदिन 20000 से अधिक लोगों ने मेला दिखा एवं हिंदू सेवा कार्यों की जानकारी ली। अंत में विभिन्न छात्र-छात्राओं द्वारा विभिन्न सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दी गई एवं हिंदू आध्यात्मिक एवं सेवा फाउंडेशन द्वारा सभी को धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

धार्मिक पुस्तक श्री रामचरित मानस सहित दो व्हीलचेयर अस्पताल में भेंट की

सेवा पखवाडा के तहत भाजपा ओबीसी मोर्चा से नवल देव ने कि भेंट

कोटा, 2 अक्टूबर। हमारे देश के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिन की बेला में चल रहे सेवा पखवाड़ा कार्यक्रम में लोकसभा अध्यक्ष ओम कृष्ण बिरला के जनसेवस से प्रेरणा लेकर भाजपा ओबीसी मोर्चा दादाबाड़ी मंडल अध्यक्ष नवल देव ने अपने माता-पिता स्वर्गीय पाना बाई एवं स्वर्गीय ओम प्रकाश देव की पुण्यतिथि पर धार्मिक पुस्तक श्री रामचरित मानस सहित 2 नग व्हीलचेयर भाजपा शहर जिलाध्यक्ष राकेश जैन के सानिध्य में मेडिकल कॉलेज कोटा के नवीन अस्पताल में भेंट करते हुए अस्पताल अधीक्षक डा. आशुतोष शर्मा को सुपुर्द की।

जिलाध्यक्ष राकेश जैन ने इस अवसर पर कहा कि सेवा पखवाडा के तहत भाजपा कोटा शहर द्वारा रोजाना सेवा कार्य किये जा रहे है। इसी क्रम में आज अस्पताल में दो व्हीलचेयर भेंट की गयी है। सेवाकार्य भाजपा कार्यकर्ता के स्वभाव में है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी व लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला लगातार देश सेवा में लगे हुए है। इन्हीं के सेवा भाव से प्रेरित होकर भाजपा कार्यकर्ता लगातार सेवा कार्य कर रहे है।

नवल देव ने अपील करते हुए कहा कि बीमार, गरीब, असहाय लोगो की सेवा से बड़ा कोई पुण्य कार्य नही।

बीमार लोगो की सेवार्थ आमजन को इस तरह पुनीत कार्य में बड़ चढकर आगे आना चाहिए।

इस अवसर पर युवा नेता भाजपा सदस्यता अभियान जिला सह संयोजक एवं पूर्व भाजपा दादाबाड़ी मंडल अध्यक्ष शैलेंद्र ऋषि, भाजपा दादाबाड़ी मंडल अध्यक्ष धर्मेंद्र सिंह हाड़ा, सुमित जांगिड़, राजकुमार, नारायण, प्रियांशु देव सहित भाजपा कार्यकर्ता एवं अस्पताल नर्सिंग स्टाफ और कर्मचारी उपस्थित रहे।

गोदावरी धाम पर जिलाध्यक्ष राकेश जैन के मुख्य आतिथ्य में भाजपा सदस्यता अभियान के तहत आमजन को भाजपा का सदस्य बनाया गया।

सेवा पखवाडा के तहत गायों को हरा चारा खिलाया गया। इस अवसर पर सेवा पखवाडा के जिला सहसंयोजक देवेन्द्र राही, सहसंयोजक कुलदीप सिंह तलवार, मौना शारदा, सदस्यता अभियान के जिला सहसंयोजक रेखा खेलवाल, शैलेन्द ऋषि, दादाबाडी मण्डल अध्यक्ष धर्मेन्द्र सिंह हाडा प्रमुख रूप से उपस्थित रहें।

अंतर्राष्ट्रीय वृद्धजन दिवस पर बुजुर्गों का किया सम्मान

धौलपुर, 2 अक्टूबर। अंतर्राष्ट्रीय वृद्ध जन दिवस के अवसर पर जिला कलक्टर श्रीनिधि बी टी ने हाउसिंग बोर्ड वृद्धाश्रम पहुंचकर वहां निवासरत बुजुर्गों से मुलाकात की। साथ ही उन्हें शाल-श्रीफल भेंट कर सम्मानित किया गया। जिसमें जिले भर से आये वृद्धजनों को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर जिला कलक्टर ने कहा की वृद्धावस्था जीवन का सत्य है। जो आज युवा है, वह कल बूढ़ा भी होगा। बुजुर्ग हमारी धरोहर है, बोझ नहीं, बुजुर्ग समाज की विरासत हैं। ये समाज को राह दिखाते हैं। उन्हें जीवन के विभिन्न क्षेत्रों का व्यापक अनुभव होता है। इस दौरान उन्होंने कहा की सरकार द्वारा वृद्धावस्था पेंशन दे रही है। यह यथावत मिलती रहे इसके लिए वेरिफिकेशन करवाए एवं समय-समय पर स्वास्थ्य परीक्षण करवाए। इस दौरान सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग द्वारा कान की मशीन भी जरूरत मंद बुजुर्गों को दी गई। यात्रा हेतु रोडवेज बस पास भी मौके पर बनाए गए। चिकित्सा विभाग द्वारा बुजुर्गों का स्वास्थ्य परीक्षण भी किया गया। वृद्धाश्रम संचालक बृजेश मुखरिया ने वृद्धाश्रम की कार्य प्रणाली के बारे में जानकारी दी।

मानसून सत्र-2024 समाप्त होने पर एसडीआरएफ टीम को अपने मूल स्थान पर उपस्थिति देने के दिए निर्देश

धौलपुर, 2 अक्टूबर। मानसून वर्ष 2024 के दौरान जिले में भारी वर्षा एवं बाढ़ से होने वाली स्थिति में आपदा राहत एवं बचाव कार्यों हेतु राज्य आपदा प्रतिसाद बल की सी-3 एवं सी-4 कम्पनी को नियुक्त किया गया था। उपखण्ड अधिकारी साधना शर्मा ने बताया कि मानसून सत्र 2024 समाप्त होने के कारण एसडीआरएफ की सी-3 एवं सी-4 कम्पनी को निर्देश दिये गये हैं कि वह 1 अक्टूबर को जिले से कार्यमुक्त होकर अपनी उपस्थिति अपने मूल पदस्थापन विभाग में दिया जाना सुनिश्चित करें।

माननीय रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव द्वारा वाडी बंदर, मुंबई का निरीक्षण, यात्री सुरक्षा और नवाचार पर ध्यान

माननीय रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने आज वाडी बंदर कोचिंग डिपो, मुंबई का व्यापक निरीक्षण किया

कोटा, 2 अक्टूबर। माननीय रेलमंत्री ने एलएचबी (लिंके हॉफमैन बुश) कोचों में किए गए सुधारों का निरीक्षण किया, इसमें स्प्रिंग विफलताओं को कम करने, सवारी आराम और सुरक्षा को बढ़ाने के लिए टीपीयू रिंगों को शामिल करना शामिल है।

स्वच्छता और यात्री सुविधा में नवाचार-वैष्णव ने स्वच्छ वातावरण बनाए रखने के लिए डिपो के प्रयासों की सराहना की। यह विशेष रूप से 'बेस्ट फ्रॉम वेस्ट' प्रदर्शनी में प्रदर्शित इन-हाउस डिज़ाइन किए गए कूड़ा संग्रहण जैसे नवाचारों के माध्यम से किए गए प्रयासों के लिए थी। उन्होंने शौचालय सहित कर्मचारी सुविधाओं की साफ-सफाई का भी निरीक्षण किया।

माननीय मंत्री ने व्यक्तिगत रूप से वंदे भारत एक्सप्रेस की '14-मिनट मिरेकल' सफाई प्रक्रिया में इस्तेमाल किए गए डायसन वैक्यूम क्लीनर सहित उन्नत सफाई उपकरणों के उपयोग का प्रदर्शन किया, जो यात्री सुविधा के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को रेखांकित करता है।

सुरक्षा और दक्षता के लिए उन्नत प्रौद्योगिकी-निरीक्षण में एयर ब्रेक अखंडता सुनिश्चित करने के लिए अल्ट्रासोनिक एयर लीकेज डिटेक्शन सिस्टम और समय पर रखरखाव के लिए FIBA (फ्लशिंग इंडिकेटर और ब्रेक एप्लिकेशन) सिस्टम जैसे उन्नत उपकरण शामिल थे। ये प्रौद्योगिकियां पहले से ही राजधानी एक्सप्रेस जैसी ट्रेनों में सुरक्षा बढ़ा रही हैं।

इसके अतिरिक्त, मंत्री को कर्मचारियों के प्रशिक्षण के लिए वर्चुअल रियलिटी (वीआर) के उपयोग और आईओटी-आधारित वास्तविक समय जल स्तर निगरानी प्रणालियों के एकीकरण के बारे में जानकारी दी गई, जो यात्रियों के लिए निर्बाध रूप से साफ पानी पहुंचाने की गारंटी देता है।

रखरखाव और प्रशिक्षण पर ध्यान: माननीय मंत्री ने वंदे भारत स्टोर का दौरा किया, जहां वंदे भारत ट्रेनों के लिए आवश्यक पार्ट्स संग्रहीत किए जाते हैं, जिससे समय पर मरम्मत और सेवा विश्वसनीयता सुनिश्चित होती है। उन्होंने बुनियादी प्रशिक्षण केंद्र का भी दौरा किया, एलएचबी कोच प्रशिक्षण के लिए इन-हाउस मॉडलों का अवलोकन किया, जिससे सुरक्षा और सेवा मानकों को और मजबूत किया जा सके। तकनीकी मुद्दों को हल करने और देरी को कम करने, समग्र यात्री अनुभव में सुधार करने में कर्मचारियों की दक्षता बढ़ाने के लिए व्यावहारिक प्रशिक्षण के लिए वीआर तकनीक के उपयोग की सराहना की गई।

यात्री सेवाएँ और शिकायत निवारण: इंटीग्रेटेड डाटा सेंटर में, वैष्णव ने यात्री शिकायतों से निपटने के लिए जिम्मेदार रेलमदद टीम के साथ बातचीत की। उन्होंने यात्रियों की संतुष्टि बढ़ाने में योगदान करते हुए त्वरित और प्रभावी शिकायत समाधान प्रदान करने में उनके प्रयासों पर संतोष व्यक्त किया।

अग्नि सुरक्षा और आपातकालीन तैयारी: मंत्री को डिपो के भीतर अग्निशामक यंत्रों के प्रबंधन के लिए डिज़ाइन किए गए एक नए विकसित ऐप के बारे में भी जानकारी दी गई, इस ऐप से सुनिश्चित होगा कि सभी अग्नि सुरक्षा उपकरणों का रखरखाव अच्छी तरह से किया गया है और आसानी से उपलब्ध हैं, जिससे यात्रियों की सुरक्षा भी सुनिश्चित हो सके। अश्विनी वैष्णव ने सुरक्षित, स्वच्छ और अधिक कुशल ट्रेन यात्रा सुनिश्चित करने के लिए अत्याधुनिक तकनीकों और नवाचारों को अपनाने में वाडी बंदर डिपो के प्रयासों की सराहना करते हुए निरीक्षण का समापन किया। यात्रा के दौरान सामने लाए गए सुधार यात्री सुरक्षा और आराम बढ़ाने के लिए भारतीय रेलवे की निरंतर प्रतिबद्धता को दर्शाते हैं।

स्वच्छता पखवाड़ा के प्रथम दिन रेल कर्मचारियों ने स्वच्छता शपथ ली

कोटा, 2 अक्टूबर। मंडल में सितम्बर माह में स्वच्छता ही सेवा अभियान चलाया गया जिसमें रेल कर्मचारियों ने सहभागिता निभाते हुए अभियान को सफल बनाने का कार्य किया। स्वच्छता के अगले चरण में मंडल में डीआरएम मनीष तिवारी के मार्गदर्शन में 01 अक्टूबर से 15 अक्टूबर तक स्वच्छता पखवाड़ा अभियान को संचालित किया जा रहा है। इस स्वच्छता अभियान के पहले दिन रेल कर्मचारियों ने कोटा सहित प्रमुख स्टेशनों एवं डिपों में स्वच्छता की शपथ ली। इस अभियान के तहत प्रतिदिन स्वच्छता गतिविधियों को संचालित किया जा रहा है। जिसमे स्वच्छता श्रमदान, स्टेशनों पर स्वच्छता अभियान, प्लास्टिक के थैले न उपयोग करने के प्रति जागरूकता, स्वच्छ रेलगाड़ी के तहत ट्रेनों में बेहतर साफ-सफाई की व्यवस्था, स्वच्छ पटरी, स्वच्छ परिसर, स्वच्छ आहार एवं स्वच्छ नीर इत्यादि गतिविधियों को संचालित किया जाएगा। इसके अतिरिक्त स्वच्छता के प्रति जागरूकता लाने के लिए स्टेशनों पर उद्घोषणा प्रणाली द्वारा भी स्वच्छता जागरूकता संबंधी संदेशों का प्रसारण कर स्वच्छता के प्रति जागरूक किया जाएगा।

OFFICE OF THE MUNICIPAL BOARD MERTA CITY (NAGAUR)

Sr.No. :- MBM/2024-25/2602 Date :- 27/09/2024

NOTICE INVITING BID

1 Bids for 3 Event Management Work (cost 18.40 lacs) are invited from interested bidders up-to 1.00 PM (time) 04.10.2024 (date). Other particulars of the bid may be visited on the procurement portal (**http://sppp.raj.nic.in**) of the state.

NIB No. : DLB2425A2937, UBN No.:DLB2425SSOB09199, 202 & 206

Raj.Samwad/C/24/5943 अधिशाषी अधिकारी

कार्यालय अधिशाषी अभियंता (आदर्श नगर जोन), नगर निगम, हैरिटेज जयपुर

(सेक्टर 4, माहेश्वरी पब्लिक स्कूल के पास, जवाहर नगर, जयपुर)

क्रमांक :- एफ-29/आ.न.जोन/ननिज-है./2024-25/290 दिनांक :- 27/09/2024

ई-निविदा सूचना संख्या 34 से 40/2024-25 तक

केन्द्र एवं राज्य सरकार के सभी विभागों में पंजीकृत "AA" "A" श्रेणी के ठेकेदारों एवं नगर निगम जयपुर के पंजीकृत निविदादाताओं से अधिशाषी अभियन्ता आदर्श नगर जोन से सम्बन्धित विकास कार्यो हेतु निविदायें आमंत्रित की जाती है। कार्यो की अनुमानित लागत, टेण्डर बेचे जाने तथा प्राप्त करने की तारीख, टेण्डर शर्त आदि सम्पूर्ण विवरण नगर निगम जयपुर हैरिटेज की वेबसाईट **www.jaipurmcheritage.org.com** व राजस्थान सरकार के पोर्टल **http;//sppp.raj.nic.in** तथा **www.eproc.rajasthan.gov.in** पर देखी व डाउनलोड की जाकर पोर्टल **www.eproc.rajasthan.gov.in** पर अपलोड की जा सकती है। जिसका यूबीएन नम्बर JMC2425WSOB00655, 00656, 00657, 00658, 00659, 00660, 00661 है।

नोट : अवकाश घोषित होने पर कार्यालय खुलने की आगामी तारीख मानी जाये।

अधिशाषी अभियन्ता (आदर्श नगर जोन)
नगर निगम जयपुर हैरिटेज

राज.संवाद/सी/24/5999

वृद्धजन दिवस पर जिला निर्वाचन अधिकारी पहुंचे शतायु मतदाता रसीद के घर

माला एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान कर मतदाता को किया सम्मानित

धौलपुर, 2 अक्टूबर। अन्तर्राराष्ट्रीय वृद्धजन दिवस के अवसर पर शहर के कच्ची कुंई इलाके के पचौरी पाड़ा निवासी शतायु मतदाता रसीद के घर पहुंच कर जैसे ही जिला निर्वाचन अधिकारी श्रीनिधि बी टी ने उन्हें खत प्रदान किए तो उनका चेहरा खुशी से खिल उठा। जिला निर्वाचन अधिकारी ने कहा कि लोकतंत्र को मजबूत बनाने में इन शतायु मतदाताओं की अहम भूमिका है, वे पूरी आबादी को मतदान के लिए प्रेरित करते हैं।

जिला निर्वाचन अधिकारी से भेंट कर उत्साहित मतदाता रसीद ने उनसे हाथ मिलाया। जिला निर्वाचन अधिकारी ने शतायु मतदाता रसीद को माला पहनाकर सम्मानित किया एवं मुख्य निर्वाचन अधिकारी का प्रशस्ति पत्र सुपुर्द किया। शतायु मतदाता के परिजनों ने बताया कि वे हर चुनाव में मतदान करते आए हैं और मतदान के प्रति उत्साह इतना है कि गत लोकसभा निर्वाचन में होम वोटिंग के बजाय बूथ पर जाकर मतदान किया।

इस दौरान जिला निर्वाचन अधिकारी ने कहा कि हमारे लिए गौरव की बात है जिले के शतायु मतदाता हमारे बीच मौजूद हैं। देश की निर्वाचन प्रक्रिया में उनके निरंतर योगदान के लिए हम इनके प्रति कृतज्ञ है।

उन्होंने कहा कि शतायु मतदाता युवा मतदाताओं के लिए प्रेरणा स्त्रोत है। उन्होंने कहा कि वरिष्ठ नागरिकों और दिव्यांग मतदाताओं की अधिकतम भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए भारत निर्वाचन आयोग ने उनकी सुविधा के लिए होम वोटिंग, व्हीलचेयर, रैंप, कतार रहित मतदान जैसी कई सुविधाओं की व्यवस्था की जाती है। इस अवसर पर उपखंड अधिकारी डॉ. साधना शर्मा, डीडी आईसीडीएस भूपेश गर्ग सहित अन्य अधिकारी मौजूद रहे।

70वां वन्यजीव सप्ताह, नन्हें मुन्नों को बताया वन्यजीवों व पर्यावरण का महत्व, विविध स्पर्धाएं आयोजित

उदयपुर, 2 अक्टूबर। 70वां वन्यजीव सप्ताह मंगलवार से शुरू हुआ। इसके तहत ग्रीन पीपल सोसायटी, अंकित पब्लिक सीनियर सैकेण्डरी स्कूल तथा आकाशदीप एकेडमी के संयुक्त तत्वावधान में प्रतापनगर स्थित अंकित पब्लिक स्कूल परिसर में विविध कार्यक्रम हुए।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सूचना एवं जनसंपर्क विभाग के संयुक्त निदेशक डॉ. कमलेश शर्मा ने एक कहानी के माध्यम से विद्यार्थियों को प्रकृति में विद्यमान जीव जंतु और प्राकृतिक दृश्यों को स्वयं के विजन के आधार पर देखने तथा समझने के लिए प्रेरित किया। ग्रीन पीपल सोसायटी के अध्यक्ष सेवानिवृत्ति आईएफएस राहुल भटनागर ने वन्य जीव सप्ताह मनाने के महत्व को विद्यार्थियों के साथ साझा किया। स्कूल के डायरेक्टर प्रदीप सुखवाल ने विद्यार्थियों को वन्य जीव संरक्षण के लिए प्रत्येक व्यक्ति के योगदान से परिचित कराया। ग्रीन पीपल सोसायटी के सदस्य वी एस राणा ने विद्यार्थियों को भोजन श्रृंखला का महत्व समझाते हुए बताया कि भोजन श्रृंखला के एक भी घटक के विलुप्त होने पर पूरी भोजन श्रृंखला पर असर पड़ता है। सेवानिवृत्त उप वन संरक्षक सोहेल मजबूर ने समग्र रूप से पर्यावरण तथा वन्य जीवों को संरक्षित रखने में विद्यार्थियों के योगदान की विस्तृत चर्चा की। प्रारंभ में स्थानीय विद्यालय के डायरेक्टर प्रदीप सुखवाल ने अतिथियों का स्वागत किया।इस अवसर पर सेवानिवृत्त उप वन संरक्षक प्रतापसिंह चुण्डावत, एपीआरओ विनय सोमपुरा सहित बड़ी संख्या में विद्यार्थी और अभिभावक मौजूद रहे।

विजेताओं को किया पुरस्कृत: कार्यक्रम के दौरान विद्यार्थियों के लिए चित्रकला, निबंध तथा सामान्य ज्ञान प्रतियोगिताएं हुई। इसके तहतचित्रकला में प्रथम स्थान जानवी सुयल तथा द्वितीय स्थान लक्ष्यराज सिंह देवड़ा ने प्राप्त किया। निबंध में प्रथम लिपिका शर्मा तथा द्वितीय हर्षिता सालवी रहे। सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता में चंदा रेबारी, गायत्री मेघवाल, काजल झाला, शैलेश खटीक तथा चंचल मेघवाल विजेता रहे। अतिथियों ने सभी विजेताओं को पुरस्कृत किया।

बच्चों में दिखा उत्साह: कार्यक्रम को लेकर बच्चों का उत्साह देखते ही बन रहा था। कई बच्चों विभिन्न वन्यजीवों यथा टाइगर, हिरण, हाथी, जिराफ, कंगारू आदि की वेशभूषा धारण कर कार्यक्रम में पहुंचे।

42वीं स्पार्टाथलॉन 2024: भारतीय धावक शक्ति सिंह हाड़ा ने की सफलापूर्वक पूरी

एथेंस/कोटा, 2 अक्टूबर। विश्व की सबसे कठिन अल्ट्रा मैराथनों में से एक, 42वीं स्पार्टाथलॉन मे कोटा के धावक शक्ति सिंह हाडा ने सफलतापूर्वक पूरा कर कोटा सहित देश का नाम स्वर्ण अक्षरो में शामिल करवाया है।

246 किलोमीटर (153 मील) लंबी दौड़ एथेंस से स्पार्टा में विश्व के 395 धावको ने हिस्सा लिया था और महज 193 धावक ही इस दौड़ को पूरी कर सके है। शक्ति सिंह ने इस दौड़ में कोटा सहित देश का नाम उंचा करने पर उनके परिजनों,दोस्तो और गुरू का आभार व्यक्त किया।उनका बिब नंबर 383 है।

35 घण्टो में किया सफर पूरा: हाड़ा ने बताया कि विश्व की सबसे कठिन अल्ट्रा मैराथनों में से एक, 42वीं स्पार्टाथलॉन 28 सितंबर को सुबह 07 बजे एथेंस से स्पार्टा, ग्रीस से प्रारंभ हुई। 246 किलोमीटर की दूरी 36 घंटे में पूरी करने की चुनौती थी परन्तु उन्होने पूरी दौड 35 घण्टो में पूरी कर ली। इस दौरान उन्हे कई कठिनाईयो का समाना करना पढा। शक्ति ने यह दौड़ 29 सितम्बर को सांय 07 बजे पूरी की।

चुनौतियां पूर्ण मार्ग: शक्ति सिंह ने बताया कि स्पार्टाथलॉन केवल एक लंबी दौड़ नहीं है, बल्कि यह धावकों की शारीरिक और मानसिक क्षमता की एक कठोर परीक्षा है। 246 किलोमीटर का मार्ग विभिन्न भौगोलिक परिस्थितियों से गुजरता पडा। जिसमें पहाड़ी इलाके, तेज धूप और रात की ठंड शामिल हैं।जहां दिन में तापमान लगभग 40 डिग्री तक पहुंच जाता था तो रात में 10 डिग्री की ठंड में उन्हे दौडना होता था। उन्होने कहा कि पहाड़ी दुगर्म रास्तो पर दौड पूरी करना और सही रास्ते का चयन करना अपने आप में एक चुनौती था।

OFFICE OF THE MUNICIPAL BOARD MERTA CITY (NAGAUR)

SR.NO. MBM/2024-25/2628 DATE : 30.09.2024

NOTICE INVITING BID

1 Bids for 2 Civil Work (cost 9.98 lacs) are invited from interested bidders up-to 1.00 PM (time) 07.10.2024 (date). Other particulars of the bid may be visited on the procurement portal (**http://sppp.raj.nic.in**) of the state.

NIB No. DLB2425A3021

UBN No. DLB2425WSOB09533 & 09534

अधिशाषी अधिकारी
नगरपालिका मेड़ता सिटी

Raj.Samwad/C/24/5956

राजस्थान सरकार

कार्यालय अधिशाषी अभियंता सार्वजनिक निर्माण विभाग खण्ड राजगढ, अलवर

E-Mail: eerajgarh.alw.pwd@rajasthan.gov.in

क्रमांकः 1985 दिनांकः 26.09.2024

निविदा सूचना संख्या 07/2024-25

राजस्थान के राज्यपाल महोदय की ओर से वर्ष 2023-24 के निम्नलिखित भवन/सड़क निर्माण कार्यों हेतु केन्द्रीय/राज्य सरकार व उनके अधिकृत संगठनों/केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग/डाक एवं दूर संचार विभाग/रेलवे इत्यादि में पंजीकृत संवेदकों जो कि राजस्थान सरकार के ए्ए एवं ए श्रेणी के संवेदकों के समकक्ष हो एवं उपयुक्त श्रेणी में सार्वजनिक निर्माण विभाग राजस्थान में पंजीकृत संवेदकों से निर्धारित प्रपत्र में ई-टेण्डरिंग प्रक्रिया हेतु ऑनलाइन निविदाएं आमंत्रित की जाती हैं।

मुख्यालय का नाम	कार्यालय अधिशाषी अभियंता सा.नि.वि. खण्ड राजगढ़ (अलवर) (ID : 5622)
निविदा में कार्यों की संख्या	**2 (58.52 लाख)**
कुल धरोहर राशि (रुपये में)	निविदादाता द्वारा दिनांक 31.12.2021 के पश्चात निविदा ऑनलाइन की जाती है तो निविदादाता द्वारा निविदा की अनुमानत लागत का 2 प्रतिशत राशि (सार्वजनिक निर्माण विभाग में पंजीकृत संवेदकों को नियमानुसार छूट राशि प्रदान की जावेगी।) लोक निर्माण कार्य जमा बजट मद 8443-00-108-00-00 के पक्ष में राजस्थान सरकार वित्त (जीएण्डटी) विभाग के आदेश क्रमांक एफ 6(5) वित्त/साविलेनि/ 2018 जयपुर दिनांक 27.04.2020 के अनुसार ऑनलाइन ई-ग्रास के द्वारा एकल चालान से संबंधित अधिशाषी अभियंता, सा.नि.वि. कार्यालय के पक्ष में जमा करनी होगी। निविदा शुल्क/आर.आई.एस.एल. फीस/लोक निर्माण कार्य जमा राशि केवल ऑनलाइन ई-ग्रास द्वारा एकल चालान से ही जमा की जायेगी। अलग-2 चालान द्वारा जमा राशि स्वीकार योग्य नहीं है। ई-ग्रास पर भुगतान होने उपरान्त चालान सी.आई.एन. के साथ जनरेट कर ईप्रोक साईट पर अपलोड करना होगा। कार्यालय में निविदा शुल्क राशि, लोक निर्माण कार्य जमा एवं आर.आई.एस.एल. फीस के लिए भौतिक रूप से कोई राशि/डी.डी. स्वीकार नहीं की जायेगी।
निविदा आवेदन अपलोड करने की तारीख	दिनांक 30.09.2024 प्रातः 09.30 बजे से दिनांक 10.10.2024 सायं 06.00 बजे तक
निविदा जमा करने की तारीख	दिनांक 30.09.2024 प्रातः 09.30 बजे से दिनांक 10.10.2024 सायं 06.00 बजे तक
निविदा की कुल लागत	58.52 लाख
निविदा खोलने की तारीख	14.10.2024 अपराह्न 3.00 बजे
प्रोसेसिंग शुल्क निविदा शुल्क एवं धरोहर राशि जमा कराने की प्रक्रिया (ऑनलाइन ई-ग्रास के माध्यम से)	वित्त विभाग द्वारा जारी परिपत्र प 6(5)/वित्त/सा.नि.वि./ 2018 दिनांक 27.04.2020 के ई-ग्रास पर ऑनलाइन के माध्यम से चालान द्वारा (परिपत्र संलग्न) 1. प्रोसेसिंग शुल्क- 8658-00-102-(16)-02 निर्माण विभाग 2. निविदा शुल्क- 0075-00-800-52-01 3. धरोहर राशि- 8443-00-108-00-00 दिनांक **10.10.2024** सायं 6.00 बजे तक
UBN No.:- 1. PWD2425WSOB06536, 2. PWD2425WSOB06537	

निविदा से संबंधित समस्त विवरण वेबसाइट **www.dipronline.org** व विभाग की वेबसाइट **www.eproc.rajasthan.gov.in** एवं **www.sppp.raj.nic.in** पर देखा जा सकता है।

(ओ.पी. किराड़) अधिशाषी अभियंता
सा.नि.वि. खण्ड राजगढ (अलवर)
Email id- pwd_raj@rediffmail.com
Mob.: 9414014968
Phone No.: 01464-294809

डीआईपीआर/सी/9271/2024

आज का दिन

आश्विन कृष्ण पक्ष अमावस्या, विक्रम सं. 2081, शक संवत् 1946, हिजरी 1446, तद्नुसार अंग्रेजी दिनांक 2 अक्टूबर, सन् 2024 ईस्वी। वार- बुधवार, सूर्य-दक्षिणायण, ऋतु-वर्षा

सम्पादकीय

डॉक्टरों की मुश्किल, इच्छा मृत्यु पर गाइडलाइन का ड्राफ्ट

केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय की ओर से इच्छा मृत्यु को लेकर जारी किए गए गाइडलाइंस के मसौदे ने इस पर जारी बहस को तेज कर दिया है। इंडियन मेडिकल असोसिएशन ने भी यह कहते हुए आपत्ति की है कि लाइफ सपोर्ट सिस्टम हटाए जाने का फैसला करने की जिम्मेदारी डॉक्टरों पर डालना ठीक नहीं है। इससे उन पर दबाव बढ़ जाएगा। इच्छा मृत्यु के भावनात्मक, कानूनी और चिकित्सकीय पहलू इससे जुड़े किसी भी मामले में फैसला लेना कठिन बना देते हैं। लेकिन फिर भी फैसला तो करना ही होता है। सुप्रीम कोर्ट भी 2018 में निष्क्रिय इच्छा मृत्यु की कुछ शर्तों के साथ इजाजत दे चुका है। ऐसे में फैसले की प्रक्रिया जितनी स्पष्ट और परिभाषित होगी, फैसला लेना और उसे लागू करना उतना आसान होगा। सरकार की ओर से गाइडलाइंस जारी करने की पहल के पीछे यही सोच है।

गाइडलाइंस के मसौदे को देखें तो इसमें यह प्रयास स्पष्ट नजर आता है कि फैसला कई स्तरों पर परखे जाने के बाद ही अमल में आए। इसके मुताबिक, लाइफ सपोर्ट सिस्टम की जरूरत और उसकी उपयोगिता पर फैसला करने वाले प्राइमरी मेडिकल बोर्ड में प्राइमरी फिजीशन के अलावा कम से कम दो ऐसे एक्सपर्ट होंगे, जिनके पास कम से कम 5 साल का अनुभव होगा। इसके बाद सेकंडरी मेडिकल बोर्ड इस फैसले की समीक्षा करेगा, जिसमें सीएमओ द्वारा मनोनीत एक रजिस्टर्ड मेडिकल प्रैक्टिशनर के अलावा दो एक्सपर्ट होंगे। इसके साथ ही पेशंट के परिवार की सहमति भी जरूरी होगी। केस की बारीकी के आधार पर निष्कर्ष तो आज भी डॉक्टरों का ही होता है, लेकिन वे पेशंट या परिजनों को पूरी स्थिति समझाते हैं और फिर पेशंट या परिवार फैसला करता है। फैसला करने से डॉक्टरों की हिचक समझी जा सकती है। दरअसल, यह प्रफेशन ही मरीजों को बचाने का है। डॉक्टर आखिरी पल तक मरीज को बचाने का प्रयास करते हैं, भले ही कुछ मामलों में यह कोशिश नाकाम हो जाए। ऐसे में इलाज के दौरान किसी खास बिंदु पर उन प्रयासों से हाथ खींचने का फैसला स्वाभाविक ही कई डॉक्टरों को अपने पेशे से अन्याय लग सकता है। मगर यहां कई पहलू हैं। सुप्रीम कोर्ट कह चुका है कि जीवन की गरिमा के साथ ही मौत की गरिमा का सवाल भी जुड़ा है। फिर संसाधनों के सर्वश्रेष्ठ इस्तेमाल की भी बात है। अगर किसी मरीज के ठीक होने की संभावना नहीं रह गई है तो उन मेडिकल संसाधनों का उपयोग ऐसे मरीज को बचाने में करना बेहतर है, जिसे बचाया जा सकता हो। बहरहाल, सरकार ने गाइडलाइंस के इस मसौदे पर 20 अक्टूबर तक सुझाव मांगे हैं। उम्मीद की जाए कि आने वाले तमाम सुझावों की रोशनी में बनी गाइडलाइन ज्यादा उपयुक्त और ज्यादा व्यावहारिक होगी।

विदेशी अखबारों से

श्रीलंका नेवी ने अवैध रूप से मछली पकड़ने के आरोप में 17 भारतीय मछुआरों को गिरफ्तार किया

श्रीलंका की नौसेना ने अपने जलक्षेत्र में अवैध तरीके से मछली पकड़ने के आरोप में 17 भारतीय मछुआरों को गिरफ्तार कर उनकी नौकाएं जब्त कर लीं। एक आधिकारिक बयान में यह जानकारी देते हुए बताया गया है कि इन 17 मछुआरों को मिला कर इस साल द्वीप राष्ट्र में ऐसी घटनाओं में पकड़े गए भारतीय नागरिकों की संख्या 413 हो गई है। श्रीलंकाई नौसेना ने एक प्रेस विज्ञप्ति में बताया कि मछुआरों को गिरफ्तार किया गया और रविवार को मन्नार के उत्तर में उनकी दो नौकाएं जब्त की गईं। नौसेना ने भारतीय मछुआरों को पकड़ने के लिए 'विशेष अभियान' चलाया। इसमें कहा गया है कि पकड़े गए 17 मछुआरों को तलाईमन्नार पियर ले जाया गया और आगे की कार्रवाई के लिए उन्हें मन्नार मत्स्य निरीक्षक को सौंप दिया जाएगा। बयान में कहा गया है कि श्रीलंकाई नौसेना ने '2024 में अब तक द्वीप के जलक्षेत्र में मछली पकड़ने वाली 55 भारतीय नौकाओं को और 413 भारतीय मछुआरों को पकड़ा है और उन्हें कानूनी कार्रवाई के लिए अधिकारियों को सौंप दिया है।' मछुआरों का मुद्दा भारत और श्रीलंका के बीच संबंधों में एक विवादास्पद मुद्दा है। श्रीलंकाई जलक्षेत्र में कथित रूप से अवैध तरीके से प्रवेश करने के मामलों में श्रीलंकाई नौसेना के कर्मी पाक जलडमरूमध्य में भारतीय मछुआरों पर गोलीबारी करते हैं और उनकी नौकाओं को जब्त कर लेते हैं। पाक जलडमरूमध्य, तमिलनाडु को श्रीलंका से अलग करने वाली पानी की एक संकरी पट्टी है, जो दोनों देशों के मछुआरों के लिए मछली पकड़ने का एक समृद्ध क्षेत्र है। दोनों देशों के मछुआरों को अनजाने में एक-दूसरे के जलक्षेत्र में प्रवेश करने के लिए अक्सर गिरफ्तार किया जाता है।

प्रेरक प्रसंग

पवित्र मन

जीवन में सच्चा सुख कैसे मिलता है, इस संबंध में एक लोक कथा प्रचलित है। कथा के अनुसार पुराने समय में एक संत गांव के लोगों को प्रवचन देते थे और जीवन यापन के लिए घर-घर जाकर भिक्षा मांगते थे। एक दिन गांव की महिला ने संत के लिए खाना बनाया, जब संत उसके घर आए तो खाना देते हुए उसने पूछा कि महाराज जीवन में सच्चा सुख और आनंद कैसे मिलता है? संत ने कहा कि इसका जवाब मैं कल दूंगा। अगले दिन महिला ने संत के लिए स्वादिष्ट खीर बनाई। वह संत से सुख और आनंद के बारे उपदेश सुनना चाहती थी। संत आए और उन्होंने भिक्षा के लिए महिला को आवाज लगाई। महिला खीर लेकर बाहर आई। संत ने खीर लेने के लिए अपना कमंडल आगे बढ़ा दिया। महिला खीर डालने वाली थी, तभी उसकी नजर कमंडल के अंदर गंदगी पर पड़ी। उसने बोला महाराज आपका कमंडल तो गंदा है, इसमें कचरा है। संत ने कहा कि हां ये गंदा तो है, लेकिन आप खीर इसी में डाल दो। महिला ने कहा कि नहीं महाराज, ऐसे तो खीर खराब हो जाएगी। आप कमंडल दीजिए, मैं इसे धोकर साफ कर देती हूं। संत ने पूछा कि मतलब जब कमंडल साफ होगा, तभी आप इसमें खीर देंगी? महिला ने जवाब दिया - जी महाराज इसे साफ करने के बाद ही मैं इसमें खीर दूंगी। संत ने कहा कि ठीक इसी तरह जब तक हमारे मन में काम, क्रोध, लोभ, मोह, बुरे विचारों की गंदगी है, उसमें उपदेश कैसे डाल सकते हैं। अगर ऐसे मन में उपदेश डालेंगे तो अपना असर नहीं दिखा पाएंगे। इसीलिए उपदेश सुनने से पहले हमें हमारे मन को शांत और पवित्र करना चाहिए। तभी हम ज्ञान की बातें ग्रहण कर सकते हैं। पवित्र मन वाले ही सच्चा सुख और आनंद प्राप्त कर पाते हैं।

स्वच्छ भारत अभियान का एक दशक पूरा

उमेश चतुर्वेदी

भारतीय राजनीति में तब तक गांधी का सितारा बहुत नहीं चमक पाया था। लेकिन उन्होंने राजनीति की दुनिया में सफाई के विचार का बीज रोप दिया। कोलकाता अधिवेशन में दिखी गंदगी का ही असर कह सकते हैं कि बाद के दिनों में उन्होंने विचार दिया, स्वतंत्रता से ज्यादा जरूरी स्वच्छता है। गांधी के रचनात्मक शिष्यों यथा बिनोबा, ठक्कर बापा आदि ने स्वच्छता और सफाई के इस गुर को बहुत आगे बढ़ाया। लेकिन जिसे मुख्यधारा की राजनीति कहते हैं, उसने स्वच्छता के गांधीवादी दर्शन को उसी रूप में बाद में शायद ही स्वीकार किया।

साल 1901 के कोलकाता के कांग्रेस अधिवेशन में दक्षिण अफ्रीका से हिस्सा लेने पहुंचे गांधी को अजीब अनुभव हुआ। प्रतिनिधियों को ठहरने वाले शिविर में सफाई की हालत बेहद खराब थी। कई प्रतिनिधि ऐसे थे, जिन्होंने उन कमरों के बाहर बने बरामदे का ही शौचालय के रूप में इस्तेमाल कर दिया। दुर्गंध और गंदगी के बावजूद दूसरे प्रतिनिधियों को इस पर कोई ऐतराज नहीं था। लेकिन गांधी जी से बर्दाश्त नहीं हुआ। तब तक वे पश्चिमी वेशभूषा में रहते थे। अधिवेशन में सहयोग के लिए तैनात स्वयंसेवकों से गांधी जी ने स्वच्छता की बाबत बात की, तो उन्होंने टका-सा जवाब दे दिया था, यह हमारा काम नहीं है, यह सफाईकर्मी का काम है। गांधी जी से बर्दाश्त नहीं हुआ। उन्होंने अपने कपड़े उतारे, झाड़ू मंगवाई और वहां मौजूद गंदगी साफ को साफ करने में जुट गए। सफाई के बाद वे फिर से कोट-पैंट में आ गए। भारतीय राजनीति में तब तक गांधी का सितारा बहुत नहीं चमक पाया था। लेकिन उन्होंने राजनीति की दुनिया में सफाई के विचार का बीज रोप दिया। कोलकाता अधिवेशन में दिखी गंदगी का ही असर कह सकते हैं कि बाद के दिनों में उन्होंने विचार दिया, स्वतंत्रता से ज्यादा जरूरी स्वच्छता है। गांधी के रचनात्मक शिष्यों यथा बिनोबा, ठक्कर बापा आदि ने स्वच्छता और सफाई के इस गुर को बहुत आगे बढ़ाया। लेकिन जिसे मुख्यधारा की राजनीति कहते हैं, उसने स्वच्छता के गांधीवादी दर्शन को उसी रूप में बाद में शायद ही स्वीकार किया। इन संदर्भों में देखें तो प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पहले राजनेता हैं, जिन्होंने अहम जिम्मेदारी संभालते हुए स्वच्छता और शौचालय क्रांति की बात की। शायद ही किसी ने सोचा होगा कि कोई प्रधानमंत्री लालकिले की प्राचीर से शौचालय क्रांति की बात करेगा। लेकिन मोदी ने ना सिर्फ शौचालय क्रांति की, बल्कि इसके डेढ़ महीने बाद गांधी जी की जयंती पर 2 अक्टूबर 2014 को खुद ही फावड़ा और झाड़ू उठा लिया। इसके साथ ही देश के सामने एक नया अभियान आया, 'स्वच्छ भारत अभियान'।

स्वच्छ भारत अभियान के एक दशक पूरे हो गए हैं। इस दौरान स्वच्छता के मोर्चे पर देश ने बहुत कुछ हासिल किया है। ऐसा नहीं कि भारत में स्वच्छता की अवधारणा नहीं रही है। भारत के प्राचीन ग्रंथ,सामाजिक व्यवस्था और मंदिर संस्कृति की परंपराएं स्वच्छता की भारतीय धारा की गवाह हैं। यह कह सकते हैं कि बाद के दिनों में भारतीय स्वच्छता सिर्फ व्यक्तिगत स्वच्छता तक सीमित होकर रह गई थी। भारतीयों के एक बड़े वर्ग की सोच सफाई को लेकर ज्यादा निजी थी। शायद ही कोई भारतीय घर होगा, जहां रोजाना झाड़ू ना लगती हो। स्वच्छ भारत अभियान के पहले होता यह था कि झाड़ू लगती तो थी,लेकिन कूड़ा गली में या सड़क पर या सार्वजनिक जगहों पर फेंक दिया जाता था। प्रधानमंत्री मोदी के स्वच्छ भारत अभियान के शुरू करने के बाद इस सोच में बदलाव आया है। वैसे मानव स्वभाव कोई बिजली का बल्ब नहीं है कि बटन दबाया और जल या बुझ जाएगा। उसमें बदलाव आने में देर होती है। बदलाव को वह जल्दी से स्वीकार नहीं कर पाता। इसीलिए स्वच्छता के मोर्चे पर हम देखते हैं कि सौ प्रतिशत सफलता हासिल नहीं की जा सकी है। रेलवे लाइनों के किनारे पड़े कूड़े के अंबार अब भी बने हुए हैं। लेकिन स्वच्छ भारत अभियान के दस वर्षों में यह सोच जरूर विकसित हुई है कि निजी ही नहीं, सार्वजनिक स्वच्छता जरूरी है। नई पीढ़ी के बच्चे तो अब बड़े-बड़ों को सार्वजनिक गंदगी के लिए टोक देते हैं। स्वच्छता को लेकर महात्मा गांधी ने कहा था, मैं किसी को भी अपने दिमाग़ से गंदे पैर लेकर नहीं गुज़रने दूंगा। गांधी के इस दर्शन पर भी चलते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने स्वच्छ भारत अभियान शुरू करते हुए कहा था, न मैं गंदगी करूंगा, न मैं गंदगी करने दूंगा। सार्वजनिक समारोहों में उनकी यह सोच अक्सर परिलक्षित होती है। किताब आदि के विमोचन के दौरान रैपर आदि को वे मोड़कर अपनी जेब में रख लेते हैं। इससे देश के अधिसंख्य लोगों ने प्रेरणा ली है और उस पर अमल भी कर रहे हैं।

स्वच्छता अभियान की सफलता ही कहेंगे कि देश के बारह करोड़ घरों में शौचालय बन चुके हैं। स्वच्छ भारत अभियान की एक दशक की यात्रा में न केवल शौचालय कवरेज में भारी वृद्धि हुई है, बल्कि खुले में शौच की कुप्रथा तकरीबन खत्म हो गयी है। स्वच्छता का मतलब सिर्फ सफाई ही नहीं, खाने-पीने की चीजें भी स्वच्छ होनी चाहिए। इस लिहाज से हर घर नल जल योजना को भी स्वच्छ भारत अभियान से जोड़ सकते हैं। जिसके तहत पाइप से स्वच्छ पानी की आपूर्ति की कवरेज दस सालों में 16 प्रतिशत से बढ़कर 78 प्रतिशत हो गई है। देश में धुएं के प्रदूषण से महिलाओं को रोजाना दो-चार होना पड़ता था। उज्ज्वला योजना के जरिए इस दिशा में स्वच्छ भारत अभियान को सफल कहा जा सकता है। इस योजना के तहत 11 करोड़ घरों में रसोई गैस का कनेक्शन पहुंच चुका है। स्वच्छ भारत अभियान से स्वास्थ्य के मोर्चे पर बड़ा बदलाव आया है। हाल ही में विश्व प्रसिद्ध पत्रिका नेचर में स्वच्छ भारत अभियान के बाद आए भारत में बदलावों के शोध पर आधारित एक लेख छपा था। इससे पता चलता है कि स्वच्छ भारत अभियान गेम चेंजर बन गया है। नेचर पत्रिका में प्रकाशित आलेख कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के अंतरराष्ट्रीय खाद्य नीति अनुसंधान संस्थान और ओहियो स्टेट यूनिवर्सिटी के एक शोध पर आधारित है। जिससे पता चलता है कि खुले में शौच की कुरीति खत्म होने के बाद और शौचालय क्रांति से देश में शिशु मृत्यु दर में कमी आई है। शोध पत्र में कहा गया है कि खुले में शौच की कुरीति के खत्म होने से हर वर्ष करीब 60 हजार से 70 हजार शिशुओं की मृत्यु को रोकने में सफलता मिली है। शोध पत्र के अनुसार, वर्ष 2000 से 2015 की तुलना में वर्ष 2015 और 2020 के बीच शिशु मृत्यु दर एक तिहाई रह गई...इसके आंकड़ों के अनुसार, वर्ष 2000 और 2015 के बीच शिशु मृत्यु दर में जहां तीन प्रतिशत वार्षिक की गिरावट रही, वहीं बाद में यह गिरावट आठ से नौ प्रतिशत ज्यादा हुई। इसी तरह 2000 और 2015 के बीच की तुलना में बाद के वर्षों में शिशु मृत्यु दर में 10 प्रतिशत तक की गिरावट आई है। इस लेख मुताबिक, साल 2014 में शिशु मृत्यु दर जहां 39 अंक थी, वह साल 2020 में घटकर 28 रह गई।

स्वच्छता अभियान की सफलता की कहानी विश्व स्वास्थ्य संगठन की एक रिपोर्ट भी करती है। इस रिपोर्ट के अनुसार, स्वच्छता अभियान के चलते 2014 से 2019 के बीच डायरिया से होने वाली मौत के करीब तीन लाख मामले कम हुए, जो इसके पहले की अवधि में ज्यादा थे। इसी रिपोर्ट के मुताबिक, खुले में शौच की कुरीति खत्म होने से हर परिवार के स्वास्थ्य पर होने वाले करीब 50 हजार रूपए सालाना के खर्च की बचत हुई है। इसके साथ ही भूजल की गुणवत्ता भी पहले की तुलना में बेहतर हुई है। शौचालय क्रांति के चलते अब करीब 93 प्रतिशत महिलाएं अपने घरों में ज्यादा सुरक्षित महसूस करती हैं। क्योंकि अब उन्होंने शौच के लिए बाहर नहीं जाना पड़ा। स्वच्छ भारत अभियान साल 2020 से संपूर्ण स्वच्छता अभियान में तब्दील किया जा चुका है। जिसके लिए एक लाख चालीस हजार करोड़ की रकम आवंटित की गई है। जाहिर है कि स्वच्छता के मोर्चे पर देश ने बहुत कुछ हासिल किया है। लेकिन यह कहना अभी जल्दीबाजी होगी कि देश ने इस दिशा में सबकुछ हासिल कर ही लिया है। लेकिन अब भी देश के कुछ इलाके ऐसे हैं, जहां का मानस सार्वजनिक स्वच्छता को लेकर पूरी तरह प्रतिबद्ध और सचेत नहीं हो पाया है।

भारत-चीन विवादः एलएसी पर आगे क्या होगा?

पूनम पाण्डे

ईस्टर्न लद्दाख में जब तनाव शुरू हुआ तो चीनी सैनिक चार जगहों पर आगे आ गए थे, जिसके बाद भारतीय सेना ने भी तैनाती बढ़ाई। दोनों देशों के बीच कोर कमांडर स्तर की बातचीत के बाद उन चार जगहों से दोनों देशों के सैनिक पीछे हुए। सबसे पहले पैंगोग एरिया यानी फिंगर एरिया और गलवान के पीपी-14 से डिसइंगेजमेंट हुआ। फिर गोगरा में पीपी-17 से सैनिक हटे और फिर हॉट स्प्रिंग एरिया में पीपी-14 से। पीपी यानी पेट्रोलिंग पॉइंट। यहां अभी बफर जोन बने हैं। उनमें न तो भारत के सैनिक पेट्रोलिंग कर रहे हैं, ना ही चीन के। यह डिसइंगेजमेंट 2022 के आखिर तक हो गया था।

भारत और चीन के बीच ईस्टर्न लद्दाख में लाइन ऑफ एक्चुअल (एलएसी) कंट्रोल पर करीब साढ़े चार साल से गतिरोध बना हुआ है। गलवान में हुई हिंसक झड़प के बाद भारतीय सेना ने जब कैलाश रेंज की चोटियों पर कब्जा किया तो चीन बातचीत की टेबल पर आया। चार पॉइंट्स पर डिसइंगेजमेंट हो गया है और दो पॉइंट्स पर डिसइंगेजमेंट को लेकर बातचीत चल रही है। इसके बारे में हाल ही में न्यूयॉर्क में भारत के विदेश मंत्री जयशंकर ने भी कहा कि डिसइंगेजमेंट (पीछे हटने की) का 75 प्रतिशत मामला हल हो गया है। ईस्टर्न लद्दाख में जब तनाव शुरू हुआ तो चीनी सैनिक चार जगहों पर आगे आ गए थे, जिसके बाद भारतीय सेना ने भी तैनाती बढ़ाई। दोनों देशों के बीच कोर कमांडर स्तर की बातचीत के बाद उन चार जगहों से दोनों देशों के सैनिक पीछे हुए। सबसे पहले पैंगोग एरिया यानी फिंगर एरिया और गलवान के पीपी-14 से डिसइंगेजमेंट हुआ। फिर गोगरा में पीपी-17 से सैनिक हटे और फिर हॉट स्प्रिंग एरिया में पीपी-14 से। पीपी यानी पेट्रोलिंग पॉइंट। यहां अभी बफर जोन बने हैं। उनमें न तो भारत के सैनिक पेट्रोलिंग कर रहे हैं, ना ही चीन के। यह डिसइंगेजमेंट 2022 के आखिर तक हो गया था। लेकिन अभी भी डेमचॉक और डेपसांग के मसले हल करने बाकी हैं।

डेपसांग में जिन जगहों पर भारतीय सैनिक पेट्रोलिंग के लिए जाते थे, उनमें से कई जगहों पर चीनी सैनिक आकर बैठ गए, जिस वजह से वहां भारतीय सेना की पेट्रोलिंग रुक गई। इसके जवाब में भारतीय सेना ने भी उन जगहों पर तैनाती कर दी, जिससे कुछ पॉइंट्स पर चीन के सैनिकों की पेट्रोलिंग ब्लॉक हुई है। यहां बातचीत इस पर चल रही है कि डिसइंगेजमेंट होने के बाद पेट्रोलिंग होगी या नहीं। मिलिट्री सूत्रों का कहना है कि भारत चाहता है, जब यहां डिसइंगेजमेंट हो जाए उसके बाद पहले की तरह ही पेट्रोलिंग हो। दोनों देश अपने अपने क्लेम के हिसाब से पेट्रोलिंग करें, जैसे पहले करते थे। लेकिन चीन का कहना है कि डिसइंगेजमेंट हो और उसके बाद यहां पर नो पेट्रोलिंग जोन बने यानी कोई भी यहां पर पेट्रोलिंग ना करे।

डेमचॉक में मसला यह है कि यहां चीन ने उन जगहों पर नए टेंट लगाए, जहां पहले उसके टेंट नहीं थे। चीन कहता है कि ये उसके चरवाहों के टेंट हैं, लेकिन भारत का कहना है कि ये चीनी सैनिक हैं जो सिविल ड्रेस में वहां हैं। अप्रैल 2020 से पहले जिन एरिया में टेंट नहीं थे, ये उन एरिया में लगे हैं। उसके जवाब में भारतीय सेना ने भी वहां अपने टेंट लगाए और अब लगभग दोनों आमने-सामने हैं। यहां इस पर बातचीत चल रही है कि दोनों पहले वाली स्थिति में पीछे चले जाएं और नए टेंट को हटा लें। गलवान हिंसा के बाद कुछ वक्त तक भारत और चीन की सेना के बीच एलएसी पर होने वाली सेरिमोनियल बॉर्डर पर्सनेल मीटिंग (बीपीएम) रुक गई थी, लेकिन अब सेरिमोनियल मीटिंग भी हो रही हैं। दोनों देशों के बीच कोई भी मुद्दा हो तो उस पर बात करने के लिए कोई भी लोकल कमांडर बीपीएम बुला सकते हैं। इसके अलावा साल में चार बार सेरिमोनियल बीपीएम होती हैं। दो बार इंडियन साइड और दो बार चीन की तरफ। 1 मई (मजदूर दिवस) और 1 अक्टबूर (चीन का नैशनल डे) को चीन की आर्मी इंडियन आर्मी को होस्ट करती है। 15 अगस्त और 26 जनवरी को इंडियन आर्मी होस्ट बनती है और चीनी आर्मी को इनवाइट करती है। पहले इन सेरिमोनियल बीपीएम में गिफ्ट एक्सचेंज होने के साथ ही लंच और रंगारंग कार्यक्रम होते थे लेकिन अब सिर्फ गिफ्ट एक्सचेंज हो रहा है। चीन चाहता है कि सेरिमोनियल मीटिंग को पहले की तरह ही किया जाए यानी रंगारंग कार्यक्रम भी हों। लेकिन भारत की तरफ से कहा गया है कि जब सब नॉर्मल नहीं है तो फिर रंगारंग कार्यक्रम कैसे हो सकते हैं। पिछले कुछ वक्त में चीन की तरफ से जिस तरह के बयान आ रहे हैं, उससे यह अनुमान लगाया जा रहा है कि चीन का रुख नरम हो रहा है। लेकिन मिलिट्री सर्किल में यह साफ है कि ग्राउंड पर चीन की तरफ से रुख में कोई बदलाव नहीं दिख रहा है, न तो एक्स्ट्रा फ्रेंडली, न ही एक्स्ट्रा अग्रेसिव।

अभी दोनों देशों के बीच जो बातचीत चल रही है, वह डिसइंगेजमेंट को लेकर है। दोनों तरफ से सैनिक पीछे भी चले जाएंगे, तब भी अप्रैल 2020 से पहले वाली स्थिति आने में लंबा वक्त लगेगा क्योंकि डिसइंगेजमेंट सिर्फ शुरुआत है और इसके बाद डिएस्केलेशन और फिर डी-इंडक्शन पर बात होगी। दोनों देशों के सैनिक एकदम आमने-सामने से हटकर पीछे जाते हैं तो इसे डिसइंगेजमेंट कहते हैं। ऐसी स्थिति में अचानक झड़प की नौबत नहीं आती। इसी के बाद की प्रक्रिया है डीएस्केलेशन। जिसका मतलब है कि दोनों देशों के सैनिक और सैन्य साजोसामान जो इस तरह तैनात किया गया है कि जरूरत पड़ने पर कभी भी एक दूसरे पर हमला हो सकता है, उसे सामान्य स्थिति में लाना।

डिसइंगेजमेंट और डीएस्केलेशन के बाद की प्रकिया होगी डी-इंडक्शन। इसका मतलब है कि जो भारी तादाद में सैनिक और सैन्य साजोसामान वहां तैनात है, उसे वापस अपनी पुरानी पोजिशन में भेजना। अभी वहां दोनों तरफ से 50-50 हजार से ज्यादा सैनिक तैनात हैं। एलएसी पर आगे क्या होगा और क्या उम्मीद की जा सकती है? सेना के स्तर पर यह तय हो सकता है कि ग्राउंड में सैनिक कहां पर रहेंगे। लेकिन दोनों देशों की सेना को वापस पुरानी स्थिति में जाना है तो इसके लिए राजनीतिक स्तर पर ही निर्देश आएगा। इसके लिए बातचीत चल भी रही है।

हास्य-व्यंग्य

तीन फुकरे उर्फ पाकिस्तानी भिखारी...

आलोक पुराणिक

तीन फुकरे(फुकरे मतलब कंगाल टाइप) फिल्म का प्रमोशन चल रहा है, और साथ में फोटू आ रही है टीवी पर पाकिस्तानी प्रधानमंत्री, पाकिस्तानी विदेशमंत्री और पाकिस्तानी विदेश सचिव की, संयोग भी कैसे कैसे हो जाते हैं। पाकिस्तानी हुक्मरान इधर दुनिया भर के भीख टूर पर निकले हैं।

अरब देशों ने पाकिस्तान सरकार से गुहार लगायी है कि अरब देशों में नब्बे प्रतिशत भिखारी पाकिस्तान से हैं। पाकिस्तानी भिखारी इंटरनेशनल हो गये हैं, सऊदी अरब और संयुक्त अरब अमीरात में भीख मांगने जाते हैं। पाकिस्तानी भिखारी यह कहते हैं कि हमारे हुक्मरान अमेरिका चीन जाते हैं भीख मांगने, हम इधर अरब देशों में आ जाते हैं, गलत क्या है। पाकिस्तान का जो हाल हो गया है, उसमें सिर्फ दो किस्म के लोग ही पाकिस्तान से एक्सपोर्ट हो रहे हैं-एक तो आतंकी और दूसरे भिखारी। दुनिया के कई देशों को शुक्रगुजार होना चाहिए कि पाकिस्तान से सिर्फ भिखारी आ रहे हैं,वरना आने को तो आतंकी भी आ सकते हैं।

मुझे टेंशन है कि भारत सरकार के प्रतिनिधि अगर शिकायत करें पाक सरकार के प्रतिनिधि से कि आपके यहां से आतंकी आ रहे हैं, तो पाकिस्तान वाले कहीं यह प्रस्ताव ना दे दें, तो आप इज्जत से हमारे यहां के भिखारियों को इंडिया आकर भीख मांगने दीजिये, आतंकी नहीं भेजेंगे। कोई ना कोई तो आयेगा ही, आतंकी नहीं चाहिए तो भिखारी लो। एक पढ़े लिखे भिखारी ने कहा कि अरब का आतंकी बिन लादेन बहुत लंबे वक्त तक पाकिस्तान में आराम से रहा, पाकिस्तानी हुक्मरान तो कुछ ना बोले, उसके खाने पीने का सही इंतजाम रखा। अब कुछ पाकिस्तानी भिखारी अगर अरब देशों में आकर रह रहे हैं, तो हल्ला काहे का। या तो पाकिस्तानी भिखारी लो या पाकिस्तानी आतंकी।

एक पाकिस्तानी भिखारी तो हवाई जहाज में खड़े होकर भीख मांगने लग गया। इससे साफ होता है कि विश्व में सर्वाधिक उन्नत जीवन स्तर पाकिस्तानी भिखारियों का है, जो हवाई जहाज में टहलते हुए पाये जाते हैं। 2 अक्तूबर को हमारे देश की कई लेडीज उस दिन के तौर पर जानती हैं, जब खादी सिल्क की साड़ियों पर तीस परसेंट का डिस्काऊंट मिलना शुरु होता है। महात्मा गांधी अपने सत्य के लिए नहीं अब डिस्काऊंट के लिए जाने जाने लगे हैं, वक्त बहुत बदल गया है। खादी की दुकानों पर जेनरेशन चेंज साफ दिखता है, अब जो पीढ़ी खादी की दुकानों पर बतौर मालिक बैठी है, वह जीन्स पहनकर बैठती है बिंदास, काहे को चक्कर में पड़ना खादी पहनने के। महात्माजी ने कहा था कि खादी बहुत अच्छा कपड़ा है, तो यह बात औरों को बताकर बेच रहे हैं पर खुद जीन्स पहन रहे हैं। जीन्स पहने बैठे नौजवान के पापा खादी की शर्म रखते थे, जैकेट कुरता वुरता खादी का डाल लेते थे, जैसे भी थे आधे अधूरे खादीवादी थे।

बेंगलुरू एफसी के जीत के रथ को थामने उतरेगी मुम्बई सिटी एफसी

मुम्बई, एजेंसी। मुम्बई सिटी एफसी बुधवार, 2 अक्टूबर को शाम 7:30 बजे (भारतीय समयानुसार) इंडियन सुपर लीग (आईएसएल) 2024-25 के अपने पहले घरेलू मैच में मुम्बई फुटबॉल एरिना में फॉर्म चल रही बेंगलुरू एफसी की मेजबानी करेगी।

ब्लूज अब तक अपने तीनों मैचों में अपराजित रहकर पूरे नौ अंकों के साथ तालिका में शीर्ष पर है। वहीं, आइलैंडर्स को अभी भी सीजन की अपनी पहली जीत की तलाश हैं, उन्होंने अपने दो मैचों में एक ड्रा खेला है और एक हारा है।

आईलैंडर्स घरेलू मैदान पर खूब करते हैं गोलः आइलैंडर्स अक्सर अपने घर में एक ताकतवर टीम रही हैं, उन्होंने अपने पिछले आठ मैचों में से प्रत्येक में गोल किया है। अगर वे ब्लूज के खिलाफ गोल करते हैं, तो लीग में अपने सबसे सिलसिले (अक्टूबर 2022-फरवरी 2023 तक नौ मैच) की बराबरी कर लेंगे। उन्होंने बेंगलुरू एफसी के खिलाफ अपने पिछले तीन मुकाबले जीते हैं।

बेंगलुरू एफसी - मजबूत शुरुआतः बेंगलुरू एफसी ने 2024 में आईएसएल में अपने 33.33त्न गोल मैचों के शुरुआती 15 मिनट में दागे हैं। लिहाजा, आइलैंडर्स की बैक-लाइन को किक-ऑफ से ही चौकन्ना रहना होगा।

'सेट-पीस पर गोल खाना अस्वीकार्य है': मुम्बई सिटी एफसी

के चेक हेड कोच पीटर क्रेटकी अपनी टीम की बैक-लाइन को सुधारने की दिशा में काम कर रहे हैं, ताकि सेट-पीस पर गोल खाने से बचा जा सके। उन्होंने ब्लूज के खिलाफ माकूल परिणाम के लिए इस समस्या का हल करने पर जोर दिया है।

क्रेटकी ने कहा, 'हमें इस मामले में बेहतर करने की जरूरत है, क्योंकि यह हमें नुकसान पहुंचा रहा है। हमें इस लीकेज को जल्द से जल्द रोकना होगा क्योंकि, दो मैचों में हमने सेट-पीस पर चार गोल खाए, जो मेरे लिए अस्वीकार्य है। हमें काम करते रहना होगा। हमें विश्लेषण करके यह पहचानने की जरूरत है कि क्या गलत हो रहा है।'

'मुम्बई में यह मुश्किल होगा': बेंगलुरू एफसी के स्पेनिश हेड कोच जेरार्ड जारागोजा जबर्दस्त शुरुआत से खुश हैं।

हालांकि, उनको पता है कि जैसे-जैसे सीजन आगे बढ़ेगा, अन्य टीमें भी उनसे आगे निकलने की कोशिश करेंगी।

जारागोजा ने कहा, 'मुझे मजे लेने दीजिए। तीन मैच, तीन जीत और हम खुश हैं। ये लोग (मोहन बागान एसजी, मुम्बई सिटी एफसी और ओडिशा एफसी) भी हैं, जो बहुत सारे मैच जीतेंगे। हम मुम्बई जा रहे हैं और वहां मुकाबला मुश्किल होगा।'

हेड-टू-हेडः दोनों टीमों के बीच आईएसएल में 16 मैच खेले गए हैं। मुम्बई सिटी एफसी आठ बार जीती है, जबकि बेंगलुरू एफसी ने सात मैच जीते हैं और एक मुकाबला ड्रा रहा।

प्रमुख खिलाड़ी और उपलब्धियांः सुनील छेत्री ने आईएसएल में मुम्बई सिटी के खिलाफ नौ गोल किए हैं। वह एक प्रतिद्वंद्वी के खिलाफ 10 का आंकड़ा छूने वाला पहला भारतीय बनने से एक गोल दूर हैं

मुम्बई सिटी के नौफल पीएन ने अपने पिछले मैच में बतौर स्थानापन्न खिलाड़ी जमशेदपुर एफसी के बॉक्स के अंदर छह टच दर्ज किए।

व्यापार समाचार

एयर इंडिया एक्सप्रेस ने एआईएक्स कनेक्ट के साथ विलय की प्रक्रिया को किया पूरा, एयर इंडिया समूह की परिवर्तन यात्रा में एक और महत्वपूर्ण उपलब्धि

गुरुग्राम, एजेंसी। एयर इंडिया समूह ने एयर इंडिया एक्सप्रेस लिमिटेड और एआईएक्स कनेक्ट प्राइवेट लिमिटेड (पूर्व में एयर एशिया इंडिया) के ऑपरेशनल इंटीग्रेशन और कानूनी विलय की प्रक्रिया को पूरा कर लिया है। इस विलय के साथ ही देश में भविष्य में एयरलाइन एकीकरण की दिशा में एक नया मानक स्थापित हो गया है। नागरिक विमानन महानिदेशालय (डीजीसीए) ने विलय के लिए अपेक्षित विनियामक अनुमोदन प्रदान कर दिया है।

विलय की गई इकाई 'एयर इंडिया एक्सप्रेस' नाम और एक यूनिफाइड एयरलाइन कोड आईएक्स के तहत काम करेगी। इस कदम को एयर इंडिया समूह की परिवर्तन यात्रा में एक महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है, जो चार एयरलाइनों को दो में विलय कर रहा है। समूह दूसरी तरफ विस्तारा को एयर इंडिया में विलय करने की प्रक्रिया में है, ताकि विश्व स्तरीय वैश्विक एयरलाइन स्थापित की जा सके।

एयर इंडिया एक्सप्रेस के लिए विलय प्रक्रिया एयरलाइन के नए ब्रांड की लॉन्चिंग के बाद एक साल से भी कम समय में पूरी हो गई है। इसके एयर ऑपरेटर सर्टिफिकेट (एओसी) के तहत पंजीकृत विमान अब एयर इंडिया एक्सप्रेस के एओसी में ट्रांसफर हो जाएंगे। इस विलय के बाद, एआईएक्स कनेक्ट के सभी विमान एयर इंडिया एक्सप्रेस के कोड 'आईएक्स' के तहत संचालित होंगे।

इस तरह के विलय की जटिलता को देखते हुए, इसके लिए नागरिक उड्डयन महानिदेशालय (डीजीसीए) के साथ मिलकर काम करने की आवश्यकता थी, जिसने पूरी प्रक्रिया का समर्थन और निगरानी की। इस विलय को नागरिक उड्डयन मंत्रालय (एमओसीए), नागरिक उड्डयन सुरक्षा ब्यूरो (बीसीएएस) और अन्य प्रमुख स्टेकहोल्डर्स का भी समर्थन प्राप्त हुआ। मंगलवार को, डीजीसीए के महानिदेशक विक्रम देव दत्त ने नई दिल्ली में डीजीसीए मुख्यालय में एयर इंडिया के चीफ एक्जीक्यूटिव ऑफिसर और एयर इंडिया एक्सप्रेस के चेयरमैन कैंपबेल विल्सन की उपस्थिति में एयर इंडिया एक्सप्रेस के मैनेजिंग डायरेक्टर आलोक सिंह को अपडेटेड एओसी सौंपा।

डीजीसीए के महानिदेशक विक्रम देवदत्त ने इस अवसर पर कहा, ''एयर इंडिया एक्सप्रेस के साथ एआईएक्स कनेक्ट का सफल एकीकरण और विलय सराहनीय कदम है और एयरलाइन विलय के लिहाज से यह एक बेंचमार्क के रूप में कार्य करता है। दुनिया के तीसरे सबसे बड़े विमानन बाजार के रूप में भारत के तेजी से उभरने के साथ ही सभी विनियामक शर्तों का अनुपालन सुनिश्चित किया जाएगा। इसमें शामिल जटिलताओं को देखते हुए इस महत्वपूर्ण उपलब्धि को हासिल करना, डीजीसीए और ऑपरेटर दोनों की टीमों द्वारा किए गए प्रयासों का प्रमाण है।''

डीजीसीए के उड़ान मानक निदेशालय द्वारा सामंजस्य प्रक्रिया की प्रगति की निरंतर निगरानी के लिए एक समर्पित टीम के साथ बनाया गया एक लाइव ट्रैकर समयबद्ध तरीके से चुनौतीपूर्ण कार्य को पूरा करने में सहायक रहा है। एयर इंडिया एक्सप्रेस के मैनेजिंग डायरेक्टर आलोक सिंह ने कहा, ''लगभग एक साल पहले, हमने एआईएक्स कनेक्ट और एयर इंडिया एक्सप्रेस का एकीकरण शुरू किया, जिससे दोनों संगठन एक आम ब्रांड के पीछे एक साथ आ गए। साथ ही, हमने इंटीग्रेशन के इस जटिल प्रयास पर काम किया, जिसका समापन आज दोनों संगठनों के परिचालन और कानूनी विलय में हुआ। डीजीसीए (DGCA), बीसीएएस (BCAS) और एमओसीए (MoCA), एआईएक्स (AIX) और समूह नेतृत्व टीमों और कई अन्य सहयोगियों के बीच घनिष्ठ सहयोग इस प्रक्रिया की सफलता में सहायक रहा।'' एयर इंडिया के चीफ एक्जीक्यूटिव ऑफिसर और एयर इंडिया एक्सप्रेस के चेयरमैन कैंपबेल विल्सन ने कहा, ''एयर इंडिया एक्सप्रेस के साथ एआईएक्स कनेक्ट का एकीकरण एयर इंडिया की विहान.एआई परिवर्तन यात्रा में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। विलय की गई इकाई भारत और इस क्षेत्र में हवाई यात्रा की बढ़ती मांग को पूरा करेगी, खासकर देश के महत्वाकांक्षी युवाओं के बीच जो नए और अधिक आकर्षक मूल्य उत्पादों की तलाश में हैं। इस विलय के बाद 12 नवंबर को विस्तारा का एयर इंडिया में विलय होगा। हम इसे आसान और सहज तरीके से पूरा करने के लिए डीजीसीए के मार्गदर्शन में काम करने के लिए तत्पर हैं।''

विलय पूरा होने के साथ, एयर इंडिया एक्सप्रेस भविष्य के विकास और परिवर्तन एजेंडे पर ध्यान केंद्रित करेगी। एयरलाइन के फ्लीट का आकार पहले ही 88 विमानों तक बढ़ चुका है, जिसमें हर महीने लगभग चार नए विमान शामिल होते रहते हैं।

चालू वित्त वर्ष के अंत तक बेड़े में विमानों की संख्या 100 को पार करने की उम्मीद है। यह नेटवर्क भारत, खाड़ी और दक्षिण पूर्व एशिया में फैला हुआ है। 2022 की शुरुआत में टाटा समूह द्वारा एयर इंडिया के अधिग्रहण के बाद से एआईएक्स द्वारा संचालित मार्गों की संख्या 74 से बढ़कर 171 हो गई है, और यात्री परिवहन में 400 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि हुई है।

अक्टूबर 2023 में, एयरलाइन ने एकीकृत ब्रांड 'एयर इंडिया एक्सप्रेस' को लॉन्च किया था। तब से, एआईएक्स कनेक्ट द्वारा संचालित उड़ानों की मार्केटिंग भी आवश्यक विनियामक अनुमोदन के साथ 'एयर इंडिया एक्सप्रेस' ब्रांड के तहत की जाती है।

ऊबर और शैडोफॉक्स की साझेदारी से मिलेगा भारत में मोटो को बूस्ट

बैंगलुरू, एजेंसी। ऊबर, भारत के प्रमुख राईडशेयरिंग प्लेटफॉर्म्स में से एक, ने देश भर में अपनी टू-व्हीलर कैटेगरी के विकास के लिए आज देश के सबसे बड़े दोपहिया- लॉजिस्टिक्स फ्लीट और प्रक्सप्रेस पार्सल डिलीवरी सेवाओं एवं वैल्यू एडेड समाधानों के अग्रणी प्रदाता शैडोफॉक्स के साथ साझेदारी की है। उद्योग जगत की यह पहली ऐसी साझेदारी शैडोफॉक्स को सबसे विविध थर्ड पार्टी लॉजिस्टिक्स (3PL) प्रदाता के रूप में और मजबूत बनाएगी, जिससे 2 लाख से अधिक सक्रिय दोपहिया वाहन अब ऊबर मोटो के साथ जुड़ जाएंगे। शैडोफॉक्स के फ्लीट के साथ जुड़कर ऊबर अपनी सेवाओं और ड्राइवरों की सप्लाई को बढ़ाते हुए राइडरों को भी बाईक-शेयरिंग के लिए किफ़ायती, त्वरित एवं भरोसेमंद विकल्प उपलब्ध करा सकेगा।

यह इंटीग्रेशन राइडशेयरिंग को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है, जो अब कई शहरों में लाईव हो चुका है। इसके ज़रिए ड्राइवरों को शैडोफॉक्स के साथ काम कर अतिरिक्त कमाई के अवसर मिलेंगे और ऊबर मोटो के लिए पर्याप्त सप्लाई पूल को सुनिश्चित किया जा सकेगा। इस साझेदारी के तहत ऊबर कई नए नगरों में ऊबर मोटो का संचालन शुरू करेगी, जहां पर अब तक ऊबर का परिचालन नहीं है। इसके लिए शैडोफॉक्स के साथ काम करने वाले ड्राइवरों का उपयोग किया जाएगा जो देश भर में 2500 से अधिक शहरों और 18000 से अधिक पिनकोड्स में संचालन कर रहे हैं।

शैडोफॉक्स के ड्राइवर अब ऊबर मोटो राईड और अन्य डिलीवरीज़ का एक्सेस साथ पा सकेंगे- और डिलीवरी एवं राईड के बीच शैडोफॉक्स ऐप पर आसानी से स्विच कर सकेंगे। साझेदारी पर अपने विचार व्यक्त करते हुए अर्णब कुमार, डायरेक्टर, बिज़नेस डेवलपमेन्ट, ऊबर इंडिया और साउथ एशिया ने कहा, ''शैडोफॉक्स के साथ जुड़ना, बिज़नेस मॉडल इनोवेशन का एक और उदाहरण है, जो भारत में बाईक टैक्सी के विकास को गति प्रदान करेगा। एक थर्ड पार्टी लॉजिस्टिक्स प्रदाता के साथ इस साझेदारी के द्वारा ऊबर पर दोपहिया वाहनों की आपूर्ति को सुनिश्चित किया जा सकेगा, जिससे शैडोफॉक्सप्लेटफॉर्म के ड्राइवरों को कमाई के अतिरिक्त अवसर भी मिलेंगे। यह साझेदारी मल्टीपल फॉर्म फैक्टर्स के लिए ऑपरेटिंग सिस्टम बनने की हमारी महत्वाकांक्षा के अनुरूप है, हम ऊबर मोटो के विकास के लिए इस साझेदारी को लेकर बेहद उत्सुक हैं।'

प्रहर्ष चन्द्रा, चीफ़ बिज़नेस ऑफिसर एवं सह-संस्थापक, शैडोफॉक्स ने कहा, ''शैडोफॉक्स में हम इनोवेशन को बढ़ावा देने और अपने ड्राइवरों एवं डिलीवरी पार्टनर्स को बेहतर अनुभव प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। इस अनूठे इंटीग्रेशन के साथ हम भारत का सबसे विविध 3PL प्लेयर बनने जा रहे हैं, अब हम पहला ऐसा ऐप पेश करते हैं जहां कमाई के हर प्रकार के अवसर उपलब्ध हैं। हमारा ''एक ऐप, अनेक अवसर (One app, all opportunities)' प्लेटफॉर्म हमारे पार्टनर्स को कमाई के अतिरिक्त अवसर देता है, वे लास्ट माईल डिलीवरी और ऊबर मोटो पर राइड सेवाएं प्रदान करते हुए बेहतर कमाई कर सकते हैं। यह साझेदारी शहरी लॉजिस्टिक्स और मोबिलिटी- दोनों क्षेत्रों में बदलाव लाएगी, तथा देश में लास्ट-माईल सर्विसेज़ में हमारी स्थिति को और अधिक मजबूत बनाएगी।'

भारत में ऊबर पर पहली बार 3क्क टेक इंटीग्रेशन किया गया है- इसी टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल न्यूयॉर्क की प्रतिष्ठित यैलो कैब्स में किया जाता है। शैडोफॉक्स को ऊबर के थर्ड पार्टी (3P) ऐप्लीकेशन प्रोग्रामिंग इंटरफेस (API) के साथ इंटीग्रेट किया गया है, जिसके परिणामस्वरूप ऊबर की ट्रिप्स बैकेंड पर शैडोफॉक्स के ड्राइवर ऐप पर रूट हो जाएंगी, जबकि राइडर ऊबर ऐप से ही राईड बुक करेंगे।

जेएसडब्ल्यू सीमेंट ने कुल स्थापित क्षमता को 20.6 एमटीपीए तक बढ़ाया

मुंबई, एजेंसी। पार्थ जिंदल के नेतृत्व वाली 24 अरब डॉलर के जेएसडब्ल्यू समूह (वित्तीय वर्ष 2024 में समेकित राजस्व द्वारा) की कंपनी जेएसडब्ल्यू सीमेंट ने दक्षिणी राज्य कर्नाटक के विजयनगर में अपने संयंत्र में अतिरिक्त दो मिलियन टन प्रति वर्ष (एमटीपीए) क्षमता सफलतापूर्वक चालू कर दी है। इससे संयंत्र की कुल क्षमता 6 एमटीपीए तक बढ़ जाएगी। 461 करोड़ रुपये के निवेश से किए गए इस विस्तार के साथ जेएसडब्ल्यू सीमेंट की कुल स्थापित ग्राइंडिंग क्षमता 20.6 एमटीपीए तक बढ़ गई है, जिससे हरित सीमेंट उत्पादों के निर्माण पर अपना ध्यान केंद्रित हो गया है। जेएसडब्ल्यू स्टील के विनिर्माण संयंत्र के साथ रणनीतिक रूप से स्थित विजयनगर फैसिलिटी समूह के भीतर परिचालन तालमेल से लाभान्वित होती है, विशेष रूप से ब्लास्ट फर्नेस स्लैग जैसे कच्चे माल की सोर्सिंग में, पर्यावरण के अनुकूल सीमेंट और सीमेंटयुक्त उत्पाद के उत्पादन को सक्षम करती है।

नई क्षमता वृद्धि जेएसडब्ल्यू सीमेंट के भारत भर में ग्रीनफील्ड और ब्राउनफील्ड विस्तार के माध्यम से निकट अवधि में समग्र पीसने की क्षमता को 40.85 एमटीपीए तक बढ़ाने के लक्ष्य के अनुरूप है, जो कि जेएसडब्ल्यू समूह के भीतर इनोवेशन, स्थिरता और एकीकृत व्यापार संचालन द्वारा संचालित विकास है। जेएसडब्ल्यू सीमेंट के सीईओ नीलेश नारवेकर ने कहा, विजयनगर में यह नई क्षमता स्थिरता के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को बनाए रखते हुए हमारी कुल क्षमता को 40.85 एमटीपीए तक बढ़ाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। एडवांस टेक्नोलॉजी का उपयोग करके और जेएसडब्ल्यू स्टील के साथ तालमेल का लाभ उठाकर, हम 'ग्रीन सीमेंट' का उत्पादन करने में सक्षम हैं जो न केवल हमारे ग्राहकों की बढ़ती मांगों को पूरा करता है, बल्कि यह पर्यावरणीय प्रभाव को भी काफी हद तक कम करता है। जैसे-जैसे हम विस्तार करते रहेंगे, हमारा ध्यान इनोवेटिव और टिकाऊ विनिर्माण प्रथाओं पर रहेगा जो एक सर्कुलर अर्थव्यवस्था की ओर वैश्विक बदलाव का समर्थन करते हैं। विजयनगर में विस्तार राजस्थान, पंजाब, मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश में प्रस्तावित इकाइयों सहित उत्तरी और मध्य भारत में ब्राउनफील्ड और ग्रीनफील्ड परियोजनाओं में निवेश करने की जेएसडब्ल्यू सीमेंट की व्यापक रणनीति का हिस्सा है। जेएसडब्ल्यू सीमेंट का दृष्टिकोण देश भर में बढ़ती बुनियादी ढांचे और आवास की मांग को पूरा करना है। हरित उत्पादों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता के हिस्से के रूप में जेएसडब्ल्यू सीमेंट ग्राउंड ग्रैनुलेटेड ब्लास्ट फर्नेस स्लैग (जीजीबीएस) सीमेंट के उत्पादन पर ध्यान केंद्रित करना जारी रखता है, जो पूरी तरह से ब्लास्ट फर्नेस स्लैग से निर्मित एक पर्यावरण-अनुकूल उत्पाद है।

केदारा समर्थित एजाक्स इंजीनियरिंग लिमिटेड ने सेबी के पास डीआरएचपी दाखिल की

नई दिल्ली, एजेंसी। केदारा समर्थित एजाक्स इंजीनियरिंग लिमिटेड, जो कंक्रीट उपकरणों की व्यापक रेंज जैसे इक्विपमेंट्स, सर्विसेज एंड सोलूशन्स के साथ एक अग्रणी कंक्रीट उपकरण निर्माता है, ने प्रारंभिक सार्वजनिक ऑफरिंग (आईपीओ) के लिए पूंजी बाजार नियामक सेबी के साथ ड्राफ्ट रेड हेरिंग प्रॉस्पेक्टस (डीआरएचपी) दाखिल किया है।

ड्राफ्ट रेड हेरिंग प्रॉस्पेक्टस के अनुसार, बेंगलुरु मुख्यालय वाली कंपनी की आरंभिक सार्वजनिक पेशकश में बिक्री करने वाले शेयरधारकों द्वारा 2,28,81,718 इक्विटी शेयरों (2.28 करोड़ इक्विटी शेयर) तक की बिक्री की पेशकश शामिल है।

ओएफएस में केदारा कैपिटल (निवेशक बिक्री शेयरधारक) के 74,36,800 इक्विटी शेयर, कृष्णास्वामी विजय और कल्याणी विजय प्रत्येक द्वारा 28,60,170 इक्विटी शेयर तक, जैकब जितेन जॉन द्वारा 22,88,136 इक्विटी शेयर, जैकब हैनसेन फैमिली ट्रस्ट (प्रमोटर सेलिंग शेयरधारक) द्वारा 60,06,357 इक्विटी शेयर और सूसी जॉन (प्रमोटर ग्रूप शेयरधारक) द्वारा 14,30,085 इक्विटी शेयर शामिल हैं।

1992 में स्थापित एजाक्स इंजीनियरिंग ने एक व्यापक उत्पाद पोर्टफोलियो विकसित किया है जिसमें कंक्रीट के उत्पादन के लिए सेल्फ-लोडिंग कंक्रीट मिक्सर (एसएलसीएम) और कंक्रीट के परिवहन के लिए बैचिंग प्लांट, कंक्रीट लगाने के लिए बूम पंप, कंक्रीट पंप और सेल्फ-प्रोपेल्ड बूम पंप, कंक्रीट के फ़र्श के लिए स्लिप-फ़ॉर्म पेवर्स और कंक्रीट जमा करने के लिए 3डी कंक्रीट प्रिंटर शामिल हैं।

कंक्रीट उपकरण के विविध उपयोग के मामले हैं और इसे सड़कों, रेलवे लाइनों, भूमिगत सुरंगों, ऊंचे ट्रैक, फ्लाईओवर और पुलों जैसी परिवहन परियोजनाओं में तैनात किया गया है, सिंचाई परियोजनाएँ जैसे जलाशय, नहरें, चेक डैम और जलसेतु, और बुनियादी ढांचा परियोजनाएँ जिनमें भूनिर्माण, जल निकासी, हवाई अड्डों का निर्माण, बिजली संयंत्र, कारखाने, तेल और गैस टर्मिनल आदि शामिल हैं।

कार्यकारी अध्यक्ष कृष्णास्वामी विजय, दिवंगत जैकब जॉन और दिवंगत अनिल कुमार सिंह द्वारा सह-स्थापित, एजाक्स इंजीनियरिंग कर्नाटक में ओबाडेनहल्ली, गौरीबिदानूर और बशेट्टीहल्ली में स्थित चार असेंबलिंग और विनिर्माण सुविधाएं संचालित करती है, जिनमें से प्रत्येक अलग-अलग उत्पाद लाइनों में विशेषज्ञता रखती है। आदिनारायणहोसाहल्ली, कर्नाटक में असेंबलिंग और विनिर्माण सुविधा वर्तमान में निर्माणाधीन है और मार्च 2025 में चालू होने की उम्मीद है।

31 मार्च, 2024 तक, एजाक्स के डीलर नेटवर्क में भारत के 23 राज्यों में 51 डीलरशिप शामिल थे और इसने दक्षिण और दक्षिण पूर्व एशिया, मध्य पूर्व और अफ्रीका में 25 डीलरों और वितरकों के साथ अपनी वैश्विक पहुंच का विस्तार किया है।

एजाक्स, जो दुनिया में एसएलसीएम के तीन सबसे बड़े निर्माताओं में से एक है, भारत में एसएलसीएम बाजार में लगभग 75त्न बाजार हिस्सेदारी के साथ (वित्त वर्ष 2014 में बेची गई एसएलसीएम की संख्या के संदर्भ में) ने परिचालन से वित्त वर्ष 2014 में 1741 करोड़ रुपये के रेवेन्यू अर्जित किया था तथा कंपनी का शुद्ध लाभ 225 करोड़ रुपये था।

आईसीआईसीआई सिक्योरिटीज लिमिटेड, सिटीग्रुप ग्लोबल मार्केट्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, जेएम फाइनेंशियल लिमिटेड, नुवामा वेल्थ मैनेजमेंट लिमिटेड और एसबीआई कैपिटल मार्केट्स लिमिटेड इस इश्यू के बुक रनिंग लीड मैनेजर हैं। इक्विटी शेयरों को बीएसई और एनएसई पर सूचीबद्ध करने का प्रस्ताव है।

सात्विक सोलर आरईआई एक्सपो में करेगी 625डब्ल्यूपी एन-टॉपकॉन जी12आर मॉड्यूल का अनावरण, वाणिज्यिक बिक्री के लिए तैयार

नई दिल्ली, एजेंसी। भारत की प्रसिद्ध और प्रमुख सोलर मॉड्यूल विनिर्माता, सात्विक सोलर ग्रेटर नोएडा के इंडिया एक्सपो मार्ट में 3 से 5 अक्टूबर तक आयोजित हो रहे आरईआई एक्सपो में दो अत्याधुनिक उत्पाद श्रृंखला पेश करने की योजना बना रही है। इनमें से एक है उसका नवनिर्मित एन-टॉपकॉन जी12आर टेक्नोलॉजी मॉड्यूल जो वाणिज्यिक बिक्री के लिए तैयार है और साथ ही इस मौके पर सौर ऊर्जा से चलने वाले पंप और कंट्रोलर भी पेश किये जाएंगे।

इन उत्पादों को सौर ऊर्जा से चलने वाले उत्पादों की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए तैयार किया गया है और साथ ही इससे भारत को इसके नवीकरणीय ऊर्जा लक्ष्यों के करीब भी लाएगा। एन-टॉपकॉन जी12आर मॉड्यूल एक अगली पीढ़ी की तकनीक है जिसे सात्विक के विशेषज्ञों की इन-हाउस टीम ने काफी शोध एवं विकास के बाद तैयार किया है। सात्विक सोलर 132 सेल में 625डब्ल्यूपी तक की पावर रेंज आउटपुट के साथ एन-टॉपकॉन जी12आर पेश करेगी और यह 16 मल्टी बस बार टेक्नोलॉजी में उपलब्ध होगी। नया मॉड्यूल एन-टाइप टॉपकॉन टेक्नोलॉजी से तैयार किया गया है, जिसे इसकी उच्च ऊर्जा रूपांतरण दक्षता और निर्भरता के लिए जाना जाता है। एन-टॉपकॉन जी12आर उच्च दक्षता और दीर्घकालिक प्रदर्शन के साथ आयताकार (रेक्टेंगल) सेल के साथ आता है, जो सौर बाज़ार में नए मानक स्थापित करता है।

कंपनी इन मॉड्यूल के अलावा अपनी सबमर्सिबल पंप रेंज भी लॉन्च करेगी। ये उच्च दक्षता वाली मोटर और कंट्रोलर के साथ 100% स्टेनलेस स्टील पंप हैं, जो पीने के पानी की आपूर्ति, पशुओं को पानी पिलाने, तालाब प्रबंधन और सिंचाई जैसे विभिन्न एप्लीकेशन के लिए उपयुक्त हैं। सात्विक सोलर सबमर्सिबल पंप और कंट्रोलर, 3एचपी से 10एचपी तक की क्षमता रेंज में उपलब्ध हैं, जिन्हें विशेष रूप से सिंचाई उपयोग के लिए डिज़ाइन किए गए प्रदर्शन और गुणवत्ता के लिए एनएबीएल मान्यता प्राप्त प्रयोगशालाओं द्वारा अनुमोदित किया गया है। यह नया उत्पाद भारत के कृषि क्षेत्र में वहनीय समाधानों को बढ़ावा देने और नवीकरणीय ऊर्जा की भूमिका को आगे बढ़ाने के लिए सात्विक की प्रतिबद्धता को और मज़बूत करता है। पूरी तरह से सौर ऊर्जा से संचालित ये पंप, बिजली की सीमित पहुंच वाले दूर-दराज़ के इलाकों में भी सिंचाई के लिए निर्बाध जल आपूर्ति सुनिश्चित करते हैं। सात्विक सोलर के सीईओ, प्रशांत माथुर ने इस अवसर पर अपनी टिप्पणी में कहा, 'हम आरईआई एक्सपो में सोलर पंप और एन-टॉपकॉन जी12आर मॉड्यूल की रेंज का अनावरण करने के लिए उत्साहित हैं। ये उत्पाद नवोन्मेष और उच्च दक्षता वाले सौर समाधान प्रदान करने के प्रति हमारे अटूट समर्पण को प्रदर्शित करते हैं। भारत में सौर उद्योग के विस्तार के मद्देनजर हम अत्याधुनिक टेक्नोलॉजी प्रदान कर इस क्षेत्र का नेतृत्व करना चाहते हैं ताकि भारत के लिए वहनीय भविष्य में योगदान करते हुए ऊर्जा की बदलती मांगों को पूरा किया जा सके।' इस साल के एक्सपो में सात्विक सोलर की उपस्थिति सौर प्रौद्योगिकी (सोलर टेक्नोलॉजी) की सीमाओं को आगे बढ़ाने में कंपनी की भूमिका का उदाहरण है, जो स्वच्छ, किफायती और कुशल ऊर्जा समाधानों की बढ़ती मांग को संबोधित करती है।

अशोक लीलैंड और फ्लिक्सबस इंडिया ने देश में सस्टेनेबल इंटर-सिटी मोबिलिटि में व्यापक बदलाव लाने के मकसद से हाथ मिलाया

नई दिल्ली, एजेंसी। हिंदुजा समूह की भारतीय प्रमुख कंपनी और देश की अग्रणी कमर्शियल वाहन निर्माता कंपनी अशोक लीलैंड ने किफायती और सस्टेनेबल यात्रा के क्षेत्र में वैश्विक ट्रैवल-टेक लीडर फ्लिक्सबस इंडिया के साथ एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए हैं। यह साझेदारी उच्च क्षमता वाले वाहनों में अत्याधुनिक तकनीक और नवाचार के माध्यम से भारत के बस परिवहन संबंधी ईको सिस्टम को बदलने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

एमओयू पर अशोक लीलैंड के हैड-बस वर्टिकल श्री मोहन के, फ्लिक्सबस के सीओओ श्री मैक्स ज्यूमर और फ्लिक्सबस इंडिया के एमडी श्री सूर्य खुराना ने हस्ताक्षर किए। इस साझेदारी के तहत, फ्लिक्सबस के ऑपरेटिंग बस भागीदारों के पास अशोक लीलैंड की उन्नत चेसिस और बिक्री के बाद की सेवाओं तक पहुंच होगी, जिससे देश भर में निर्बाध संचालन सुनिश्चित होगा। साथ ही, अशोक लीलैंड और फ्लिक्सबस अत्याधुनिक तकनीक के माध्यम से स्थानीय बस ऑपरेटरों को सशक्त बनाते हुए कुशल और निर्बाध यात्रा विकल्प प्रदान करेंगे।

अशोक लीलैंड के एमडी और सीईओ श्री शेनू अग्रवाल ने कहा, ''अशोक लीलैंड फ्लिक्सबस के साथ साझेदारी करके खुश है। अशोक लीलैंड में, हमारी हमेशा यही कोशिश रही है कि अत्याधुनिक तकनीकों का फायदा आम लोगों तक पहुंचाया जाए। हमने हमेशा सुरक्षा और प्रदर्शन को प्राथमिकता दी है और हमारे सभी प्रॉडक्ट्स में इनोवेटिव टैक्नोलॉजी की खूबियां मिलती हैं। इस तरह हम अपने ग्राहकों के लिए अधिकतम लाभप्रदता सुनिश्चित करते हुए ऐसी स्वामित्व लागत प्रदान करते हैं, जो इंडस्ट्री में सबसे आगे है। हम असाधारण ग्राहक अनुभव प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध हैं, और एक स्थायी कमर्शियल व्हीकल निर्माता बनने के लिए नई तकनीक का नवाचार और लाभ उठाने के अपने मार्ग पर लगातार आगे बढ़ रहे हैं।''

इस समझौता ज्ञापन पर टिप्पणी करते हुए, फ्लिक्सबस इंडिया के एमडी श्री सूर्य खुराना ने कहा, ''फ्लिक्सबस भारत में इंटरसिटी बस यात्रा को अधिक आसान, सस्टेनेबल और यात्री अनुकूल बनाने के लिए प्रतिबद्ध है। अशोक लीलैंड के साथ यह सहयोग टैक्नोलॉजी के माध्यम से स्थानीय बस ऑपरेटरों को सशक्त बनाते हुए कुशल और उच्च क्षमता वाले यात्रा विकल्प प्रदान करने के हमारे दृष्टिकोण को आगे बढ़ाता है। यात्रियों और राजस्व में हमारी तीव्र वृद्धि के साथ, हम ऐसे नेटवर्क का बेड़ा बनाने की आशा करते हैं जो सुरक्षा और आराम के उच्चतम मानकों को पूरा करता हो, जिससे भारत के परिवहन परिदृश्य में और अधिक नवाचार हो।''

अपनी शुरुआत के बाद से फ्लिक्सबस इंडिया में पहले से ही 300,000 से अधिक यात्री आ चुके हैं, और परिचालन के पहले 6 महीनों से इसका राजस्व छह गुना बढ़ गया है। दक्षिण भारत में परिचालन के सफल शुभारंभ के बाद, बैंगलोर, हैदराबाद और चेन्नई जैसे प्रमुख शहरों को जोड़ते हुए, फ्लिक्सबस का लक्ष्य अपने बेड़े का आकार बढ़ाना और भारत भर में और अधिक क्षेत्रों में अपने नेटवर्क का विस्तार करना है।

किसानों को शीघ्र मिले फसल खराबे का मुआवजा

भाजपा की पर्ची सरकार को उखाड़ने के संकल्प के साथ मनाया प्रदेशाध्यक्ष का जन्मदिन

हनुमानगढ़। जिला कांग्रेस कमेटी ने प्रदेशाध्यक्ष गोविन्द सिंह डोटासरा का जन्मदिन भाजपा की पर्ची सरकार को उखाड़ने के संकल्प के साथ मनाया। जिला कांग्रेस कमेटी की ओर से मंगलवार को प्रदेश कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष गोविन्द सिंह डोटासरा का जन्मदिन भाजपा की पर्ची सरकार को उखाड़ने के संकल्प के साथ मनाया गया। इसके तहत जिला कांग्रेस कमेटी के प्रतिनिधिमण्डल ने भाजपा सरकार की विफलताओं के खिलाफ राष्ट्रपति के नाम जिला कलेक्टर को 13 सूत्री ज्ञापन सौंपा। जिला कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष सुरेन्द्र दादरी ने बताया कि प्रदेश में भारतीय जनता पार्टी की सरकार के लगभग 10 माह के शासन में सरकार की अकर्मण्यता के कारण आमजन त्रस्त है। चिकित्सा, शिक्षा, बिजली, पानी, सड़क जैसी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति में प्रदेश सरकार पूर्णयता विफल रही है। प्रदेश सरकार की विफलता के कारण उत्पन्न जन समस्याओं के निराकरण के लिए राज्य सरकार की ओर से जनहितकारी निर्णय लिए जाएं अन्यथा सरकार को घेरने के लिए कांग्रेस पार्टी को मजबूर होकर सड़क पर उतरना पड़ेगा। ज्ञापन के जरिए प्रदेश में अतिवृष्टि के कारण फसल खराबे का उचित मुआवजा किसानों को शीघ्र देने, प्रदेश में बढ़ते महिला अत्याचार, दलित अत्याचार, महिला एवं नाबालिग बच्चियों के साथ बलात्कार की बढ़ती घटनाएं, माफिया राज (खनन माफिया, बजरी माफिया, भू-माफिया) को रोकने के लिए तुरन्त ठोस कार्रवाई करने, बेरोजगार युवाओं को भर्ती के नाम से भ्रमित करना बंद करने, कांग्रेस सरकार के समय निकाली गई भर्तियों को अपना बता कर झूठी वाहवाही लूटना बंद कर नई नौकरियों की विज्ञप्ति निकालकर नौकरी देने, पूर्ववर्ती कांग्रेस सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं को चालू रख बजट देकर और प्रभावी बनाने, हरियाणा के बराबर पेट्रोल-डीजल की कीमतें करने की मांग की। प्रदेश में नवंबर और जनवरी में होने वाले नगर निकाय एवं पंचायती राज संस्थाओं के चुनावों से एक राज्य-एक चुनाव के जुमले से भ्रम की स्थिति को दूर कर शीघ्र समय पर स्वायत्त संस्थाओं, पंचायती राज संस्थाओं के चुनाव का कार्यक्रम जारी करने, 1 अक्टूबर से धान, मूंग व बाजरे की फसल की एमएसपी की दरों पर सरकारी खरीद शुरू करवाने, खरीफ व रबी की फसल की एमएसपी तय करते सममय इन फसलों की खरीद की तारीख भी तय करने, भारतमाला सड़क पर टोल कम्पनी को निर्धारित टोल राशि वसूल करने के लिए पाबंद करने आदि की मांग की गई। इससे पूर्व जिला कांग्रेस कमेटी की ओर से प्रदेश कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष गोविन्द सिंह डोटासरा का जन्मदिन जंक्शन में शिव मंदिर सिनेमा के पीछे स्थित नवज्योति मूक बधिर एवं अंध विद्यालय प्रांगण में मूक-बधिर बच्चों के साथ मनाया गया। इस मौके पर मूक-बधिर बच्चों से केक कटवाया। इसके बाद कांग्रेसजनों की ओर से डीसीसी अध्यक्ष सुरेन्द्र दादरी के नेतृत्व में मूक-बधिर बच्चों को स्टेशनरी, फल, बिस्किट का वितरण किया गया। कांग्रेसजनों ने पीसीसी अध्यक्ष गोविन्द सिंह डोटासरा की दीर्घायु की कामना की।

अवैध डोडा-पोस्त के साथ तस्कर गिरफ्तार

जैसलमेर। पुलिस की गिरफ्त में आरोपी तस्कर। जैसलमेर में फलसूंड थाना पुलिस ने एक तस्कर को गिरफ्तार किया है। तस्कर चिमनाराम (30) के पास से 31 किलो 248 ग्राम अवैध डोडा-पोस्त बरामद किया गया।

फलसूंड थाना प्रभारी ओमाराम ने बताया कि मुखबिर की सूचना पर आरोपी तस्कर को डोडा-पोस्त के साथ पकड़ा है। उसके खिलाफ एनडीपीएस का मामला दर्ज कर लिया गया है। अब उससे मादक पदार्थों को लेकर कड़ाई से पूछताछ की जा रही है। एसएचओ ओमाराम ने बताया कि जिला पुलिस अधीक्षक सुधीर चौधरी के आदेशानुसार ये कार्रवाई की गई। फलसूंड थाना पुलिस ने मुखबिर की सूचना पर आरोपी चिमनाराम पुत्र भंवराराम प्रजापत, निवासी हिरोणी कुम्हारों की ढाणी, मानासर को गिरफ्तार किया। उसके कब्जे से अवैध मादक पदार्थ बरामद किया। चिमनाराम के पास से 31 किलो 248 ग्राम डोडा पोस्त बरामद किया गया। चिमनाराम को पकड़ कर फलसूंड थाना लाया गया। उस पर एनडीपीएस एक्ट के तहत मामला दर्ज किया गया। एसएचओ ने बताया कि चिमनाराम से मादक पदार्थों को लेकर लगातार पूछताछ की जा रही है।

ताकि इसके नेटवर्क का पता लगाया जा सके। तस्कर को गिरफ्तार करने वाली टीम में एसएचओ ओमाराम, कॉन्स्टेबल रामलाल, सूरजपाल सिंह, भागीरथ, सवाई सिंह, विजय गोदारा, रेमती, मीरा व डीसीआरबी से भीमराव सिंह शामिल रहे।

पाली में ट्रेक्टर ट्रॉली से गिरने से महिला की मौत

पाली। पाली में मंगलवार को ट्रेक्टर ट्रॉली में सवार 20 साल की महिला मजदूर ट्रेक्टर-ट्रॉली गड्ढे के कारण असंतुलित होने से ट्रॉली से सिर के बल नीचे गिर गई। हादसे में महिला के सिर में गंभीर चोट लगी।

इलाज के लिए उसे पाली के बांगड़ हॉस्पिटल लाए। जहां जांच के बाद उसे मृत घोषित कर दिया। पुलिस मामले की जांच में जुटी है। जेतपुर थाने के स।ह राजेन्द्रसिंह ने बताया कि मध्यप्रदेश के कराड़िया (गुणा) निवासी 20 साल की नोताबाई पत्नी मुकेश बंजारा अपने परिवार के अन्य सदस्यों के साथ पिछले कुछ दिनों से वायद गांव में रहकर खेतों में मजदूरी का काम कर रही थी। मंगलवार सुबह 10-12 जने ट्रेक्टर ट्रॉली में सवार होकर वायद से राखाणा गांव के लिए रवाना हुए। बीच रास्ते गड्ढे के कारण ट्रेक्टर ट्रॉली का संतुलन बिगड़ा जिससे उसमें सवार 20 साल की नोताबाई सिर के बल नीचे गिर गई। हादसे में उसके सिर में गंभीर चोट लगी। जिसे तुरंत उपचार के लिए पाली के बांगड़ हॉस्पिटल लेकर आए। जहां जांच के बाद डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। ६

ाटना को लेकर मृतक के परिजनों से रिपोर्ट लेकर जांच शुरू की। परिजनों ने बताया कि मृतका की शादी करीब 3 साल पहले मुकेश के साथ हुई थी। शादी के बाद दोनों के फिलहाल कोई बच्चा नहीं हुआ था। हर साल की तरह वे परिवार सहित मजदूरी करने रोहट क्षेत्र आए हुए थे। लेकिन ट्रेक्टर ट्रॉली से गिरने से नोताबाई की मौत हो गई।

ओवरलोड डंपरों से लोग परेशान धूल उड़ने से हो रही समस्या

खेतड़ी। खेतड़ी उपखंड के करमाड़ी में ओवरलोड डंपरों के संचालकों से सड़क पर उड़ने वाली धूल के कारण उत्पन्न विवाद के बाद, ग्रामीणों और लीजधारकों की एक बैठक थाने में आयोजित की गई। इस बैठक में लीजधारकों ने सहमति जताई कि वे रोजाना तीन टैंकर पानी सड़क पर डालेंगे।

ग्रामीणों ने बताया कि करमाड़ी से संजयनगर जाने वाली सड़क खनन क्षेत्र से डंपरों के संचालन के कारण पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो चुकी है। सड़क से उड़ने वाली मिट्टी और धूल के गुब्बारे आम जनता, ग्रामीणों और दुकानदारों के लिए परेशानी का कारण बन रहे हैं। सड़क के निर्माण होने तक पानी का छिड़काव करने की मांग को लेकर ग्रामीणों ने पहले भी विरोध प्रदर्शन किया था।

उन्होंने प्रशासन को इस समस्या के बारे में कई बार अवगत कराया है, लेकिन स्थायी समाधान नहीं निकला है। पहले भी कई बार चक्काजाम किया गया, जिसके परिणामस्वरूप क्रेशर खान संचालकों ने पानी डालने का आश्वासन दिया था, लेकिन अब काफी समय से यह कार्य नहीं हो रहा है। इसके अतिरिक्त, पीडब्ल्यूडी विभाग और प्रशासनिक अधिकारियों ने सड़क निर्माण के मामले में प्रभावी कदम नहीं उठाए हैं। ग्रामीणों ने आरोप लगाया कि लीजधारक डंपर ड्राइवरों से पानी छिड़काव के नाम पर 150 रुपए की अतिरिक्त वसूली कर रहे हैं, जबकि सड़क पर पानी की एक बूंद भी नहीं डाली जा रही है।

थानाधिकारी भंवरलाल कुमावत ने क्रेशर लीज यूनियन और ग्रामीण व्यापार मंडल के बीच धूल भरे गुब्बारों की समस्या के समाधान के लिए समझौता वार्ता के लिए बैठक बुलाई।

इस बैठक में लीजधारकों ने रोजाना तीन टैंकर पानी सड़क पर छिड़काव करने की सहमति दी। इसके बाद, ग्रामीणों ने सड़क जाम आंदोलन को स्थगित करने का फैसला किया। बैठक में पूर्व छात्रसंघ अध्यक्ष निरंजन लाल सैनी, श्रीराम चेजारा, सुरेंद्र सिंह फौजी, राकेश कुमार, बलवीर मीणा सहित कई अन्य लोग उपस्थित थे।

हॉस्पिटल में महिला मौत मामले ने पकड़ा तूल

बाड़मेर। बाड़मेर हॉस्पिटल में इलाज के दौरान महिला की मौत मामले में मंगलवार को परिजन, समाज सहित अन्य समाज के लोग महावीर पार्क में इकट्?ठे हुए। लोगों का कहना हमारी मांग है कि दोषी डॉक्टर को निलंबित किया जाए, सरकारी मुआवजा, जांच करवाने सहित 5 सूत्री मांगों को लेकर जिला कलेक्टर को ज्ञापन दिया। कलेक्टर ने हमारी मांगों को सुना उन्होंने आश्वासन दिया है कि जल्द इन मांगों पर अमल लाया जाएगा।

मृतका के बेटे नखत सिंह का कहना है कि मेरी मां के साथ जो हुआ है वो भविष्य में किसी ओर के साथ नहीं होना चाहिए। बाड़मेर की मेडिकल टीम से हम संतुष्ट नहीं है। कलेक्टर मैडम ने आश्वासन दिया है कि जोधपुर टीम से जांच करवाई जाएगी। दरअसल, 21 सितंबर को बाड़मेर हॉस्पिटल में भर्ती महिला दरिया कंवर (50) पत्नी किशन सिंह निवासी गोहड़ का तला चौहटन की इलाज के दौरान मौत हो गई थी। परिजनों ने डॉक्टरों व नर्सिगकर्मियों पर लापरवाही का आरोप लगाते हुए हंगामा कर दिया। उन पर कार्रवाई की मांग करने लगे। मॉर्च्युरी के बाहर धरना भी दिया गया। तब मेडिकल बोर्ड से पोस्टमार्टम, जांच सहित मांगों पर सहमति बन गई थी। लेकिन करीब 10 दिन बीत जाने के बाद भी कोई कार्रवाई नहीं होने पर मृतका का बेटा प्रशासनिक अधिकारियों से मिला था। मंगलवार को मृतका के परिजनों और समाज के लोग जिला मुख्यालय महावीर पार्क में इकट्ठे हुए। वहां पर समाज के लोगों ने कहा कि डॉक्टरों की लापरवाही से नखत सिंह की मां दरिया कंवर को अपनी जान गवानी पड़ी। हॉस्पिटल में हाल बेहाल है। डॉक्टर और नर्सिगकर्मी अपने क्लिनिक पर ध्यान ज्यादा देते है और हॉस्पिटल में कम देते है। भाजपा के पूर्व जिलाध्यक्ष स्वरूप सिंह राठौड़ ने कहा- महिला का इलाज के दौरान मेडिकल टीम व नर्सिगकर्मियों की लापरवाही के कारण मृत्यु हो गई थी। छोटे-छोटे मासूम बच्चे है। समाज के लोग इकट्ठे हुए। कुछ मांगों को लेकर जिला कलेक्टर से मुलाकात की है। हमारी मांगों को सुना और आश्वस्त किया है। कुछ मांगों पर जल्दी कार्रवाई करने का आश्वासन दिया है। जिला कलेक्टर को ज्ञापन देकर दोषी डॉक्टर उसे निलंबित किया जाए, सरकार की तरफ अधिकतम आर्थिक मुआवजा दिया जाए। जांच बैठाई जाए। मेडिकल सिस्टम में कोताही की मांग जिला कलेक्टर के सामने रखी है। कलेक्टर टीना डाबी ने आश्वस्त किया है कि जल्द ही कार्रवाई की जाएगी।

बस कंडेक्टर किडनैपिंग के मुख्य आरोपी सहित 4 गिरफ्तार

बाड़मेर। पुलिस के अनुसार 26 सितंबर की रात करीब साढ़े आठ बजे धनाऊ थाने पर सूचना मिली थी कि बस कंडक्टर सुनील कुमार पुत्र रामचंद्र निवासी भारते की बेरी पुलिस थाना धोरीमन्ना को सैयद मौज अली का तला से 3-4 बदमाशों ने बिना नंबरी कार बलेनो में डालकर किडनैप कर लिया। रिपोर्ट पर धनाऊ थाने में मामला दर्ज किया। इससे पहले पुलिस की टीमों ने कंडेक्टर व बदमाशों की तलाश शुरू कर दी। टीमों ने लगातार 30 किलोमीरटर तक पीछा कर 2 घंटे के अंदर ही मंडो की बेरी गांव से कंडेक्टर सुरेश कुमार को डिटेन कर 3 आरोपियों को गिरफ्तार किया। सेड़वा थानाधिकारी दीपसिंह ने बताया- गिरफ्तार आरोपियों से गहन पूछताछ की गई। घटना में शामिल मुख्य आरोपी हनुमानराम को पकड़ने के लिए उसकी संभावित ठिकानों पर दबिश दी गई। तकनीकी व सूचना के आधार पर आरोपी हनुमानाराम को सोमवार को गिरफ्तार किया गया। किडनैपिंग मामले में अब तक जगदीश पुत्र बालुलाल, किशनाराम पुत्र पूनमाराम, हनुमानराम पुत्र लक्ष्मणराम निवासी मंडो की बेरी धनाऊ, पाबुराम पुत्र भीकाराम निवासी कोजा धोरीमन्ना गिरफ्तार किए जा चुके हैं। कार्रवाई में धनाऊ एएसआई अमराराम, सेड़वा थाने के हेड कॉन्स्टेबल परमवीर, कॉन्स्टेबल मनोहर सिंह, देरामाराम, ड्राइवर कॉन्स्टेबल प्रेमसुख, धनाऊ थाने के हेड कॉन्स्टेबल रतनलाल, बाबूलाल, रमेश, जैसाराम, जबराराम, बाबुलाल, चुतराराम, किशनाराम, कॉन्स्टेबल ड्राइवर जेठाराम शामिल रहे।

जज के घर आया 4 फीट लंबा कोबरा

जैसलमेर। जैसलमेर शहर स्थित एक जज के सरकारी आवास में अचानक कोबरा सांप नजर आने से सनसनी फैल गई। 4 फीट लंबा कोबरा सांप सरकारी आवास की दीवार में फंसा था। सरकारी आवास में कोबरा सांप की सूचना मिलने पर स्नेक कैचर साहिल ने मौके पर पहुंचकर उसे रेस्क्यू करने के प्रयास किए। करीब 25 मिनट की कड़ी मशक्कत के बाद सांप को सुरक्षित दीवार से बाहर निकाला गया। साहिल ने उसे डिब्बे में बंद कर सुरक्षित जंगल में छोड़ दिया।

4 फीट लंबे कोबरा सांप को रेस्क्यू करने के बाद सभी ने राहत की सांस ली। गौरतलब है कि बीती रात अतिरिक्त न्यायिक मजिस्ट्रेट सौभाग्य सिंह के राजकीय आवास में 4 फीट लंबा कोबरा दिखा। कोबरा सांप सरकारी आवास की दीवार में पत्थरों के बीच फंसा मिला। सभी ने तुरंत स्नेक कैचर साहिल को सूचना दी। स्नेक कैचर साहिल ने मौके पर पहुंच कर सांप को सुरक्षित रेस्क्यू करने के प्रयास किए। दीवार से पत्थर आदि हटकर व पानी आदि डालकर सांप को बाहर निकाला गया। जैसे ही सांप दीवार से बाहर आया, साहिल ने उसे तुरंत पकड़ लिया। स्नेक कैचर साहिल ने कोबरा सांप को सुरक्षित डिब्बे में बंद कर जंगल में ले जाकर छोड़ दिया। सांप के रेस्क्यू करने के बाद सभी ने राहत की सांस ली। स्नेक कैचर साहिल ने बताया कि इस बार मानसून की ज्यादा बारिश के कारण सब जगह पानी भर गया है। इस वजह से सांप अपने बिलों को छोड़कर बाहर आ गए हैं। ऐसे में भोजन की तलाश में वे आवासीय कॉलोनियों तक आ गए हैं। साहिल ने सभी से अपील करते हुए कहा कि सांप हमारे पर्यावरण के लिए बहुत ही आवश्यक है। ऐसे में इनको मारना नहीं चाहिए। जैसे ही सांप दिखे तो स्नेक कैचर आदि को बुलाकर उसे सुरक्षित जंगल में छोड़ देना चाहिए।

एसपी के नाम सुसाइड-नोट लिखा

फिर ट्रेन के सामने कूदा प्रताड़ित करने, रुपए नहीं देने, धोखे से पैसा-गाड़ी ऐंठने के लगाए आरोप

झुंझुनूं। झुंझुनूं शहर के इंडाली रेलवे फाटक के पास सोमवार शाम 7 बजे एक व्यक्ति ने ट्रेन के आगे कूदकर आत्महत्या कर ली। उसके पास से एक सुसाइड नोट मिला। इस नोट में उसने 7 लोगों के खिलाफ प्रताड़ित करने, उसके रुपए नहीं लौटाने, धोखाधड़ी कर रुपए और कार ऐंठने के आरोप लगाए। पुलिस के अनुसार- झुंझुनूं के इस्लामपुर निवासी रघुवीर प्रसाद कड़वासरा मंगलवार सुबह दवा लाने की बात कहकर घर से निकले थे। इस दौरान इंडाली रेलवे फाटक व नेता की ढाणी के बीच बठिंडा से जयपुर जाने वाली ट्रेन के सामने कूदकर उन्होंने सुसाइड कर लिया।

ट्रेन से टकराकर रघुवीर की मौके पर ही मौत हो गई। लोको पायलट ने ट्रेन को रोका और रेलवे स्टेशन अधीक्षक को घटना की सूचना दी। रेलवे स्टेशन ने पुलिस व जीआरपी को जानकारी दी। इसके बाद सदर थाने के हेड कॉन्स्टेबल होशियार सिंह मौके पर पहुंचे। रघुवीर प्रसाद की जेब में मिले आधार कार्ड के आधार से उनकी पहचान हुई। पुलिस ने शव बीडीके अस्पताल पहुंचाया। पुलिस को एक सुसाइड नोट भी मिला। कोतवाली थाने का इलाका होने के कारण कोतवाली पुलिस को सूचना दी गई। सूचना पर परिजन व रिश्तेदार अस्पताल पहुंचे। कोतवाल पवन चौबे ने बताया- अभी परिजन ने रिपोर्ट नहीं दी है। हमें 4 पेज का सुसाइड नोट बरामद हुआ है जिसमें 7 लोगों को मौत का जिम्मेदार बताते हुए न्याय दिलाने की फरियाद की गई है। रघुवीर प्रसाद ने सुसाइड नोट में 7 लोगों के नाम का जिक्र किया है। इसमें इस्लामपुर के तीन, भड़ौंदा, सिरियासर, मटाना, स्यालू के लोगों के नाम हैं। इनमें इस्लामपुर के एक बैंककर्मी पर बैंक से पत्नी के नाम से केसीसी लोन उठाकर 5 लाख रुपए नहीं चुकाने, इस्लामपुर के एक व्यक्ति पर जमीन का केस उठवा लेने के बाद रुपए नहीं देने, गांव के ही एक व्यक्ति पर कटान का रास्ता नहीं देकर प्रताड़ित करने, भड़ौंदा के व्यक्ति पर 18 साल से रुपए नहीं देने, स्यालू के व्यक्ति पर गाड़ी बेचने के नाम रुपए लेने और रुपए मांगने पर कार से कुचलने की धमकी देने, सिरियासर व मटाना के व्यक्ति पर लकड़ियों के रुपए नहीं देने के आरोप लगाए। सुसाइड नोट में लिखा है कि ये लोग मुझे रुपए नहीं दे रहे हैं। धमकी दे रहे हैं। ये मेरी मौत के जिम्मेदार हैं। मेरे बच्चों को न्याय दिलाया जाए। इन सातों के अलावा कोई निर्दोष नहीं फंसना चाहिए।

बजरी माफिया के दो गुटों में खूनी संघष

रायपुर। रायपुर मारवाड़ उपखंड के बर थाना इलाके में शनिवार रात 12:30 बजे बजरी माफियाओं के दो गुटों के बीच खूनी संघर्ष हो गया। इस घटना में एक पक्ष के एक युवक को सिर में गंभीर चोटें आईं, जिसे बर के सरकारी अस्पताल में प्राथमिक उपचार दिया गया। देर रात युवक ने बर थाने जाकर दूसरे पक्ष के खिलाफ शिकायत दर्ज कराई। बर थाना प्रभारी रोडू राम ने बताया कि गुड़िया निवासी तेजपाल, जो वर्तमान में ब्यावर में रहते हैं, ने रिपोर्ट में आरोप लगाया कि वह बर थाना क्षेत्र के पास एक प्लांट पर अपने व्यापारिक कार्य से गए थे। वापस लौटते समय अजय मेवाड़ा, नरपत सिंह और अन्य पर हमला करने का आरोप लगाया गया।

नशा मुक्ति के खिलाफ शुरू किया मानस अभियान

मनोचिकित्सक कैंप के लिए तैयार, नशा करने वाले व्यक्ति के परिवार को साथ जोड़ने पर जोर

हनुमानगढ। स्वास्थ्य भवन में मंगलवार को मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. नवनीत शर्मा की अध्यक्षता में जिले भर में संचालित साइकेट्रिक सेंटरों के मनोचिकित्सकों की बैठक हुई। सीएमएचओ ने मनोचिकित्सकों से नशा मुक्ति के खिलाफ शुरू किए गए मानस अभियान में जुड़ने की अपील की। वे अपने स्तर पर क्या सहयोग दे सकते हैं, इस बारे में चर्चा की गई। सीएमएचओ डॉ. नवनीत शर्मा ने बताया कि जिला कलेक्टर कानाराम की ओर से जिले में नशा मुक्ति के लिए मानस अभियान चलाया जा रहा है। इसके तहत पिछले करीब दो माह से विभिन्न गतिविधियां चल रही हैं। स्वास्थ्य विभाग की ओर से ट्रेनर्स बनाए गए हैं। इसके बाद ब्लॉक वाइज ट्रेनिंग दी गई। शिक्षा विभाग की ओर से भी जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है। इसी के तहत जिला कलेक्टर के निर्देश थे कि सघन कार्रवाई की जाए। अधिकाधिक कैंप लगाएं। सीएमएचओ डॉ. शर्मा ने बताया कि जिले में करीब 20 केन्द्रों पर साइकेट्रिक सेंटर हैं, जहां पर मनोचिकित्सक सेवाएं दे रहे हैं। मंगलवार को स्वास्थ्य भवन में जिले के सभी साइकेट्रिक सेंटरों के मनोचिकित्सकों के साथ बैठक की गई। सभी मनोचिकित्सकों ने कैंप के लिए अपनी सहमति दी। साथ ही आश्वस्त किया कि अगर राजकीय चिकित्सालय में उनकी सेवाओं की आवश्यकता हो तो वे तैयार हैं। सीएमएचओ डॉ. शर्मा ने बताया कि मानस अभियान का मुख्य लक्ष्य है कि नशा करने वाले व्यक्ति के परिवार को साथ जोड़ा जाए। मनोचिकित्सकों से इस बारे में कहा गया कि वे अपना-अपना डाटा तैयार रखें कि उन्होंने नशा छुड़वाने के साथ कितने परिवारों को जोड़ा है। मनोचिकित्सकों ने आने वाले समय में इसका डाटा तैयार करने की बात कही। उन्होंने कहा कि कई सेंटर अच्छा काम कर रहे हैं। आने वाले समय में इनको चैक भी किया जाएगा। सीएमएचओ ने बताया कि मनोचिकित्सकों ने कुछ मुद्दे उठाए। इनमें साइकेट्रिक सेंटरों को लेकर नागरिकों में कई तरह की भ्रांतियां होने की बात सामने आई। साथ ही बताया कि वे जो दवाइयां दे रहे हैं उनका पूरा रिकॉर्ड है, लेकिन ऐसी दवाइयां जो जिला कलेक्टर की ओर से बैन की गई हैं।

रसूलपुर में मंदिर की जमीन पर अतिक्रमण का विरोध

ग्रामीणों ने एसडीएम को ज्ञापन देकर की कार्रवाई की मांग, मिला जांच का आश्वासन

खेतड़ी। खेतड़ी उपखंड के रसूलपुर पंचायत के ताल गांव में हनुमान मंदिर की जमीन पर अवैध अतिक्रमण को लेकर ग्रामीणों में भारी आक्रोश देखा जा रहा है। मंगलवार को ग्रामीणों ने एसडीएम को ज्ञापन सौंपते हुए इस अवैध अतिक्रमण को हटाने की मांग की। ज्ञापन में बताया गया कि कई साल पहले गांव में हनुमान मंदिर का निर्माण किया गया था, और मंदिर के पास की खाली जगह पर धार्मिक कार्यक्रम आयोजित होते थे। यह भूमि लंबे समय से हनुमान मंदिर के नाम पर थी, लेकिन हाल ही में कुछ लोगों ने इस पर अवैध अतिक्रमण कर लिया और छलपूर्वक इस भूमि को अपने नाम करवा लिया।

अब मंदिर की जमीन को बेचने की कोशिश की जा रही है, जिससे ग्रामीणों में आक्रोश और असंतोष बढ़ता जा रहा है। ग्रामीणों का कहना है कि मंदिर की जमीन पर अतिक्रमण से धार्मिक कार्यक्रमों के आयोजन में बाधा आ सकती है, और उन्होंने प्रशासन से मांग की है कि इस भूमि की बिक्री पर रोक लगाई जाए और इसे मंदिर के नाम पर वापस किया जाए।

ग्रामीणों ने यह भी चेतावनी दी कि अगर प्रशासन ने इस मामले को गंभीरता से नहीं लिया, तो गांव में कोई अप्रिय घटना हो सकती है। इस पर एसडीएम ने मामले की जांच कर आवश्यक कार्रवाई का आश्वासन दिया। ज्ञापन सौंपने वालों में सुभाष चन्द्र, रूडाराम, किशोर सिंह, कपिल कुमार, प्रकाश चन्द्र, कैलाश जांगिड़, डूंगरराम, अनिल कुमार, मुकेश कुमार, महेंद्र सिंह, राजेंद्र, और नेकीराम सहित कई अन्य ग्रामीण उपस्थित थे।

कोल्डड्रिंक में नशीला पदार्थ मिलाकर नाबालिग से रेप

सीकर। सीकर के उद्योग नगर इलाके में नाबालिग लड़की से रेप का मामला सामने आया है। आरोपी ने कोल्डड्रिंक में नशीला पदार्थ मिलाकर पीड़िता को पिलाया और रेप किया। उद्योग नगर पुलिस मामले की जांच कर रही है। उद्योग नगर पुलिस के अनुसार- ग्रामीण क्षेत्र की रहने वाली नाबालिग लड़की के चाचा ने मामला दर्ज करवाया है। रिपोर्ट में बताया- सचिन नाम के लड़के ने उनकी नाबालिग भतीजी को कोल्डड्रिंक में नशीला पदार्थ डालकर पिलाया। इसके बाद भतीजी से रेप किया। इस दौरान आरोपी ने पीड़िता के न्यूड फोटो भी क्लिक कर वायरल कर दिए। उद्योग नगर थाना पुलिस ने मामला दर्ज करके जांच शुरू कर दी है। मामले की जांच थानाधिकारी सुरेंद्र देगड़ा कर रहे हैं।

अफीम दूध सप्लायर को पुलिस ने बाड़मेर शहर से पकड़ा

बाड़मेर। बाड़मेर जिले की महिला पुलिस ने धर का भर अभियान के तहत मादक पदार्थ तस्करी मामले में फरार चल रहे आरोपी को गिरफ्तार किया है। बीते 5 माह से फरारी काट रहा था। आरोपी अफीम दूध सप्लाई में मामले में वांटेड है। आरोपी से मादक-पदार्थ की खरीद-फरोख्त को लेकर पूछताछ की जा रही है। पुलिस के अनुसार 16 मई को पुलिस थाना नागाणा ने मादक पदार्थ के खिलाफ कार्रवाई करते हुए पाबूराम पुत्र भागचंद निवासी डोली कलां कल्याणपुर बालोतरा के कब्जे से 1.010 किलोग्राम अवैध अफीम का दूध बरामद किया था। नागाणा पुलिस ने एनडीपीएस एक्ट के तहत मामला दर्ज कर जांच पड़ताल शुरू की थी। मामले की जांच महिला थानाधिकारी सोमकरण को दी गई। मामले में वांटेड फरार आरोपी भारताराम उर्फ भारतराम पुत्र अर्जुनराम निवासी डोली कलां कल्याणपुर को पकड़ने के लिए उसके ठिकानों पर दबिश दी गई। महिला थानाधिकारी सोमकरण ने बताया- महिला थाना स्तर से एक टीम बनाई गई। आरोपी को पकड़ने के दौरान तकनीकी और सूचना मिलने पर वांटेड आरोपी भारताराम उर्फ भारतराम को बाड़मेर शहर से गिरफ्तार किया गया। आरोपी मादक पदार्थ सप्लायर है। पुलिस आरोपी को रिमांड पर लेकर अवैध मादक कहां से लेकर आया था और किस-किस को सप्लाई करता है। इसको लेकर पूछताछ की जा रही है। गिरफ्तारी में कॉन्स्टेबल करनाराम, हंजारीमल, जसवंत बाना और महिला कॉन्स्टेबल उदाराम की भूमिका रही है।

स्कार्पियों की टक्कर से बाइक सवार युवक की दर्दनाक मौत

बाड़मेर। बाड़मेर जिले के गिराब थाना इलाके हरसाणी गांव के पास बाइक व स्कार्पियो के बीच जबरदस्त भिड़ंत हो गई। इससे बाइक सवार युवक की दर्दनाक मौत हो गई। सूचना मिलने पर थानाधिकारी देवी सिंह मय पुलिस जाब्ता मौके पर पहुंचे। शव को गडरारोड हॉस्पिटल की मॉर्च्युरी में रखवाया गया है। पुलिस ने क्षतिग्रस्त वाहनों को जब्त कर लिया है। फिलहाल हादसे की जांच पड़ताल शुरू कर दी है। परिजनों की रिपोर्ट पर मामला दर्ज कर लिया है। हादसे में बाइक हुई चकनाचूर। पुलिस के अनुसार भियाड़ गांव निवासी जनक सिंह (22) पुत्र पृथ्वी सिंह मंगलवार को सुबह करीब 9 बजे हरसाणी से सोलंकियों की ढाणी की तरफ जा रहा था। हरसाणी से मात्र आधा किलोमीटर दूर सामने से आ रही स्कार्पियो और बाइक के बीच जबरदस्त भिड़ंत हुई है। इससे बाइक सवार युवक उछलकर सड़क किनारे दूर जाकर गिरा। सिर के बल गिरने से जनक सिंह की मौके पर ही मौत हो गई। आसपास के लोगों ने पुलिस को सूचना दी। लोगों ने प्राइवेट गाड़ी से गडरारोड हॉस्पिटल लेकर गए। वहां पर डॉक्टरों ने मृत घोषित कर दिया। गिराब थानाधिकारी देवी सिंह ने बताया- मृतक के परिजनों की रिपोर्ट पर मामला दर्ज कर लिया है। वहीं, शव का पोस्टमार्टम करवाकर शव परिजनों को सुपुर्द कर दिया है। क्षतिग्रस्त दोनों वाहनों को जब्त कर लिया है। जांच-पड़ताल शुरू कर दी है।

घड़साना सरकारी अस्पताल का भवन जर्जर

जननी वार्ड की छत का गिरा प्लास्टर, मरीज और उनके परिजन हो रहे परेशान

अनूपगढ़। एक ओर राजस्थान सरकार आम जन के स्वास्थ्य को लेकर विभिन्न योजनाएं निकाल चला रही है, वहीं दूसरी ओर घड़साना का सरकारी अस्पताल खुद बीमार हो चुका है। घडसाना के सरकारी अस्पताल का भवन जर्जर हो चुका है।

भवन जर्जर होने के कारण अस्पताल में संचालित जननी वार्ड की छत का प्लास्टर हल्की सी बरसात होने के कारण गिरने लग गया है। जननी वार्ड जर्जर होने के बावजूद भी महिलाओं को डिलीवरी के बाद नवजात के साथ इसी वार्ड में शिफ्ट किया जा रहा है। छत से लगातार पानी टपक रहा है। मरीजों के परिजनों ने बताया कि कई बार अस्पताल के प्रशासन को इससे अवगत करवाया जा चुका है। मगर अभी तक समस्या का समाधान नहीं हुआ है। वहीं अस्पताल प्रशासन का कहना है कि इस विषय से उच्च अधिकारियों को अवगत करवाया जा चुका है। मरीजों के परिजनों ने बताया-क्षेत्र में दो दिन पहले हल्की बरसात हुई थी। बरसात होने के कारण जननी वार्ड की छत का प्लास्टर गिर गया और छत से पानी टपक रहा है। यह पानी खिड़कियों से होते हुए फर्श पर फैल गया है।

उन्होंने बताया कि पानी के कारण खिड़की के ऊपर लगे हुए एससी में करंट आ रहा है और यह करंट खिड़कियों में भी आ रहा है, जिससे कभी भी बड़ा हादसा हो सकता। उन्होंने आरोप लगाया है कि कई बार अस्पताल के प्रशासन को इस समस्या से अवगत करवाया जा चुका है। मगर प्रशासन ने इस और ध्यान देना भी मुनासिब नहीं समझा ठीक इसके विपरीत महिलाओं को डिलीवरी के बाद नवजात के साथ इसी वार्ड में शिफ्ट किया जा रहा है। सरकारी अस्पताल के प्रभारी डॉक्टर संदीप पचार ने बताया कि उन्होंने इस समस्या से पूर्व में भी उच्च अधिकारियों को अवगत करवाया था और पीडब्ल्यूडी विभाग को भी इस बारे में लिखित सूचना दे दी गई है। उन्होंने बताया कि उच्च अधिकारियों के निर्देशानुसार शीघ्र ही इस समस्या का समाधान करवाने का प्रयास किया जाएगा।

स्वयंभू मनु और शतरूपा को कैसे मिला दशरथ और कौशल्या का जन्म ?

रामायण और रामचरितमानस, हिंदू धर्म के प्रमुख धार्मिक ग्रंथों में से एक हैं। इसका एक-एक पात्र हमें कुछ-न-कुछ शिक्षा जरूर देता है। इन्हीं में से एक राजा दशरथ और माता कौशल्या भी हैं, जो रामायण के मुख्य पात्र रहे हैं। इन्हें भगवान राम को अपने पुत्र के रूप में पाने का सौभाग्य वरदान के कारण प्राप्त हुआ था। ऐसे में चलिए जानते हैं कि राजा दशरथ एवं माता कौशल्या पूर्व जन्म में कौन थे।

मिलती है यह कथा

पौराणिक कथा के अनुसार, स्वयंभू मनु और शतरूपा धरती के पहले पुरुष और स्त्री थे। उन दोनों ने अपना राज्य अपने पुत्र को सौंप दिया और नैमिषारण्य जाकर भगवान वासुदेव का ध्यान करने लगे। दोनों ने भगवान विष्णु को अपने पुत्र रूप में प्राप्त करने के लिए घोर तपस्या की। उनकी तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान विष्णु ने उन्हें दर्शन दिए और वरदान मांगने को कहा। तब स्वयंभू मनु और शतरूपा ने भगवान विष्णु से कहा कि आप हमारे पुत्र बनें हमारी यही इच्छा है।

वरदान से प्राप्त हुआ ऐसा सौभाग्य

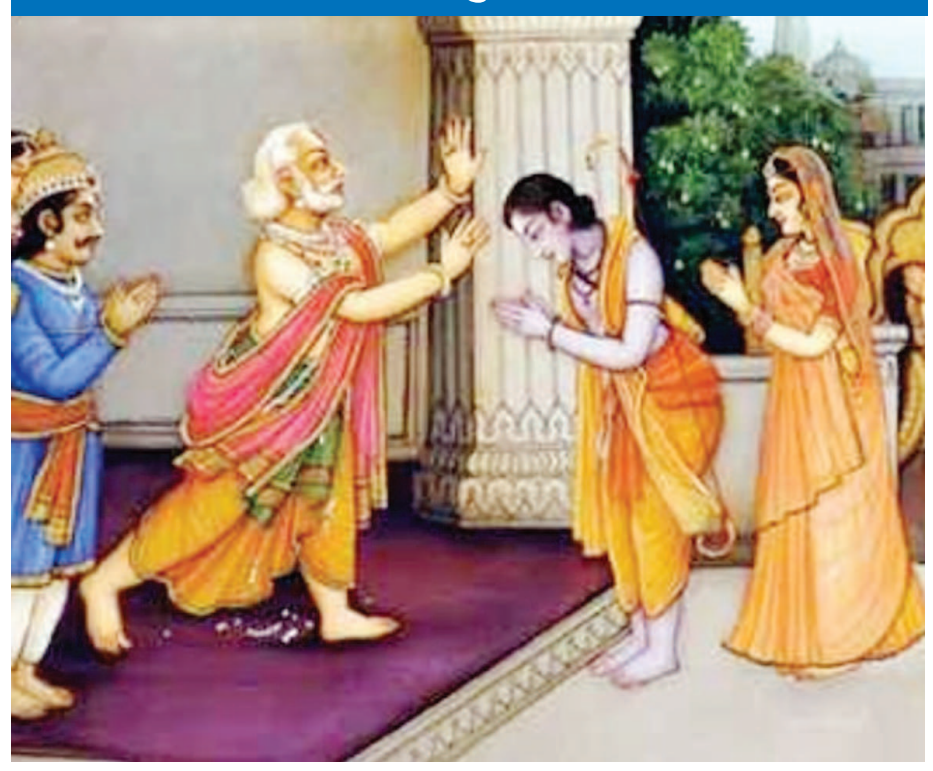

भगवान विष्णु ने दिया वरदान

दोनों की इच्छा की पूर्ति करते हुए प्रभु श्री हरि ने वरदान देते हुए कहा कि त्रेतायुग में आप दोनों को अयोध्या के महाराजा और महारानी के रूप में जन्म मिलेगा और आपके पुत्र के रूप में मेरा सातवां अवतार अर्थात श्रीराम का जन्म होगा। इसी वरदान के फलस्वरूप अगले जन्म में स्वयंभू मनु राजा दशरथ और उनकी पत्नी शतरूपा माता कौशल्या बनी। वहीं प्रभु श्रीराम ने उन दोनों के पुत्र के रूप में जन्म लिया।

कैकेयी ने भी प्रकट की इच्छा

ऐसा भी कहा जाता है कि राजा दशरथ ही कृष्ण अवतार के समय वासुदेव और देवी कौशल्या, देवकी बनी थीं। कैकेयी ने भगवान राम से कहा था कि मैं तुम्हें अगले जन्म में पुत्र के रूप में प्राप्त करना चाहती हूं, इसलिए कैकेयी को अगला जन्म यशोदा के रूप में मिला और उन्होंने भी भगवान श्रीकृष्ण की माता बनने का सौभाग्य प्राप्त किया।

प्रभु श्रीराम भगवान शंकर की प्रशंसा किए बिना रह न पाये

भगवान शंकर ने अपने वैराग्य के माध्यम से समस्त संसार को बताया, कि कैसे अपने अतिप्रिय के बिछुडने के पश्चात स्वयं को संभाला जाता है। अगर हम भी संसार के जीव की भाँति हों, तो हम भी किसी मदिरा के नशे में धुत होकर यहाँ कहीं पड़े रहते। लेकिन हम अपने जीवन चरित्र द्वारा आपको समझाना चाह रहे हैं, कि जीवन में बड़े से बड़ा स्नेही भी क्यों न दूर हो जाये, तुम डगमगाना मत। रोना धोना भी मत। बस प्रभु के श्रीचरणों में स्वयं को समर्पित कर देना। आठों पहर उनके गुनगाण सुनना। फिर देखना आपका प्रत्येक पल पूजा हो जायेगा। क्योंकि इस मनुष्य जीवन की एक ही उपलब्धि है, कि हर श्वाँस के साथ हरि का सुमिरन किया जाये। भगवान शंकर को प्रभु श्रीराम जी ने इतना कठिन व्रत करते देखा, तो वे उनकी त्याग तपस्या व महान व्रत की प्रशंसा किये बिना रह न पाये। श्रीराम जी को यह भक्ति भाव ही तो प्रसन्न करता है। इसी कारण भगवान श्रीराम भोले नाथ के समक्ष प्रगट हो गये-

'प्रगटे रामु कृतग्य कृपाला।
रुप सील निधि तेज बिसाला।
बहु प्रकार संकरहि सराहा।
तुम्ह बिनु अस ब्रतु को निरबाहा।।'

इसके पश्चात गोस्वामी तुलसीदास जी ने जो लिखा, उस पर थोड़ा चिंतन बनता है। गोस्वामी जी कहते हैं-

'बहुबिधि राम सिवहि समुझावा।
पारबती कर जन्मु सुनावा।।
अति पुनीत गितिजा कै करनी।
बिस्तर सहित कृपानिधि बरनी।।'

अर्थात प्रभु श्रीराम जी ने भोले नाथ को बहुत प्रकार से समझाया। और श्रीपार्वती जी के पावन जन्म व उनकी महान करनी सुनाई। प्रश्न उठता है, कि भगवान शंकर आखिर नासमझ थे क्या, जो प्रभु श्रीराम जी ने उन्हें समझाया? अथवा वे किसी उचित दिशा में नहीं बह रहे थे? यहाँ प्रभु श्रीराम जी की प्रभुता का दर्शन होता है। यहाँ वे भगवान शंकर को नहीं, अपितु आम जन मानस को संदेश दे रहे हैं। संदेश यह, कि संसार में आये हैं, तो निश्चित ही हमारा सर्वोपरि कार्य ईश्वर की आराधना ही है। संसार के प्रति वैराग्य होना, हमें भगवान के प्रति दृढ़ भाव देता है। किंतु संसारिक जीव के जीवन में केवल वैराग्य की ही महानता नहीं है। उसमें राग भाव का होना भी अति आवश्यक है। उसमें रुप, रस एवं रंग के प्रति आकर्षण ही समाप्त हो जायेगा, तो इस सृष्टि का विस्तार कैसे होगा? सृष्टि तो मानों रुक ही जायेगी। इसलिए सर्वप्रथम वैराग्य में दक्ष होने के पश्चात, हमें राग रंग में भी उतरना होगा।

इसीलिए श्रीराम जी श्रीपार्वती जी के जन्म की गाथा व उनकी महान करनी सुनाते हैं। यहाँ भी बड़ी विचित्र बात है, कि पहली बात तो भगवान शंकर चोटी के बैरागी। उस पर उन्हें अपनी दिवंगत पत्नी की यादों ने घेरा हुआ है। मन में जब ऐसे भावों की तरंगें चलायेमान हों, तो ऐसे में क्या भगवान शंकर को किसी अनजान स्त्री की बातों में रुचि उत्पन्न होगी? श्रीपार्वती जी महान व श्रेष्ठ होंगी तो होंगी, इससे उन्हें भला क्या वास्ता? किंतु श्रीराम जी हैं, कि उन्हें श्रीपार्वती जी की ही गाथायें सुनाये जा रहे हैं। मानों वे प्रयास कर रहे हों, कि हे भोलेनाथ! अब आप अपने जीवन चरित्र को केवल यहीं तक ही रोक कर न रखें। अपितु आगे भी संसार के कल्याण के लिए अपनी दिव्य लीलायें जीवंत रखें। हमारे भोलेनाथ को भला क्या समझ आना था। वे जैसे थे, वैसे ही रहे। उनके मन में कोई राग उत्पन्न नहीं हुआ। श्रीराम जी जब उन्हें ऐसे अनास्क भाव में देखा, तो उन्हें कहना ही पड़ा-

'अब विनती मम सुनहु सिव जौं मो पर निज नेहु।
जाइ बिबाहहु सैलजहि यह मोहि मागें देहु।।'

अर्थात हे शिवजी! यदि मुझ पर आपका स्नेह है, तो अब आप मेरी विनती सुनिए। मुझे यह मांगें दीजिए, कि आप जाकर पार्वती जी के साथ विवाह कर लें।

गीता के इन श्लोकों का रोजाना पाठ
करने से जीवन में आएंगे सकारात्मक बदलाव

श्री कृष्ण ने अर्जुन के जरिए समस्त संसार को गीता का अमृत संदेश दिया था। ऐसे में आज हम आपको गीता के 5 ऐसे श्लोक के बारे में बताने जा रहे हैं, जो किसी भी व्यक्ति के जीवन में बड़े सकारात्मक बदलाव लाने में सहायता करते हैं। हमारे देश में भगवान श्रीकृष्ण को समर्पित तमाम मंदिर हैं, जहां पर भक्तों की भारी भीड़ होती है। वहीं भगवान श्रीकृष्ण ने महाभारत युद्ध के दौरान अर्जुन को गीता का ज्ञान दिया था। श्रीमद्भागवत गीता में जीवन के सभी प्रश्नों के उत्तर मिलते हैं। बता दें कि यह ग्रंथ हिंदू विचारों की समग्रता को दर्शाता है। अर्जुन के माध्यम से श्री कृष्ण ने समस्त संसार को गीता का अमृत संदेश दिया था। इस ग्रंथ के जरिए मनुष्य को विषम से भी विषम परिस्थितियों में सही मार्गदर्शन देने का काम करती है।

1- नैनं छिद्रन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुत ॥

2- उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत्।
आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः॥

3- क्रोधाद्भवति संमोहः संमोहात्स्मृतिविभ्रमः।
स्मृतिभ्रंशाद्बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति॥

4- ध्यायतो विषयान्पुंसः सङ्गस्तेषूपजायते।
सङ्गात्संजायते कामः कामात्क्रोधोऽभिजायते॥

5- कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि॥

कैसे हुई शारदीय नवरात्र की शुरुआत ?
महिषासुर के वध से जुड़ी है इसकी कथा ...

शारदीय नवरात्र में मां दुर्गा की पूजा करने का विधान है। धार्मिक मान्यता है कि इस शुभ अवधि के दौरान मां दुर्गा की सच्चे मन से उपासना और व्रत करने से घर में खुशियों का आगमन होता है और परिवार के सदस्यों को माता रानी की कृपा प्राप्त होती है। हर साल आश्विन माह के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से शारदीय नवरात्र की शुरुआत होती है। इस बार शारदीय नवरात्र का शुभारंभ 03 अक्टूबर से होगा। वहीं, इस पर्व का समापन 11 अक्टूबर को होगा। इसके अगले दिन यानी 12 अक्टूबर को दशहरा का पर्व मनाया जाएगा। नवरात्र में साधक शुभ फल की प्राप्ति के लिए व्रत रखते हैं। धार्मिक मान्यता है कि शारदीय नवरात्र में मां दुर्गा की विधिपूर्वक पूजा-अर्चना करने से जीवन के सभी दुख-दर्द दूर होते हैं। साथ ही माता रानी अपने भक्तों पर विशेष कृपा बरसाती हैं। कई लोग शारदीय नवरात्र व्रत तो रखते हैं, लेकिन शायद उन्हें इसके इतिहास के बारे में पता नहीं होगा। ऐसे में आइए इस लेख में हम आपको बताएंगे कि किस प्रकार से शारदीय नवरात्र की शुरुआत हुई?

ऐसे हुई शारदीय नवरात्र की शुरुआत

पौराणिक कथा के अनुसार, महिषासुर नाम का राक्षस था। उसने तपस्या कर ब्रह्मा जी से अमर होने का वरदान प्राप्त कर लिया था, जिसकी वजह से वह देवताओं को सताने लगा था। वह पृथ्वी और स्वर्ग पर कई तरह के अत्याचार करने लगा।

मां दुर्गा ने महिषासुर का किया सामना

देवी-देवताओं ने महिषासुर के अत्याचार से छुटकारा पाने के लिए भगवान शिव और भगवान ब्रह्मा और भगवान विष्णु जी से प्रार्थना की। इसके पश्चात देवताओं ने अपनी सभी शक्तियों को मिलाकर मां दुर्गा को प्रकट किया और उन्हें श्रेष्ठ अस्त्र-शस्त्र दिए। इसके बाद मां दुर्गा ने महिषासुर का सामना किया।

मां दुर्गा ने किया वध

उन दोनों के बीच युद्ध 9 दिनों तक चला और इसके बाद दसवें दिन मां दुर्गा ने महिषासुर का वध किया है और देवी-देवताओं को महिषासुर के अत्याचार से मुक्ति दिलाई। धार्मिक मान्यता है कि देवी-देवताओं ने इन 9 दिनों में मां दुर्गा की विशेष पूजा-अर्चना कर उन्हें बल प्रदान किया। माना जाता है कि तभी से नवरात्र की शुरुआत हुई।

वृंदावन आने से पहले जरूर जान लें ये जरूरी बातें
वरना नहीं कर पाएंगे श्रीकृष्ण के दर्शन

देश और दुनिया हर जगह से लोग भगवान श्री कृष्ण की नगरी मथुरा-वृंदावन दर्शन करने के लिए पहुंचते हैं। मथुरा-वृंदावन में हर रोज हजारों की संख्या में श्रद्धालु आते हैं। यहां पर भगवान श्रीकृष्ण की अनगिनत मंदिर हैं। हालांकि बहुत सारे लोग ऐसे भी होते हैं, जो बिना पहले किसी जानकारी के वृंदावन पहुंच जाते हैं। जिसकी वजह से उनके साथ भीड़ में फसने, होटल ना मिलने जैसी समस्याएं होने लगती हैं। ऐसे में अगर आप भी वृंदावन आने का प्लान बना रहे हैं, तो आपको कुछ बातों का खास ख्याल रखना चाहिए। जिससे कि आपको यहां पर किसी तरह की समस्या न हो।

बांके बिहारी मंदिर की आरती

अगर आप वृंदावन आ रहे हैं, तो बांके बिहारी मंदिर के टाइम टेबल के हिसाब से मंदिर में होने वाली आरती में शामिल हो सकते हैं और बांके बिहारी के दर्शन भी कर सकते हैं।

बांके बिहारी मंदिर सुबह 08.45 से दोपहर 1.00 बजे तक खुला रहता है। इस मंदिर में रात को 08.25 पर आरती की जाती है।

वृंदावन के मंदिर

वृंदावन में ठाकुर बांके बिहारी मंदिर के अलावा अन्य मंदिरों की आरती का समय भी तय किया गया है। बता दें कि राधा बल्लभ मंदिर, राधा रमण मंदिर, प्रेम मंदिर, इस्कॉन मंदिर और निधिवन में आप भगवान श्रीकृष्ण की लीलाओं में शामिल होकर उनके दर्शन पा सकते हैं। श्रीकृष्ण के सभी मंदिरों में अलग-अलग समय पर झांकियां और लीलाओं के दर्शन किए जाते हैं। यह सभी मंदिर 5 किमी के दायरे में आते हैं। ऐसे में आप सड़क मार्ग से होते हुए इन सब मंदिर में दर्शन कर सकते हैं।

स्टे

अगर आप वृंदावन में रुकने का प्लान बनाकर आए हैं, तो यहां पर आपको कई ऐसी धर्मशालाएं मिल जाएंगी। जहां पर आप आराम से रुक सकते हैं। वहीं कुछ धर्मशालाओं में खाने और रहने का पैसा भी नहीं देना होता है। आप जो भी श्रद्धानुसार दान करना चाहें कर सकते हैं। वृंदावन में जगह-जगह भंडारे होते हैं, जहां पर आप बिना खर्च किए खा पी सकते हैं। हालांकि वृंदावन में काफी भीड़ रहती है, इसलिए अगर आप यहां बच्चों के साथ आ रहे हैं, तो उनकी जरूरत का हर सामान लेकर आएं।

न फैलाएं कूड़ा

अक्सर लोग वंदावन धाम धार्मिक भावनाओं के साथ आते हैं, लेकिन इस दौरान वह अंजाने में कई गलतियां भी कर बैठते हैं।

बता दें कि जिस तरह से आप अपने घर में साफ-सफाई रखते हैं। ठीक उसी तरह यहां आने वाले हर व्यक्ति की यह जिम्मेदारी बनती है कि वह वृंदावन को साफ रखें। न सिर्फ वृंदावन बल्कि आप जिस भी धार्मिक स्थल जाएं, वहां पर कूड़ा न फैलाएं।

बृजवासियों की बुराई

भगवान श्रीकृष्ण की नगरी वृंदावन में अक्सर लोगों को मजाक करते हुए देखा सकता है। यहां आने के बाद बृजवासियों की बातों का बुरा नहीं मानना चाहिए और बृजवासी की बुराई नहीं करनी चाहिए। ऐसा करने से बांके बिहारी को बुरा लग सकता है।

जयपुर से कुल्लू के लिए शुरू होगी सीधी फ्लाइट

14 अक्टूबर से होगा फ्लाइट का संचालन, 2,500 रुपए से शुरू होगी टिकट

जयपुर, 2 अक्टूबर। जयपुर से कुल्लू (हिमाचल) जाने वाले राजस्थानियों के लिए अच्छी खबर है। 14 अक्टूबर से जयपुर से कुल्लू के लिए सीधी फ्लाइट का संचालन शुरू होने जा रहा है। इसके बाद 15 घंटे का सफर आम यात्री महज 2 घंटे में ही तय कर सकेंगे। पिंक सिटी जयपुर पहली बार कुल्लू से हवाई सेवा से जुड़ने जा रहा है। 14 अक्टूबर सुबह एलायंस एयर का एटीआर –72 जयपुर से कुल्लू के भुंतर हवाई अड्डा के लिए उड़ान भरेगा। इसका प्रस्तावित किराया 2500 रुपए निर्धारित किया गया है। इसके लिए जयपुर एयरपोर्ट अथॉरिटी ने तैयारियां शुरू कर दी हैं। पढ़ाई करने वाले विद्यार्थियों को भी इसका लाभ मिल सकेगा जयपुर से शुरू होने वाली सस्ती हवाई सेवा में कुल्लू के लोग भी घूमने के लिए जयपुर जा सकेंगे।

इसके साथ ही यहां पढ़ाई करने वाले विद्यार्थियों को भी इसका लाभ मिल सकेगा। बता दें कि जयपुर से कुल्लू के लिए सीधी फ्लाइट 14 अक्टूबर से शुरू होगी। एलायंस एयर की फ्लाइट जयपुर एयरपोर्ट से सुबह 8:20 बजे फ्लाइट रवाना होगी। जो सुबह 10:15 बजे कुल्लू के भुंतर एयरपोर्ट पर लैंड करेगी। इसके बाद 20 मिनट रुकने के बाद फ्लाइट 10:35 बजे सुबह भुंतर से वापस जयपुर के लिए रवाना होगी। जो 12 बजकर 40 मिनट पर जयपुर एयरपोर्ट पहुंचेगी। ऐसे 71 सीटर वाले इस विमान को जयपुर से कुल्लू जाने में कुल 1 घंटे 55 मिनट का समय लगेगा। वहीं सप्ताह में दो दिन सोमवार और बुधवार को ही हो फ्लाइट का संचालन किया जाएगा।

ऐसे में उम्मीद जताई जा रही है कि जयपुर से कुल्लू की सीधी फ्लाइट सेवा शुरू होने से कुल्लू-मनाली के साथ राजस्थान के जयपुर में भी पर्यटन कारोबार में इजाफा होने की संभावना है।

जयपुर में ससुर ने किया बहू से रेप का प्रयास

जयपुर, 2 अक्टूबर। सांगानेर इलाके में ससुर ने बहू से रेप का प्रयास किया। जयपुर में एक ससुर के बहू से रेप का प्रयास करने का मामला सामने आया है। घर में अकेला पाकर आरोपी ससुर ने बहू से जबरदस्ती करने की कोशिश की। विरोध करने पर आरोपी ने उसे धमकाया। सांगानेर थाने में पीड़िता ने रिपोर्ट दर्ज करवाई है। मामले की जांच स्ढ्ढ पुष्पा कर रही हैं। पुलिस ने बताया– सांगानेर निवासी एक महिला ने रिपोर्ट दर्ज करवाई है। आरोप है कि 25 सितम्बर को वह घर पर अकेली थी। घर पर अकेला पाकर आरोपी ससुर ने उसके साथ छेड़छाड़ की। मना करने के बाद भी उसके साथ जबरदस्ती करने की कोशिश की। विरोध कर पर आरोपी ससुर ने उसको धमकाया। जिसके बाद पीड़िता ने परिजनों को आरोपी ससुर की करतूत के बारे में बताया। सांगानेर थाने में पीड़ित बहू ने आरोपी ससुर के खिलाफ शिकायत दर्ज करवाई।

उदयपुर में आदमखोर लेपर्ड को गोली मारने के आदेश

घर में घुसकर महिला को मारा, गर्दन दबोचकर ले गया, शोर मचाया तो भागा

उदयपुर, 2 अक्टूबर। उदयपुर के गोगुंदा में आदमखोर लेपर्ड का आतंक 12वें दिन भी जारी है। मंगलवार सुबह तेंदुए ने घर में काम कर रही एक महिला पर हमला करके उसे मार डाला। इसके बाद नरभक्षी लेपर्ड को पकड़ने में नाकाम प्रशासन पर ग्रामीण नाराज हो गए और नेशनल हाईवे जाम करने की कोशिश की।

इधर, वन विभाग ने आदमखोर तेंदुए को गोली मारने के आदेश जारी कर दिए हैं। इस इलाके में तेंदुए के हमले के कारण 12 दिन में 8 लोग जान गंवा चुके हैं। लेपर्ड की ढोल बजाकर तलाश की जा रही है। गोगुंदा दौरे पर आए मुख्य वन संरक्षक पवन कुमार उपाध्याय ने दैनिक भास्कर को बताया कि लेपर्ड को देखते ही गोली मारने के आदेश जारी कर दिए गए हैं। वन विभाग ने पिछले कुछ दिनों में पिंजरे लगाकर 4 लेपर्ड को पकड़ा भी है, लेकिन हमले रुक नहीं रहे हैं। वहीं, वन मंत्री संजय शर्मा ने दावा किया है कि आर्मी के सहयोग से आज शाम तक लेपर्ड को मार दिया जाएगा। मंगलवार को हुए हमले से गुस्साए ग्रामीणों ने नेशनल हाईवे जाम करने की कोशिश की थी, हालांकि एसपी योगेश गोयल के समझाने के बाद वे मान गए, लेकिन ग्रामीणों ने महिला का शव अभी भी नहीं उठाया है। मंगलवार को हुए हमले से गुस्साए ग्रामीणों ने नेशनल हाईवे जाम करने की कोशिश की थी, हालांकि एसपी योगेश गोयल के समझाने के बाद वे मान गए, लेकिन ग्रामीणों ने महिला का शव अभी भी नहीं उठाया है। जानकारी के अनुसार मंगलवार सुबह 8 बजे केलवो का खेड़ा गांव में तेंदुए ने हमला किया है। यहां कमला कुंवर (55) अपने घर के आंगन में काम कर रही थी। इस दौरान लेपर्ड ने उस पर हमला कर दिया। महिला की चीख–पुकार सुनकर परिवार के दूसरे लोग बाहर भागे तो लेपर्ड उसके शव को छोड़कर भाग गया। लेपर्ड महिला को घर से 100 मीटर तक घसीटकर ले गया था।

महिला का घर पहाड़ी पर है, उसके आपस पास कोई घर नहीं है। घर के पीछे पशुओं का बाड़ा है। उसमें महिला काम रही थी तभी लेपर्ड ने हमला कर दिया। परिवार ने बताया कि महिला की गर्दन लेपर्ड के जबड़ों में थी। गले में गहरा घाव होने उसकी मौके पर ही मौत हो गई।

मोबाइल टावर पर चोरी करने की कोशिश

तीन चोर टावर पर चढ़े, एक करता रहा रैकी, पुलिस की भनक लगते ही भागे

जोधपुर, 2 अक्टूबर। जोधपुर के ग्रामीण क्षेत्र में मोबाइल टावर से चोरी करने वाली गैंग लगातार सक्रिय हो चली है। हालांकि इस बार पुलिस की सजगता की वजह से मोबाइल टावर पर चोरी की वारदात होने से टल गई। पूरा मामला आगोलाई से बंबोर जाने वाले मार्ग पर भाटेलाई का है। यहां पर गोदारों की ढाणियों में निजी टावर लगा है। यहां पर रात के समय चोर चोरी के लिए घुसे थे। इस दौरान एक चोर बाहर रैकी कर रहा था। तीन चोर चोरी के लिए टावर के ऊपर चढ़े हुए थे। चोरी के दौरान सुरक्षा अलार्म का मैसेज मोबाइल कंपनी के ऑफिस पहुंच गया। सीसीटीवी चैक करने पर चोरों के आने का पता चला। आगोलाई चौकी इंचार्ज रूघाराम के नेतृत्व में कॉन्स्टेबल चतुराराम और पप्पुराम की टीम मौके पर पहुंची। पुलिस के आने की भनक लगते ही चोर मौके से भाग गए। बता दें कि ग्रामीण क्षेत्रों में मोबाइल टावर, बिजली घर के ट्रांसफॉर्मर में चोरी करने वाली गैंग बनी हुई है। जो रात के अंधेरे में ट्रांसफॉर्मर से महंगा ऑयल चुरा लेती है। जबकि मोबाइल टावर से बैटरी, वायर व करीब एक लाख रुपए से ज्यादा कीमत की आरआरयू यूनिट भी चुरा ले जाते हैं। इसके चलते आस पास की जगहों का मोबाइल नेटवर्क भी जाम हो जाता है। नतीजन उपभोक्ताओं को कॉल ड्रॉप या सिग्नल नहीं मिलने से परेशान होना पड़ता है।

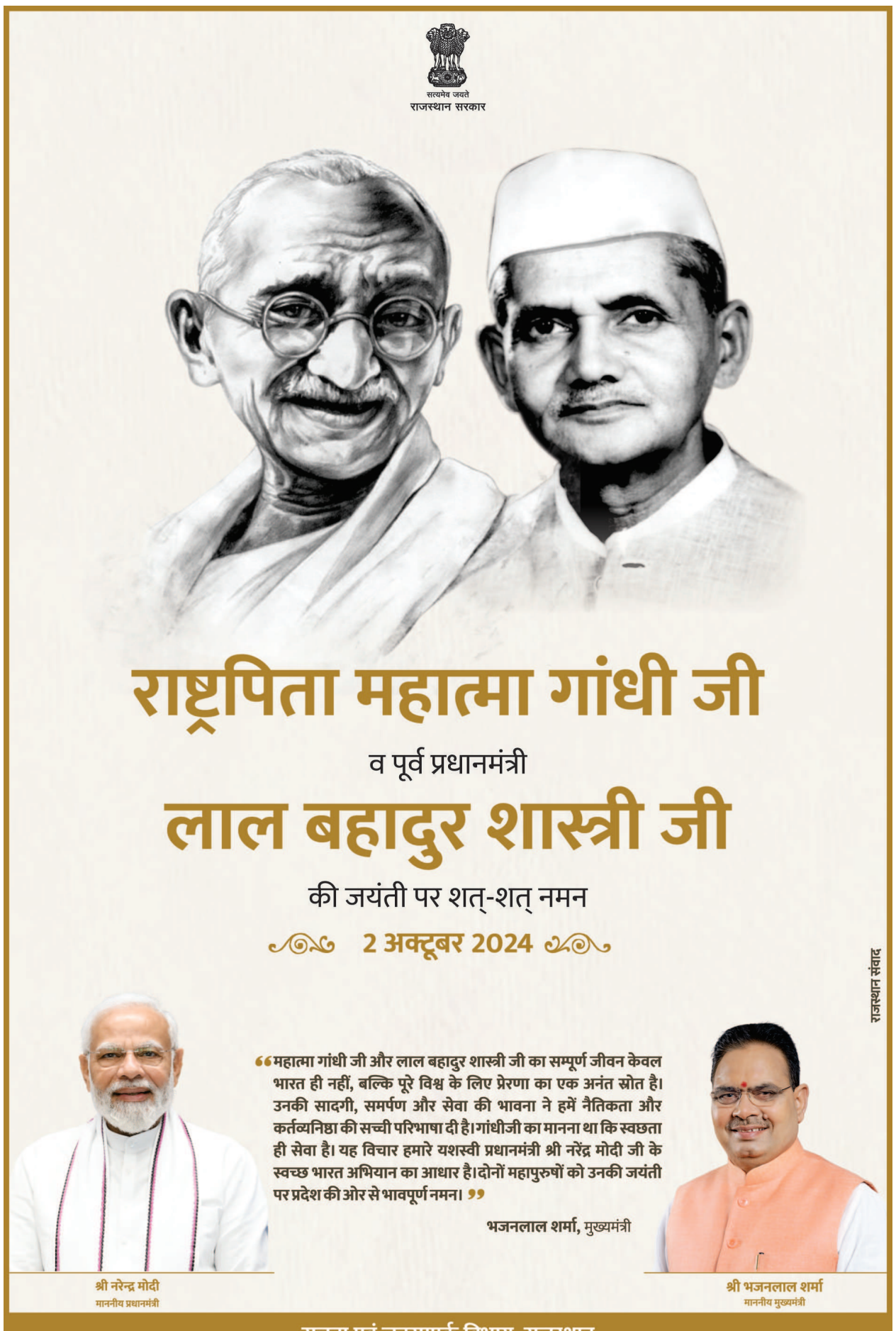

राष्ट्रीय उद्यमिता एवम् लघु व्यवसाय विकास संस्थान (निसबड)
कौशल विकास और उद्यमशीलता मंत्रालय, भारत सरकार
ए–23, सैक्टर–62, (संस्थागत क्षेत्र), नोएडा–201309 (उ.प्र.)
सत्यमेव जयते GOVERNMENT OF INDIA MINISTRY OF SKILL DEVELOPMENT & ENTREPRENEURSHIP
niesbud
स्वरोजगार हेतु उद्यमिता विकास कार्यक्रम
(अपना व्यवसाय शुरू करने का सुनहरा अवसर)
योग्यता : 18–50 वर्ष की आयु के बेरोजगार / ड्रॉप आउट
प्रतिभागियों का चयन :– 04 अक्टुबर 2024
स्थान : केएसकेसी फाउण्डेशन, शास्त्री नगर,मानासर, जिला नागौर (राज.), 341001 (मो. 9602348418)
सीमित सीटें–100
प्रवर्तक: कौशल विकास और उद्यमशीलता मंत्रालय, भारत सरकार
(आजीविका संवर्धन के लिए कौशल अधिग्रहण और ज्ञान जागरूकता (संकल्प)
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें–
कोर्स निदेशक सुमित कुमार मो. 8700622362
ashi_sumit1986@yahoo.com
www.niesbud.nic.in

दस बदमाशों की हिस्ट्रशीट खोली

जिले में हिस्ट्रीशीटरों की संख्या 237 हुई, अपराधियों के खिलाफ सख्ती से निपटेंगे

झुंझुनूं , 2 अक्टूबर। झुंझुनूं एसपी शरद चौधरी ने जिले के अलग अलग थानों के 10 बदमाशों की हिस्ट्रीशीट खोली है। इन बदमाशों के खिलाफ डकैती, अपहरण, हत्या का प्रयास, चोरी, बलात्कार, आर्म्स एर्क्स, मारपीट सहित अलग अलग धाराओं में विभिन्न मामलें दर्ज है। जिले में अब हिस्ट्रीशीटरों की संख्या 237 हो गई है।

एसपी शरद चौधरी ने बताया कि इण्डाली निवासी बलवन्त उर्फ बंटी पुत्र प्रहलाद जाट उम्र 24 साल, बुडाना निवासी राहुल कृष्णिया पुत्र प्रदीप कुमार जाट उम्र 31 साल, अलीपुर निवासी सचिन मुण्ड उर्फ अध्यक्ष पुत्र रविन्द्र सिह जाट उम्र 25 साल, शेखसर निवासी रोबिन डुडी पुत्र जसवीर दत्तक पुत्र सतवीर उम्र 27 साल, भोजासर निवासी विनय कुमार उर्फ विनय सिंह पुत्र ओमप्रकाश जाट उम्र 34 साल, वार्ड नं. 09 मण्डावा निवासी विकास जांगिड़ पुत्र ओमप्रकाश उम्र 26 साल, खीचड़ो का बास तन काजला निवासी ईश्वर सिंह पुत्र रणवीर सिंह जाट उम्र 27 साल, क्यामसर निवासी नरेन्द्र सिंह उर्फ नीरू पुत्र सज्जन सिंह राजपुत उम्र 25 साल, महरमपुर निवासी अंकुर पुत्र महेन्द्र सिंह जाट उम्र 20 साल, टोडपुरा निवासी अनिल कुमार धींवा पुत्र स्व. राम कुमार धींवा उम्र 26 साल आदतन अपराधी है। यह अव्वल दर्जे के बदमाश हैं। दस के दस बदमाश आए दिन मारपीट, व्यापारियों को धमकाने जैसी वारदातें करते रहते हैं। आदतन अपराधियों के खिलाफ सख्ती से निपटेंगे। अपराध पर अंकुश लगेगा।

जीएसटी इंस्पेक्टर के रिटायरमेंट पर 12 बोर चली, 1 घायल

जोधपुर, 2 अक्टूबर। घायल को एम्स हॉस्पिटल ले जाया गया है। जोधपुर के बासनी थाना क्षेत्र में चल रही एक रिटायरमेंट पार्टी में बंदूक से फायर हो गया। कार्यक्रम में बैंड बजाने के लिए एक कर्मचारी को गोली लगने से वह घायल हो गया। गंभीर हालत में उसे एम्स हॉस्पिटल लाया गया है। जहां उसका उपचार किया जा रहा है। इधर, घटना की सूचना मिलने के बाद बासनी थानाधिकारी मोहम्मद सफीक खान मौके पर पहुंचे हैं। त्रस्ञ्ज इंस्पेक्टर विजय सिंह के रिटायरमेंट कार्यक्रम में अजित सिंह (रिटायर फौजी) 12 बोर की राइफल भर रहा था। भरने के दौरान उससे फायर हो गया। वह मौके से फरार हो गया है। अभी तक मिली जानकारी के अनुसार, बासनी थाना क्षेत्र में सीजीएसटी ऑफिस के पास एक रिटायरमेंट कार्यक्रम चल रहा था। इस कार्यक्रम में फायरिंग के लिए बंदूक भी लाई गई थी। कार्यक्रम में शामिल अजीत सिंह नाम के युवक ने उस बंदूक से फायर हो गया। बंदूक से निकले छर्रों से एक व्यक्ति घायल हो गया। घायल का नाम फखरूद्दीन बताया जा रहा है जो रिटायरमेंट कार्यक्रम में बैंड बजाने के लिए आया था। घायल को फिलहाल एम्स हॉस्पिटल लाया गया है। जहां उसका उपचार चल रहा है। बासनी थानाधिकारी मोहम्मद सफीक खान ने बताया– सीजीएसटी ऑफिस के जीएसटी इंस्पेक्टर विजय सिंह का रिटायरमेंट कार्यक्रम था। कार्यक्रम में उनका भांजा अजीत सिंह 12 बोर की राइफल की सफाई कर रहा था। इस दौरान राइफल से फायर हो गया। बंदूक से निकले छर्रे बैंड के कर्मचारी फखरूद्दीन को लगे है। उसे एम्स हॉस्पिटल में भर्ती करवाया गया है।

पाकिस्तान से सटी सीमा पर रेतीले धोरों पर कैमरों से लैस ड्रोन मिला, सुरक्षा एजेंसियां अलर्ट

बीकानेर, 2 अक्टूबर। बीकानेर के खाजूवाला में स्थित भारत–पाकिस्तान बॉर्डर पर कैमरों से लैस एक ड्रोन मंगलवार को बरामद हुआ है। भारत–पाकिस्तान बॉर्डर पर तारबंदी से महज एक किलोमीटर दूरी पर मिला ये ड्रोन पाकिस्तान का हो सकता है। ऐसे में सुरक्षा एजेंसियां अलर्ट मोड पर आ गई है। खाजूवाला के रोही इलाके में भारत–पाक अंतरराष्ट्रीय बॉर्डर की नीलकंठ पोस्ट के 6 बीजीएम गांव के नजदीक एक कैमरों से लैस ड्रोन गिरा है। जहां रेतीले धोरों में ड्रोन पड़ा मिला है। घटना के बाद सुरक्षा एजेंसियां अलर्ट हो गई है। आशंका है कि यह ड्रोन पाकिस्तान की तरफ से आकर गिरा है। यहां से बॉर्डर की तारबंदी से सिर्फ 1 किलोमीटर दूर है। जंगल में भेड़–बकरियां व गाय चराने वाले ने पशुपालक मोहम्मद हुसैन अलादीन ने सबसे पहले यह ड्रोन देखा और फिर क्षेत्र के जनप्रतिनिधियों व जिम्मेदार ग्रामीण मुमताज अलदीन को इसकी सूचना दी।

मुमताज ने तत्काल प्रभाव से बीएसएफ व खाजूवाला पुलिस को सूचना दी। सूचना के बाद खाजूवाला से बीएसएफ कमांडेंट महेंद्र सिंह व इंटेलिजेंस की टीम मौके पर पहुंची और घटनास्थल का जायजा लिया।जांच–पड़ताल के बाद बॉर्डर क्षेत्र में बीएसएफ व पुलिस ने ग्रामीणों के साथ सर्च अभियान चलाया।

बाल श्रम जागरूकता कार्यशाला कल

(नगर संवाददाता)

नागौर, 2 अक्टूबर। राजस्थान महिला कल्याण मंडल के तत्वावधान में 4 अक्टूबर को होटल विजय वल्लभ चौराहा स्थित इंद्र पैराडाइज में बाल श्रम, बाल विवाह एवं बाल शोषण की रोकथाम को लेकर जागरूकता कार्यशाला का आयोजन किया जाएगा। राजस्थान महिला कल्याण मंडल की जिला समन्वयक गरिमा सिंह ने बताया कि इस दौरान देशव्यापी संगठन जस्ट राइट फॉर चिल्ड्रन एलायंस के सदस्यों द्वारा बाल श्रम, बाल तस्करी, बाल शोषण, बाल विवाह रोकथाम के लिए जागरूकता का संदेश दिया जाएगा। कार्यशाला में बाल कल्याण अधिकारियों एवं बाल संरक्षण के क्षेत्र में कार्य करने वाले संस्थानों के प्रतिनिधि शामिल होंगे।

कीमत करीब 40 लाख रुपए, सिम बदलकर उपयोग कर रहे थे चोर

बीकानेर, 2 अक्टूबर। पुलिस ने 190 मोबाइल बरामद किए हैं। बीकानेर पुलिस ने बाइक चोरी के बाद अब मोबाइल चोरों पर शिकंजा कस दिया है। पुलिस ने एक साथ चोरी के 190 मोबाइल को जब्त किया है। मोबाइल की कीमत करीब 40 लाख रुपए बताई जा रही है। पुलिस अधीक्षक कावेंद्र सिंह सागर ने इस संबंध में जानकारी दी। एसपी ने बताया– सीईआईआर पोर्टल पर मिली शिकायतों के निस्तारण के लिए ऑपरेशन एंटी वायरस अभियान चलाया जा रहा है। बीकानेर पुलिस ने 190 मोबाइल जब्त कर उनके मालिकों को वापस लौटाने का सिलसिला शुरू कर दिया है। इन मोबाइल की कीमत करीब 40 लाख रुपए बताई जा रही है। इसमें कुछ आईफोन है तो कुछ अन्य बड़ी कंपनियों के महंगे मोबाइल है। चोरी और लूटे गए मोबाइल से मालिक की सिम निकाली।

नाम परिवर्तन
मेरे पासपोर्ट J0983106 में मेरा नाम SAZID ALI S/O SHER MOHD व पत्नी JAYD दर्ज है जो गलत है मेरा नाम सही MOHAMMED SAJID S/O SHER MOHAMMED व पत्नी JAYDA BANO है। भविष्य में मुझे इसी नाम से जाना जाये। मोहम्मद साजिद पुत्र शेर मोहम्मद निवासी बासनी व जिला नागौर।

नाम परिवर्तन
मेरे पासपोर्ट न. T 1448042 में ALLABUX S/O GULAM ARBI नाम दर्ज है। जो गलत है। मेरा सही नाम ALLAHBUX GULAM ARBI NAGORI S/O GULAM ARBI NAGORI है। भविष्य मुझे इसी नाम से पहचाना जाएं। अल्लाहबक्ष गुलाम अरबी नागौरी निवासी मोहल्लाह राबड़िया बासनी नागौर

नाम परिवर्तन
मेरे पासपोर्ट न. J 6765174 में MOHAMMED IQBAL S/O ABDUL AJAJ नाम दर्ज है। जो गलत है। मेरा सही नाम MOHAMMED IQBAL ABDUL AZIZ है। भविष्य मुझे इसी नाम से पहचाना जाएं। मोहम्मद इकबाल अब्दुल अजीज निवासी सुलतानी मस्जिद नया मोहल्लाह बासनी नागौर

कार्यालय ग्राम पंचायत रोहिणा, पंचायत समिति जायल (नागौर)

क्रमांक ग्रा. पं./ निविदा/ 2024-25 / 58 — दिनांक 01.10.2024

सीमित निविदा सूचना

ग्राम पंचायत रोहिणा में विधायक स्थानीय क्षेत्र विकास योजना के तहत करवाये जाने वाले निर्माण कार्यो हेतु राजस्थान पंचायती राज नियम 1996 के नियम 181 (1) राजस्थान लोक उपापन नियम 2013 के तहत अनुभव रखने वाले संवेदकों से मुहरबन्द निविदाएं आमंत्रित की जाती है। विस्तृत विवरण एवं शर्तो की जानकारी कार्यालय ग्राम पंचायत रोहिणा पंचायत समिति जायल में कार्यालय समय में कर सकते है तथा पोर्टल www.sppp.rajasthan.gov.in पर भी देख सकते है।
NIB Code .
UBN

सरपंच, ग्राम पंचायत रोहिणा, पंचायत समिति जायल — ग्राम विकास अधिकारी, ग्राम पंचायत रोहिणा, पंचायत समिति जायल

कार्यालय ग्राम पंचायत रातंगा , पंचायत समिति जायल (नागौर)

क्रमांक ग्रा. पं./ निविदा/ 2024-25 /326 — दिनांक 01.10.2024

ई-निविदा सूचना /2024-25 /02

ग्राम पंचायत रातंगा , पंचायत समिति जायल में विधायक स्थानीय क्षेत्र विकास योजना के तहत करवाये जाने वाले निर्माण कार्य के लिये सक्षम श्रेणी के संवेदकों व विनिर्माताओं से ई- निविदा आमंत्रित की जाती है। निविदा से संबंधित विस्तृत विवरण वेब पोर्टलwww.sppp.rajasthan.gov.in व www.eproc.rajasthan.gov. in पर देखा जा सकता है। निविदाऐं निर्धारित दिनांक को उपस्थित निविदादाताओं के सक्षम क्रय समिति द्वारा खोली जायेगी।
NIB No.
Bid No.

सरपंच, ग्राम पंचायत रातंगा, पंचायत समिति जायल नागौर — ग्राम विकास अधिकारी, ग्राम पंचायत रातंगा, पंचायत समिति जायल

कार्यालय ग्राम पंचायत बुगरड़ा, पंचायत समिति जायल (नागौर)

क्रमांक ग्रा.पं./निविदा/ 2024-25/44 — दिनांक 01.10.2024

ई-निविदा सूचना /2024-25 /02

ग्राम पंचायत बुगरड़ा, पंचायत समिति जायल में पन्दवां वित्त आयोग के तहत करवाये जाने वाले निर्माण कार्य के लिये सक्षम श्रेणी के संवेदकों व विनिर्माताओं से ई-निविदा आमंत्रित की जाती है। निविदा से संबंधित विस्तृत विवरण वेब पोर्टल www.sppp.rajasthan.gov.in व www.eproc.rajasthan. gov.in पर देखा जा सकता है। निविदाऐं निर्धारित दिनांक को उपस्थित निविदादाताओं के समक्ष क्रय समिति द्वारा खोली जायेगी।
NIB No.
Bid No.

सरपंच, ग्राम पंचायत बुगरड़ा, पंचायत समिति जायल — ग्राम विकास अधिकारी, ग्राम पंचायत बुगरड़ा, पंचायत समिति जायल

कार्यालय ग्राम पंचायत रोहिणा, पंचायत समिति जायल (नागौर)

क्रमांक ग्रा.पं./ निविदा/2024-25/49 — दिनांक 01.10.2024

ई-निविदा सूचना /2024-25 /02

ग्राम पंचायत रोहिणा , पंचायत समिति जायल में विधायक स्थानीय क्षेत्र विकास योजना के तहत करवाये जाने वाले निर्माण कार्य के लिये सक्षम श्रेणी के संवेदकों व विनिर्माताओं से ई- निविदा आमंत्रित की जाती है। निविदा से संबंधित विस्तृत विवरण वेब पोर्टलwww.sppp.rajasthan.gov.in व www.eproc. rajasthan. gov.in पर देखा जा सकता है। निविदाऐं निर्धारित दिनांक को उपस्थित निविदादाताओं के सक्षम क्रय समिति द्वारा खोली जायेगी।
NIB No.
Bid No.

सरपंच, ग्राम पंचायत रोहिणा, पंचायत समिति जायल — ग्रामविकास अधिकारी, ग्राम पंचायत रोहिणा, पंचायत समिति जायल

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक सरोज शर्मा के लिए सांध्य ज्योति दर्पण प्रिंटर्स, डी.एल. टॉवर, 3-ए विद्याश्रम इंस्टीट्यूशनल एरिया जे.एल.एन. मार्ग जयपुर से मुद्रित व राजकीय अस्पताल के सामने नागौर से प्रकाशित। सम्पादक- रमेश चन्द्र जैन। फोन : 240071 फैक्स- 01582-247171 जयपुर कार्यालयः डी.एल. टावर 3-ए-विद्याश्रम संस्थानिक क्षेत्र जेएलएन मार्ग, निदेशक : बी.एम. शर्मा, सम्पादक : महेन्द्र कुमार यादव। फोन : 2709102-3, फैक्स : 0141-2709275, अलवर कार्यालय : केडलगंज, अलवर संपादक चंद्रप्रकाश सैनी। फोन : 2335105,2701531 भरतपुर कार्यालयः कोतवाली रोड, भरतपुर- सम्पादक : जगदीश अग्रवाल, फोन : 223780 | आरएनआई नं. 48413/88